श्री गोरक्ष तंत्रम्

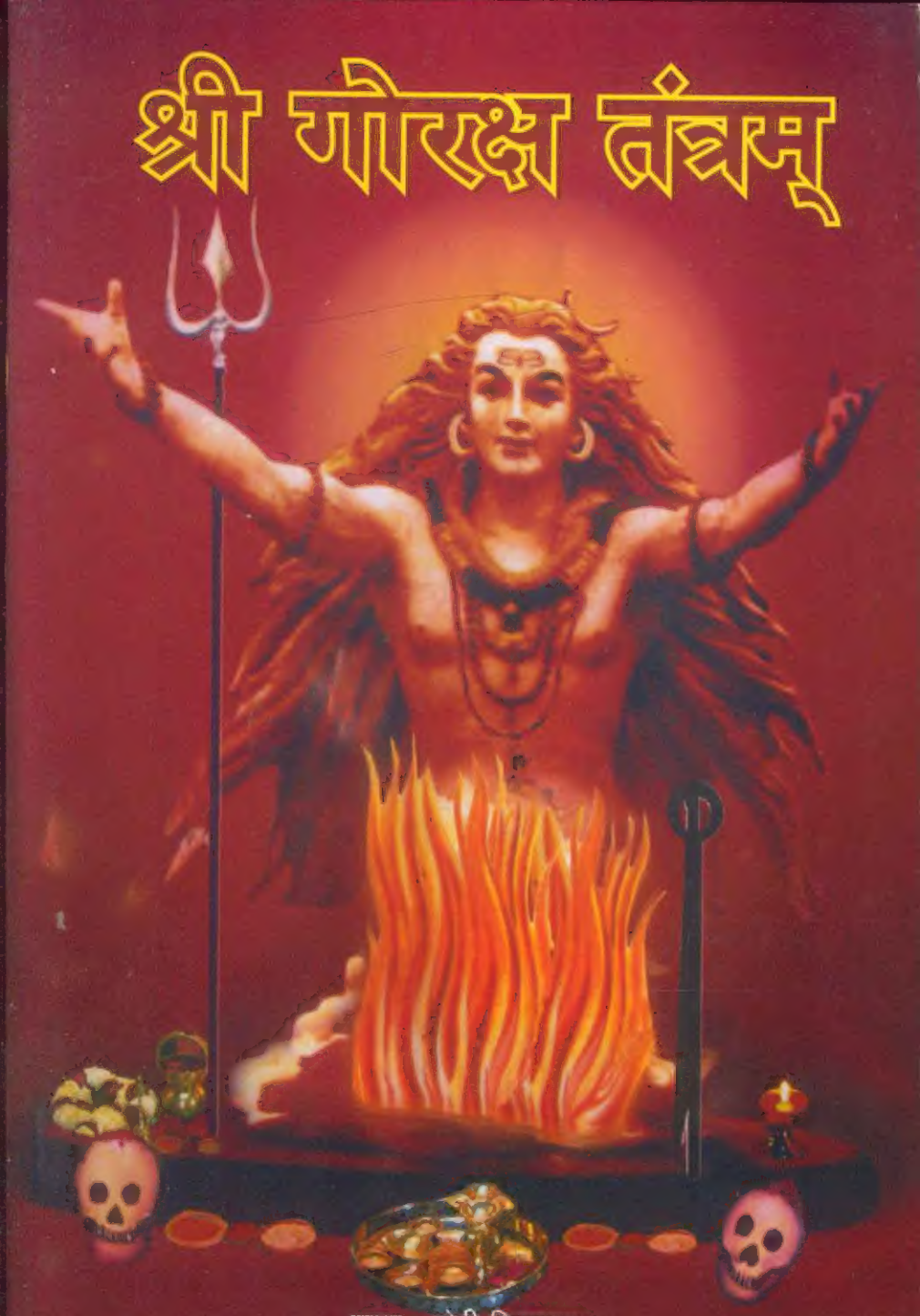

रचना : योगी विलासनाथ

प्रकाशक–अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मंदिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) ☎ 01334–226583

श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्रम्

चित्राकंन : योगी विलास नाथ (संदर्भ–श्री गोरक्ष तंत्रम्)
प्रकाशक–अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार
फोन : 01334–226583

श्री गोरक्ष तन्त्रम्

मंत्र तंत्र योग उपासना

(हिन्दी अनुवाद एवं पाठ विधि)

रचना :

महन्त डॉ. योगी विलासनाथ

सम्मानित उपाधि डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (जर्मन–यूरोपियन यूनियन)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन–01334–226583

Website : http://.yogigorakshnath.org

E-mail : guruyogivilasnathji@gmail.com, yogivilasnath12@gmail.com

श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक (हरियाणा)

14 जनवरी 2013 प्रयागराज महाकुम्भ

द्वितीय संस्करण–2000 प्रति] [मूल्य : 80/-

इस पुस्तक के किसी भी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

आशीर्वचन

अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

महामंत्री

प्रिय शिष्य योगी विलासनाथ

शुभ आशीर्वाद

''श्री गोरक्ष तन्त्रम्'' यह ग्रंथ को देखते हुये अती प्रसन्नता हो रही है कि इस रचना में नाथ सम्प्रदाय की मर्यादा एवं परम्परा के अनुरूप गुप्त एवं गुढ़ विद्या जो की तंत्र-मंत्र-यंत्र-योग साधना के माध्यम से श्री गोरक्षनाथ जी की उपासना करने का सुनहरा अवसर पाठयगणों-साधकों एवं भक्त गणों को दिया गया है। यह एक उत्कृष्ट उपलब्धी जन मन कल्याण हेतु की गयी है। इस ग्रंथ की उपासना करने पर नाथ सिद्धों को अदृष्य शक्तियाँ, दैवी शक्ति एवं गुप्त शक्तियाँ प्रगट होकर साधक के मनोरथ पूर्ण करेगी।

यह नाथ योग विषय में जो ग्रंथ लिखा गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि नाथ सिद्ध तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, योग उपासनायें तथा अठारह भार वनस्पति आदि संशोधन करने पर ही सर्व प्रकार से पूर्ण विद्या हासिल होती है। जो कि एक-एक मन्त्र सिद्धि प्राप्त करने हेतु 12-12 साल वन गुफाओं में रहते हुये कन्द मूल वनस्पतियाँ सेवन करके एक योग का आसन सिद्ध होता है और एक मन्त्र की सिद्धता होती है। एक वनस्पति 12 साल सेवन करने से नियमानुसार उसके चार्तुमास करके बारह साल पूर्ण होकर कायाकल्प होता है। कायाकल्प मतलब 100 से 125 वर्ष की आयु में पहुँचकर पुनः बारह साल की आयु की अवस्था आ सकती है। जैसे की श्रीगुरु गोरक्षनाथ, नवनाथ चौरासी सिद्धों ने उपासना करके चार युगों के पूर्व सभी सिद्धियाँ प्राप्त करते हुये जोकि अनीमा गनीमा इत्यादि सिद्धियाँ तथा जारण मारण उच्चाटन इत्यादि षड्कर्म एवं परकाया प्रवेश, कायाकल्प इत्यादि सिद्धियाँ प्राप्त करके 33 कोटी देवी देवता को सशरीर सस्वरूप से प्रगट

करते हुए उनको सृष्टि कार्य करने में प्रवृत्त किया और गुणानुसार रज-सत्व-तम गुण विशिष्ट मूर्तिमन्त प्रगट करते हुये उन देवी देवताओं को कार्यानुरूप स्वयं सिद्धि प्राप्ति की जिस प्रकार जो भी इच्छा हुई उस प्रकार देवता का आवाहन करके यह सृष्टि निर्माण की सिद्धियाँ और वनस्पतियों के मूल बीज रूप अस्तित्व को प्राप्त करते हुये कायाकल्प में उपयोग किया इसलिये नाथ योग दृष्टिगोचर इहलोक से लेकर ब्रह्मलोक तक के जीव ब्रह्म ऐक्य भाव को प्राप्त करते हुये सभी के ऊपर प्रभुत्व कायम किया अत: यह नाथ योग प्राप्त होने पर किसी भी प्रकार से अन्य योग की आवश्यकता नहीं है। यह त्रिकाल ब्रह्म सत्य है।

अत: साधु सन्त एवं नाथ सिद्ध योगेश्वरों तथा सद्गुरु जी के आशीर्वाद कृपा से यह एक अनुठा प्रयास किया गया है जिसमें नाथ सम्प्रदायके दादा गुरु मत्स्येन्द्रनाथजी की कुलाकुल विद्या एवं गुरु गोरक्ष नाथ जी की तंत्र-मंत्र कुण्डलीणी योग का समिस्र अविष्कार किया गया है। जोकि इसे ग्रन्थ पठन-पाठन एक साधना कृतित्व उपासना करने पर नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर एवं अन्य धर्मानुरागी भक्तगण शिष्यगण कृतकृत्य हो जायेंगे। जिसमें गुरु गोरक्षनाथ ९ नाथ ८४ सिद्धों के सभक्तिपूरक उपासना का सहज सुलभ तथा पूर्ण रूप से मार्ग दर्शक होगा इस उपासना में साधक भक्त गणों के अपेक्षाओं की पूर्ति होकर मनोरथ पूर्ण होगे विक्षिप्त विद्यायें जो नकारात्मक, दु:खदायक देने वाले अतृत्प आत्मायें विशुद्ध शक्तियाँ इत्यादि से पूर्ण संरक्षण होकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, मुक्ति की प्राप्ति होगी इस ग्रंथ उपासना निस्वार्थ भक्ति भाव से करने पर गुरु कृपा होकर मोक्ष मुक्ति पथ पर भी जा सकते है।

इस ग्रंथ में श्री ॐकार आदिनाथजी ने उदयनाथ पार्वती जी को दिया हुआ गुरु गोरक्षनाथ तन्त्र उपासना का विस्तृत ज्ञान बड़े ही सजिन्दा ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जोकि नाथ सम्प्रदाय की गुरु शिष्य प्रणाली-मर्यादा और संस्कार की अखण्डता रखने का एक अनुठा प्रयास किया गया है।

अत: गुरु शिष्य परम्परा ही मोक्ष मुक्ति साधन है। यह शुभकामना करते हुये पुन: पुन: आशीर्वाद देता हूँ कि गुरु गोरक्षनाथ जी की अनुकम्पा से लेखक यह कार्य उत्तरोत्तर सफल करता रहे।

इति शुभम्

योगी आनंदनाथ जी

(प्रधान महामंत्री)

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

मनोगत

समस्त नाथ सम्प्रदाय एवं उनकी सभी तंत्र-मंत्र-उपासनायें तथा ज्ञान योग, शून्ययोग, भक्तियोग, कर्मयोग इत्यादि ध्यान धारणा समाधि अपितु मोक्ष मुक्ति तक सभी पक्ष में गुरु गोरक्षनाथ जी के आशीर्वाद कृपा बिना तथा सद्गुरु कृपा बिना अशक्य है यह गुरु शिष्य परम्परा, नाथ संस्कृति में त्रिवार सत्य एवं मान्य है। अतः साधु सन्तों-नाथ सिद्धों की योग प्रणाली हो या तंत्र मंत्र क्रिया कर्म-कांण्डादि योग हो अथवा उनका भक्ति योग हो सिद्धियाँ प्राप्ति हो उसी प्रकार गृहस्थ भक्त नाथ-धर्म अनुयायी के अपेक्षित कार्य-सफलता-संकटों से सुरक्षा या भौतिक उपलब्धियाँ लाभ हानि इत्यादि इन सभी का आधार मात्र गोरक्षनाथजी की अनुकंपा उनकी प्रसन्नता होना अनिवार्य है।

अतः इस मूल स्वरूप इष्ट गुरु गोरक्षनाथजी के प्रसन्नता हेतु यह "श्री गोरक्षतंत्रम्" कि रचना की गयी है। जिसमें, गुरु गोरक्ष नाथजी का मूल स्वरूप तथा उनके ध्यान श्लोक, मूलमंत्र, मन्त्रोद्धार तथा तंत्र-यंत्र-मंत्र बीज मंत्र के द्वारा पंचतत्व की पूजा तथा पूर्ण अभिषेक का कर्मकाण्ड है जो जन मन साधु-संतों का कल्याण होकर भक्तिपूर्ण आनन्द भी ले सके। इस गुरु गोरक्षनाथजी के रक्षा मंत्र तथा अस्त्र, अघोर अस्त्र, संकटनाशक स्तोत्र गोरक्ष अघोर स्तोत्र इ० अत्यन्त प्रभावी उपयोगी और प्रचिती पूर्ण विधि-विधान जो पाठयगणों की सर्वता सुरक्षा और भक्तिपूर्ण होकर अपेक्षित कामनाओं की पूर्ति हो जायेगी साधक विशेष रूप से पंचतत्विक योग प्रतिक्रियाँ जो पंच मकार के योगिक स्वरूप में दृष्टिकोण से बड़े ही विस्तार से बताया गया है जिससे साधक को धर्म अर्थ काम-मोक्ष की प्राप्ति हो जाये।

पंचमकार या कौल क्रिया विधि-विधान जो दादा गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी ने गुरु गोरक्षनाथजी को प्रदान किया था उसका योग द्वारा मोक्ष मुक्ति का एक अनोखा प्रयास घटित हुआ है।

जिसकी अनुभूति साधक पाठयगणों को आवश्यक होगी। इस ग्रंथ में श्री गोरक्षनाथजी के प्रमुख पीठ वर्णन करके उन-उन पीठों में उपरोक्त तंत्र साधना शीघ्र फलीभूत होगी उसीप्रकार सतगुरु तत्व का खुलकर वर्णन करके ज्ञान की श्रेष्ठता का प्रमाण दिया है। अतः गुरु गोरक्ष तन्त्रम् के अनुसार नाथ सम्प्रदाय की पांच

मुक्ति मोक्ष की अवस्थायें है।

१. सालोक्यता-इसमें साधक को गोरक्षनाथ जी के अलख क्षेत्र वायुलोक (कैलास पर्वत के परिसर)में निवास करने का सौभाग्य मिलता है।

२. सारुप्यता - इसमें साधक गुरु गोरक्षनाथ जी के रूप (स्वरूप या विरक्त नाथ सिद्ध साधु-सन्त) जैसा बनने का अहो भाग्य मिलता है।

३. सायुज्यता - इसमें साधक गुरु गोरक्षनाथजीके अनंन्त कला गुण (सिद्धियां या 64 कलापूर्ण) से युक्त होने का भाग्य होता है।

४. समीपता - इसमें साधक गुरु गोरक्ष नाथजी के सहवास में (सानिध्य या गोरक्षनाथ जी की हमेशा निकटता) रहने का सौभाग्य मिलता है।

५. निर्वाण - इसमें साधक मोक्षमुक्ति में उसकी शून्य समाधि अर्थात (काया इन्द्रिय मन, चित्त का) लय हो जाता है। मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

अत: अपनी सम्पूर्ण विकारों पापी अशुद्धि तथा असुरी वृत्ति का लय होना ही मोक्ष मुक्ति है। अत: गुरु गोरक्षनाथ अलखनिरंजन नित्य सत्य सनातन सच्चितानंद आत्मा परमात्मानंद स्वरूप है और सभी अभीष्टों कामनाओं की पूर्ति यहां तक कि मोक्ष मुक्ति देने वाले है।

हमें आशा है कि गुरु गोरक्षनाथजी के आशीर्वाद तथा गुरु कृपा एवं सम्प्रदाय के नाथ सिद्धों की कृपा अनुकम्पा से यह श्री गोरक्ष तंत्रम् उपासना करते हुए संकटों से सुरक्षा होकर अपेक्षित फलस्त्रुति होगी।

इस कार्य में गुरु भाई योगी प्रमोदनाथ, योगी राकेशनाथ, योगी मोतीनाथ आदि सम्प्रदाय के नाथ सिद्ध योगेश्वरों के सहृदय सत्प्रेरणा दी सबका मैं आभारी हूँ।

इति शुभम्

योगी विलासनाथ

महन्त डॉ. योगी विलासनाथ

सम्मानित उपाधि डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (जर्मन--यूरोपियन यूनियन)

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष

बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

।।ॐ शिव गोरक्ष योगी।।

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ सं.
१.	**प्रथमः अध्याय** **अलख निरन्जन गोरक्षनाथस्य स्वरूपम** *(अलख निरंजन गोरक्षनाथजी का स्वरूप है।)* *१-१७ श्लोक*	८
२.	**द्वितीयः अध्याय** **मन्त्रोद्धार** *(मन्त्र का उद्धार) १-१६ श्लोक*	१२
३.	**तृतीयः अध्याय** **गोरक्ष यन्त्र निर्माण पूजा विधिंच** *(श्री गोरक्षनाथजी के यन्त्र और पूजन विधि)* *१-८२ श्लोक*	१६
४.	**चतुर्थः अध्याय** **गोरक्ष मन्त्रम्** *(श्री गोरक्षनाथजी के मन्त्र) १-२२ श्लोक*	३४
५.	**पंचमः अध्याय** **गोरक्ष पूर्णाभिषेक विधानम्** *(श्री गोरक्षनाथजी का सम्पूर्ण अभिषेक का विधान)* *१-१७७ श्लोक*	४१
६.	**षष्ठमः अध्याय** **अथ गोरक्षम् मूल मन्त्र विधिनम्** *(श्री गोरक्षनाथ जी के मूल मन्त्र के विधि विधान)* *१-३२ श्लोक*	८४
७.	**सप्तमः अध्याय** **सर्व रक्षेद् गोरक्ष अस्त्र च मन्त्रः** *(सर्व रक्षा होने के गोरक्षनाथजी के अस्त्र तथा मन्त्र)* *१-२६ श्लोक*	९३

विषय	पृष्ठ सं.
८. अष्टमः अध्याय **अथ गोरक्षनाथस्य स्वरूपम्** (श्री गोरक्षनाथजी का स्वरूप) १-३० श्लोक	१०४
९. नवमः अध्याय **गोरक्षं-पीठ-तीर्थ-वर्णनम्** (श्री गोरक्ष नाथजी के पीठ अर्थात तीर्थ क्षेत्रों का वर्णन) १-७९ श्लोक	१११
१०. दशमः अध्याय **श्री सद्गुरार्त्तत्त्वम् रहस्यम्** (श्री सद्गुरु जी का तत्व रहस्य) १-८४ श्लोक	१२९
११. एकादशः अध्याय **मोक्ष-मुक्ति तत्वम्** (मोक्ष-मुक्ति तत्व का साधन) १-२४ श्लोक	१५०
१२. द्वादशः अध्याय **श्री गोरक्ष स्तोत्रम्** (श्री गोरक्षनाथ जी के स्तोत्र)	१५७
१. संकट नाशक गोरक्ष स्तोत्रम् (श्री गोरक्षनाथ जी का संकट नाशक स्तोत्रम्) नित्यपाठ १-१३ श्लोक	१५७
२. श्री नाथ गोरक्ष स्तोत्रराज (श्री गोरक्षनाथ जी का स्तोत्रराज) १-१४ श्लोक	१६१
३. गोरक्षंऽघोर स्तोत्रं (गुरु गोरक्षनाथ जी का अघोर स्तोत्र) १-१६ श्लोक	१६५
४. जय हो ! जय हो (आरती)	१७३
१३. ग्रंथस्य विधियों के विशेष नियम	१७४
१४. पूजन तथा हवन सामग्री (साहित्य सूची)	१७७
१५. सूचीपत्र	१८०

श्री गोरक्ष तन्त्रम्

अथ प्रथमोऽध्यायः

।। अलख निरंजन गोरक्षनाथस्य स्वरूपम् ।।

(अलख निरंजन गोरक्षनाथजी का स्वरुप है।)

"श्री उदयनाथ उवाच"

सतगुरु सर्व सर्वज्ञं सर्व ज्ञान नाथ त्वम्।
सर्वदा ज्ञानानन्दं हृदयं सर्वागमं प्रकाशकम्।।१।।
श्रुत्वा सर्वाणि तन्त्राणि साधनानि च भूरिशः।
विद्यास्त्राणि सकलानि नाथ ! फलानि त्वत्प्रसादतः।।२।।
श्रेष्ठाति श्रेष्ठो परंज्ञानं गुहयं गुहयाति गुह्यकम्।
यन्महातन्त्रं ज्ञात्वात्वं तनोऽहं श्रवणोच्छुकः।।३।।

भावार्थः- *श्री उदयनाथ (पार्वती) ने कहा-हे सतगुरुजी आप सर्वदा सर्वश सभी ज्ञान के नाथ हो सभी आगमों के प्रकाशक और सर्वदा ज्ञान और आनंदित हृदयवाले हो। हे नाथ मैंने सुना है कि आपकी ही कृपा से सभी प्रकार की साधनाएं और सभी प्रकार की विद्याएं और सभी प्रकार की उपासनाओं का फल मिलता है। श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ जो परंज्ञान है। गुह्य से भी गुह्य और गुप्त जिस महातंत्र के आप ज्ञाता है उसे सुनने के लिए मैं उत्सुक हूँ।।१-२-३।।*

"श्री आदिनाथ उवाच"

प्रिय शिष्योदयनाथः प्रवक्ष्यामि महाज्ञानी।
अलख निरंजन रूपेण गोरक्ष वरदायकम्।।४।।

वरदानन्दं च नित्यञ्च सुखश्वर्य प्रदायकम्।
सर्व संरक्षणाय सद्गुरु च समर्थकम्।।५।।
योगे रमणे स्थूले च सूक्ष्मे मूले च निर्गुणे।
जन कल्याण्याणार्थाय शक्ति रूपे प्रतिष्ठिताः।।६।।
सर्व जन हिताय सावधानाद् श्रृणु भवान्।
अलख निरंजन रूपेण गोरक्ष तन्त्रमुत्तमम्।।७।।

भावार्थः- श्री आदिनाथ जी कहते हैं। हे प्रिय शिष्या उदयनाथ (पार्वती) सुनो अलख निरंजन रूपी महाज्ञानी गुरु गोरक्षनाथजी वरदान देने वाले हैं। वह नित्य हैं वह वर और आनन्द देने वाल तथा सुख और ऐश्वर्य बढ़ाने वाले है। सभी जीवों की रक्षा करने में समर्थ हैं। योग तथा निर्गुण और निराकार में रमण करने वाले हैं। लोगों के कल्याण हेतु वह स्थूल सूक्ष्म और मूलभूत शक्ति स्वरूप में भी प्रतिष्ठित है (विराजमान है) सभी जीवों के हित के लिए आप सावधान हो के सुनिए अलख निरंजन रूप में गोरक्ष तन्त्र सबसे उत्तम है।।४-५-६-७।।

निखिलासु च विद्यषु यद् यद् सिध्यन्ति साधकाः।
तस्मात्तफलं प्रदानेन् गोरक्षनाथ समर्थकम्।।८।।
उदासीनं गोरक्षं प्रति, त्रिलोकेषु निन्दितम्।
गोरक्षं बिना सिद्धि सम्पदां न योविद्यते।।९।।

भावार्थः- सारे विश्व में जितनी भी विद्या और साधनाओं को साधक सिद्ध करते हैं। वह सभी पकार की विद्या और साधना का फल देने वाले गुरु गोरक्षनाथजी ही समर्थ हैं और जो जीव गोरक्षनाथ जी के प्रति उदासीन

रहता है वह तीनों लोकों में निन्दित होता है। गोरक्षनाथजी के बिना किसी भी प्रकार की विद्या सिद्धि या सम्पति नहीं मिल सकती।।८-९।।

सदैव धर्म रूपे च अर्थ रूपे य संस्थिता।
कामे च सम्पदे मोक्षे गोरक्षैव प्रतिष्ठिता।।१०।।
निर्वाण मुक्ति सायुज्य मुक्त रूपे महाजती।
सालोके सारूणे रूपे गोरक्षः परमो गतिः।।११।।

भावार्थः- गोरक्षनाथ जी सदैव धर्म और अर्थ रूप में विराजमान हैं। गोरक्षनाथ जी काम सम्पत्ति और मोक्ष रूप में सदैव प्रतिष्ठित हैं। महाजती गुरु गोरक्षनाथ जी ही निर्वाण मुक्ति सायुज्य मुक्ति रूप है और वही सालोक्य मुक्ति और सारूप्य मुक्ति रूप है। अतः गोरक्षनाथ जी ही उत्तम और सबसे श्रेष्ठ गति है।।१०-११।।

{ **गोरक्ष भक्ति की गति-** अर्थात भक्ति धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अतः सालोक्य, सारूप्य, समीप्य, सार्ष्टि और सायुज्य यह ५ प्रकार की मुक्ति है जो हटयोग द्वारा सबमें तुच्छ बुद्धि पैदा करके सबसे मन, चित हटा देती है।}

शिवास्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्मास्तञ्च खगेन्दक्म्।
देवत्वं सर्व देवानां निश्चितं योगी रूपिणम्।।१२।।
विद्यासु शब्देषु च लौकिकं वाक्यमेव च।
गोरक्ष महायोग स्वरूपं सर्वमेव हि।।१३।।

भावार्थः- ब्रह्मा जी के ब्रह्मत्व विष्णु जी के विष्णुत्व शिवजी के शिवत्व सूर्य भगवान के सूर्यत्व और देवताओं के देवत्व जिस शक्ति में निहित है वही योग रूपी गुरु

गोरक्षनाथ जी हैं। सभी विद्याओं के लौकिक वाक्य और उनके शब्द ही गुरु गोरक्षनाथजी हैं।।१२-१३।।

अहमेवास्मि गोरक्षः मद्रूपं तन्निबोधते।
योगमार्ग संरक्षाय मया रूपमिदं धृतम्।।१४।।
पश्य-पश्य महायोगि ! घृत्वा ध्यानं हृदि स्वयंम्।
गोरक्षंरहिता केचिद् विद्यते न भुवनत्रयम्।।१५।।
तन्त्रादिना महाविद्या अनन्तं परिकीर्तिता।
तन्मध्ये सर्वदा श्रेष्ठ शावर तन्त्रमुत्तमम।।१६।।
तस्य मूले महानाथो गोरक्ष संस्थितः स्वयम्।
चन्द्रसूर्यो समो कान्ति तेजोमय प्रकाशितः।।१७।।

भावार्थः- मैं ही साक्षात् गोरक्षनाथ हूँ एवं गोरक्षनाथ मेरा ही स्वरूप है। योग मार्ग का अभ्युदय के लिये ही मैंने इस रूप को धारण किया है। अतः अपने हृदय में उन सबका ध्यान कर स्वयं ही देख लो तीनों लोकों में गुरु गोरक्षनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। तन्त्रादि में अनन्त महाविद्याओं में वर्णित है। उन सबमें सर्वत्र श्रेष्ठ गोरक्षनाथ शावर तन्त्र ही है। क्योंकि उन सब के मूल में नाथों के नाथ महानाथ गोरक्षनाथजी ही स्वयं है। जो कि सूर्य और चन्द्र की कान्ति समान तेजोमय और प्रकाशित हैं।।१४-१५-१६-१७।।

।। इति श्री गोरक्षतन्त्रे उदयनाथ-आदिनाथ।।
संवादे प्रथमोऽध्यायः समाप्त

अथ द्वितीयोऽध्यायः

।। मन्त्रोद्धार ।।

(मन्त्र का उद्धार)

"श्री आदिनाथ उवाच"

मन्त्रोद्धारं प्रवक्षामि, उदयनाथ श्रेष्ठतम्।
यत् परमंगुह्यं देवानामपि दुर्लभम्।।१।।
इदं मन्त्रं प्रभावेन मोहयेदखिलं जगत्।
ब्रह्मादिना च देवान् दैत्यान् गन्धर्वान् किन्नरान्।।२।।
पुष्पेण मुहयते भ्रमरान् बालकेन जननी यथा।
मोहयेत् क्षणमात्रेण मन्त्रोद्धारण दुर्लभम्।।३।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी कहते हैं। हे उदयनाथ (पार्वती) मैं अतिश्रेष्ठ मन्त्र उद्धार कहता हूँ उसे आप ध्यान से सुनिए। इस मन्त्र उद्धार के ज्ञान साधना से देवताओं को भी सिद्धि प्राप्त होती है। इस मन्त्र के प्रभाव से सारा जगत मुग्ध हो जाता है। इस मन्त्र के प्रभाव से ब्रह्मादि सभी देव दानव गन्धर्व और किन्नर भी मोहित हो जाते हैं जिस तरह पुष्प भ्रमर (भंवरे) को मोहित करता है जैसे बालक माता को मोहित करता है। वैसे ही यह मन्त्र उद्धारण से सभी क्षण भर में ही वश में आ जाते हैं।।१-२-३।।

मन्त्रस्य प्रभावेण क्षण मात्रेण मुह्यते।
राजानां सचिवादीनां सर्वे राज्यजनास्तथा।।४।।

नृपत्यांशु च वाजी च उर्वश्याचाप्सरेषु च।
इदं मन्त्रं पठित्वा तु क्षणाद् वशीजगत्त्रयम्।।५।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती-यह मन्त्र के प्रभाव से क्षण मात्र में ही राजा-मन्त्री समेत सर्व राज्य जनता भी वशीभूत हो जाता है बड़े-बड़े राजा रानी समेत हाथी घोड़े सहित सारे पशु और उर्वशी आदि स्वर्ग की सारी अप्सराएं भी वशीभूत हो जाती हैं इस मन्त्र के पाठ से क्षण भर में ही (तीन लोक) सर्व जगत वशीभूत हो जाता है।।६-७।।

स्तम्भनं मोहनं चैव क्षोभणं जृम्भणं तथा।
द्रावणं भीषणञ्च विद्वेषोच्चाटने तथा।।६।।
आकर्षण सर्व देवानां वशीकुर्याद जगत्त्रयम्।
योगेश्वरि! विशेषेण साधयेत् साधकोत्तमः।।७।।

भावार्थः- हे योगेश्वरी श्रेष्ठ साधक इस मन्त्र से स्तम्भन, मोहन, क्षोभण, जृम्भण, द्रावण भीषण, विद्वेषण उच्चाटन और विशेषकर देवताओं का आकर्षण तथा अन्य सभी को वशीकरण करने में समर्थ होता है।।६-७।।

प्रपातेन दृष्टीपातेन स्तम्भवेत् सिद्धसाधकाः।
सूर्याग्नि, जल वायुश्च साधक न तु अन्यथा।।८।।
यथा सृष्टिजय योगी तदा मन्त्रं में वचः।
नाथ! उदय तं न असाध्यें भुवनत्रये भुवनंत्रयम्।।९।।

भावार्थः- इस मन्त्र के साधक दृष्टिपात करने मात्र से ही सूर्य-जल- अग्नि-वायु आदि प्रपातों को स्तंभित कर

सकते हैं कोई अन्य नहीं है उदयनाथ (पार्वती) जिस तरह महायोगी अपने योग से पूर्ण सृष्टि को जीत लेता है। उसी तरह इस मन्त्र का ज्ञाता भी सृष्टि को जीत सकता है। और तीनों लोक में उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं रहता।।८-९।।

गो युक्त बीज गोरक्षम् यात्रा वारण (र) रोहकम्।
ॐ कार शिव युक्तम् च नाद बिन्दु युतः पुनः।।१०।।
एतानि त्रिगुणी कृत्य कल्पवृक्षः सम जपेत्।
एकञ्चनववास जपेत् अष्टोत्तरशतम्।।११।।
अष्टोत्तरशतं सहस्त्रं च नित्यं जपति यो नरः।
सर्व कार्येषु सर्वसिद्धिमाप्नोति च नात्र संशयः।।१२।।

भावार्थः- नाद विन्दु (ँ) से युक्त, गोरक्ष बीज युक्त (गो) यात्रा वरण ('र') तथा सदाशिव (आदिनाथ) युक्त ('ओं' कार) अर्थात् (ँ + गो + र + ओ) = ''ग्रों'' इस बीज को त्रिगुणी कृत करने पर ''ग्रों ग्रों ग्रों'' अतः कल्पवृक्ष के समान इस बीज मन्त्र का जाप करे जो भी बुद्धिमान साधक इस मन्त्र का नित्य (१) एकबार, (९) नऊबार, (१०८) एक सौ आठ बार पाठ करता है या (१००८) एक हजार आठ बार पाठ करता है। उस साधक को सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है इस में कोई भी संशय नहीं है।।१०-११-१२।।

साधकान् सर्व विद्यानां गोरक्षमन्त्रोक्तं साधयेत्।
अन्यथा सिद्धहानि स्याद, विघ्नैतानस्तेषा पदेपदे।।१३।।

किं शाक्ताः वैष्णवाः किवा गाणपत्याच शैवकाः।
सौर नाथः वृत्ताः सर्वे तैल यन्त्रे वृषा इव।।१४।।
नात्र चक्र विशुद्धिं च कालादि शोधनं न च।
अत्यावश्यकं मन्त्रं स्याद् शाबरानपि योगिनी।।१५।।
कृते च नरकं याति तस्य सर्व विनश्यति।
क्लेश रहितं पर नाथ! साधनं द्रुत पोषकम्।।१६।।

भावार्थः- सभी विद्याओं के साधकों को उक्त गोरक्षनाथजी के मन्त्र साधना करनी चाहिए। अन्यथा सिद्धि में हानि और उनके पग-पग पर विघ्न होता है। शाक्त, वैष्णव, शैव और सौर गाणपत्य सभी देवताओं के उपासक गुरु गोरक्षनाथजी द्वारा उसी प्रकार नियन्त्रित रहते हैं। जिस प्रकार तेली का बैल अतः हे योगिनी उक्त मन्त्र की साधना शावर तन्त्रों के लिए आवश्यक है। इस मन्त्र की साधना में चक्र शोधन या कालादि शोधन की आवश्यकता नहीं है। जो इस मन्त्र के सम्बन्ध में शोधन विचार करता है। उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है और वह नरक में (चला) जाता है। अतः इस मन्त्र की साधना में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता और इसके द्वारा शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है।।१३-१४-१५-१६।।

।। इति श्री गोरक्षतन्त्रे श्री उदयनाथ-आदिनाथ।।
संवादे द्वितीयोऽध्यायः समाप्त

अथ तृतीयोऽध्यायः

।। गोरक्ष यन्त्र निर्माणं पूजा विधिञ्च ।।

(श्री गोरक्षनाथजी के यन्त्र और पूजन विधि)

"श्री उदयनाथ उवाच"

निरन्जनादिनाथं में बूहि नाथ ! स रहस्यकम।
येन, केन प्रकारेण पूजांस्य नाथेश्वरम्।।१।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ पार्वती जी कहती है हे निरंजन रूपी आदिनाथजी श्री नाथ जी अर्थात् गुरु गोरक्षनाथ जी के पूजा रहस्य अर्थात किस-किस प्रकार की उनकी पूजा होती है ? हे नाथो के ईश्वर वह मुझे बताइए।।१।।

"श्री आदिनाथ जी उवाच"

मम ज्योति स्वरूपाय गोरक्षाख्यो महाबलः।
तस्य पूजां प्रवक्ष्यामि त्र्योलोक्ये सिद्धिः दायकम्।।२।।
हठाद् नाथं महाघोरं यं यं सिद्धिश्च जायते।
क्षणाद् सिद्धिं लभन्ते च अत्र न संशयः।।३।।

भावार्थः- श्री आदिनाथ जी ने कहा- मेरे ही ज्योति स्वरूपी गुरु गोरक्षनाथजी नाम का महाबली योगी है। उनकी पूजा कहूँगा जो तीनों लोक की सिद्धिदायिनी है। हे नाथ उदय, हठपूर्वक महाघोर साधना करने पर जो-जो सिद्धि मिलती है। वह सब इस पूजा विधि से क्षण मात्र में मिल जाती है। इसमें सन्देह नहीं है।।२-३।।

केशरावृत्तं शेष कृत्वा रचयेत् त्रिकोणं समः।
प्रपूर्येद निजबीजानि तन्मध्ये साधकोत्तमम ।।४।।

लिखेद भूपू र्चतुष्कोणे वज्रोऽस्त्र च अकितं दशम्।
प्राणायाम ततो कृत्वा दश दिक्षु चं पूजयेत्।।५।।

भावार्थः- केशर से शेष (कुण्डलीनि सह) वृत्त (मण्डल) वनाकर सम त्रिकोन की रचना करे उसके मध्य में रव वीजो (ग्रों ग्रों ग्रों) को उत्तम साधक लिखे। तव चतुष्कोन भूपर वनाकर दस वज्रों और अस्त्रो को अंकित करे और (उत्तम) प्राणायाम करके दस दिशाओं में उनकी पूजा करे।।४-५।।

मूलं जालन्धरा बन्ध उड्डीयान कारयेत्।
अभिष्ट सर्व सिद्धिश्च च देवं गोरख नाथकम्।।६।।

भावार्थः- तथा (आवश्यकता के अनुसार प्राणायमों के उपरान्त) मूला जालंधर एवं उड्डीयान वन्ध (क्रम से या एक साथ) करना चाहिए जो देवताओं गुरु गोरक्षनाथ जी एवं सर्व सिद्धियों के अभीष्ठ के लिए करना चाहिए।।६।।

कुम्भक प्राणायाम च निज बीजानी कारयेत्।
ध्यायेभाजा तु गोरक्षाभिष्ठ दायकम्।।७।।

भावार्थः- रव वीज (ग्रो) में छः दीर्घ रवर लगाकर (जैसे ग्रां ग्रो ग्रं ग्रैं ग्रौं ग्रः) प्राणायाम के कुम्भक में करें तव अभीष्ठ प्रदान करने वाले गुरु गोरक्षनाथ जी का ध्यान करे।।७।।

अथ गोरक्ष ध्यानम्

(गुरु गोरक्षनाथ जी का ध्यान)

धर्मार्थ मोक्षमायुञ्च नित्यं कामार्थ सिद्धये

करोमि हृदये ध्यानं गोरक्ष ज्ञान स्वरूपिणे।।८।।
कोटि सूर्य समुत्तेजः ललाटे चन्द्र शोभितम्।
कर्पूर गौरांगम् च दिव्य कर्ण कुण्डलम्।।९।।
भस्मायुतं जटाभियुक्त स्वर्णादि भूषिताम् परोम्।
व्याघ्र चर्मासनस्यैव नाग सिहासने स्थिताः।।१०।।
काषाय वस्त्रं घृत्वा च बाहुम्यी तिलक केसरम्।
निर्मलाज्ज्वलाचन्द्रं कमल मुखाननम् सुन्दरम्।।११।।
शिवास्वरूपी कटाक्षश्च महदश्वर्य दायकम्।
ज्ञानं सुन्दरम् नित्यं विद्यासु परिवेष्टिता।।१२।।
योगिनि सर्व शक्ति च अष्टभैरव शोभितम्।
नाथ! सिध्यभियुक्तश्च च शस्त्रादि परिवेष्टितम्।।१३।।
हस्ते दण्डं त्रिशूलं च क्षेत्रपालादि शोभितम्।
सर्व सिद्धं गणा गन्धर्वसिद्गणश्च वन्दनीयं अहर्निशम्।।१४।।
रुद्राक्षमालां, शैल श्रृंगी च उपवीरतेकम्।
औपद्मासने परमशान्ति च ध्यानं मुद्रे तु शोभितम्।।१५।।
गोरक्षामृतं ज्ञानं च शिवुमा श्रवणोत्सुकः।।
समस्त गुण सम्पन्नः गोरक्ष करूणानिधिः।।१६।।
अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड गोरक्षं सचराचरम्।

दर्शनम् मुक्तिं लाभं च तस्मै श्री गोरक्षाय नमः।।१७।।

भावार्थः- धर्म. अर्थ मोक्ष और आयु की कामना की सिद्धि के लिए मैं अपने हृदय में नित्य ही गुरु गोरक्ष नाथ जी का ध्यान करता हूँ। करोड़ों सूर्य के समान महातेजस्वी मुखारविन्द तथा ललाट पर चन्द्र सुशोभित है। कर्पूर के समान गोर अंग वाले और कानों में दिव्य कुण्डल धारण किये हुए है।।८-९।।

भस्मी रमाए जटाए जैसी स्वर्णादि से आभूषित हो आप व्याघ्र के चर्म एवं नागों के सिंहासन पर स्थित है। गेरुवा वस्त्र धारण किए हुए दोनों भुजाओं पर केसर का तिलक लगाये निर्मल चन्द्रवत उज्ज्वल एवं कमल के समान सुन्दर मुखवाले हो।।१० ११।।

आप कटाक्ष मात्र से महदश्वर्य दायक शिव स्वरुप सर्वांग सुन्दर नित्य ज्ञान विद्याओं से घिरे हुए, सर्व शक्ति (देवियाँ) योगिनी, अष्ट भैरव समूहों द्वारा शोभायमान सभी नाथ सिद्धों (नवनाथ, चौरासी सिद्ध, अनन्त कोट सिद्ध) से विभूषिता एवं नाना अस्त्र शस्त्रों से घिरे हुए हो।।१२-१३।।

आपके हाथों में डडा और त्रिशूल धारण किये हुए है। आप क्षेत्रपाल देवताओं द्वारा सुशोभित और समस्त सिद्धों के समूहों द्वारा वन्दनीय (पूजनीय) हो।।१४।।

रुद्राक्ष की मालाए शैली श्रृंगी जनेऊ सह पद्मासन लगाए ध्यान मुद्रा में गुरु गोरक्षनाथजी आप परम शान्ति में शोभायमान है। गोरक्षनाथजी के अमृतमय ज्ञान को सुनने के लिए साक्षात भगवान शिव और

स्वयं माता (उमा) पार्वती भी उत्सुक है। ऐसे गुरु गोरक्षनाथजी समस्त गुणों से सम्पन्न असीम दयामय एवं मंगल रूपी है। इस अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड सचराचर में श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी विद्यमान है उनके दर्शन मात्र से मुक्ति का लाभ होता है। उन गुरु गोरक्ष नाथजी को मैं नमस्कार करता हूँ।।१५-१६-१७।।

एतद् ध्यात्वा योगेश्वरी आवाहयेत्महाजती।
गोरक्ष पूजयित्वा च शक्तितः भक्तितः समन्विताः।।१८।।
चन्दनाक्षतं सुगन्धीनि पुष्पाणि अन्यैरपि।।
धूपं दीपं रोहान्नभ्य लगोटं च विशेषतः।।१९।।

भावार्थः- इस प्रकार ध्यान करके हे योगेश्वरी महाजती गुरु गोरक्षनाथजी का आवाहन करके यथा शक्ति यथा भक्ति पूजन करे। चन्दन अक्षद सुगंधि कुसुम के पुष्प धूप दीप नैवेद्य और विशेष करके रोट और लंगोट से पूजन करे।।१८-१९।।

गूलरे रक्तपुष्पेषु गोरक्ष तिष्ठति स्वयं।
मोहाम्र फलं विल्वे च कृशरान्नादि समीपके।।२०।।
गूलरस्यफलंमाहत्म्य कथितं नैव शक्यते।
पङ्गलंप्रदानेन् प्रत्यक्षं ज्वाला मातु स्वरूपमर्हति।।२१।।

भावार्थः- लाल गुलर के फलों में गुरु गोरक्षनाथी स्वयं निवास करते हैं। मोह-आम्र और बिल्व के फल तथा खिचड़ी आदि को भी वैसे ही समझे और गुलर फल कि महिमा कहना सम्भव नहीं है। खिचड़ी का भोग लगाने में प्रत्यक्ष शक्तियाँ ज्वालामाई स्वरूप हो जाती है।।२०-२१।।

श्रृणु तत्त्वसारं गोरक्षानन्द कारकम्।
पञ्च-षोडषोपचारः नाथ यन्त्रं च पूजयेत्।।२२।।
पंचामृत पयश्चव मधु गभोंदकं तथा।
दुग्धं नाना विधैव शर्करा गुड़ं मिश्रितम्।।२३।।
अभिषेकं समारभ्य स्नानं शुद्धोदकं पुनः।
लेपनं चंदनं केशरं चैव तिलकं भस्मार्पितम्।।२४।।

भावार्थः- श्री गुरु गोरक्षनाथजी को आनंदित करने वाली श्रेष्ठ सार पूर्ण पूजा सुनो। गुरु गोरक्षनाथ जी की पंचोपचार या षोड़षोपचार से पूजन करे। पंचामृत गाय का दूध मधु नारियल का जल अनेक प्रकार के गुड़ चीनी मिलाकर परिपक्व हुए दूध से अभिषेक करे। पुनः शुद्ध जल के स्नान कराये और भस्मी का लेपन कराये। सुगंधित चन्दन और केशरादि से तिलक करे।।२२-२३-२४।।

कुण्डलं मृत्तिकाश्चैव अर्पितं रक्तवस्त्रकम्।
धूपं दीपं सुपुष्पैर्कर्पुरादि समन्वितम्।।२५।।
स्वयंभू करुमे पुष्पै हयारी अपराजिता।
शुभै विलपनं गन्धं योगं युक्तं समर्पयेत्।।२६।।

भावार्थः- लाल भगवा वस्त्र, नादी जनेऊ और मृतिका के कुण्डल धूप दीप कर्पूर एवं सुगंधित पुष्पों के सहित स्वयंभू कुसुम हयारि एवं अपराजिता के शुभ पुष्प तथा चन्दन के लेपन पश्चात युक्त योग करके अर्पण करे।।२५-२६।।

अष्ट गन्धाद्यैर्ण नाथं निवेदयेत्।
पंचमेवाफलैश्चैव नैवेद्यपड्लं तथा।।२७।।
विविधैरनैकैः अन्न क्षीरोपहारकम।
श्रीफल शस्पुलकादि सर्व भोगं समर्पयेत्।।२८।।

भावार्थः- अष्टगंधादि (अष्टगंध+ अक्षद+ लालपुष्प+ जल) से श्री नाथजी को अर्ध्य निवेद करे। पंचमेवादि (काजू+ बादाम+ पिस्ता+ किशमिश+ अखरोट आदि) इ० (काली मिर्च, लवंग, इलायची, अदरक, लसन इ०) से युक्त खिच्चड़ी पंचफल (विशेषतः आम-गुलर सह) का नैवद्य कच्चादुध, श्री फल (नारियल पानीवाला) तथा रोट इत्यादि अनेक प्रकार के अन्न खीर और उपहार आदि समर्पित करे।। २७,२८।।

पूजयित्वा यथा शक्तिः नाथ नानोपहारकैः।
खड्ग शर्माग्नि बाणं च त्रिशूलं दण्डं चमेटनम्।।२९।।
घोराघोरं अट्टहासं पाशुपत गरुड़ारम्।
अस्त्र-शस्त्रादि भूषणैश्च प्रपुज्यो वरणं यजेत्।।३०।।

भावार्थः- यथाशक्ति अनेक उपहार से श्री गुरु गोरक्षनाथजी की पूजा करे त्रिशूल खड़ग चिमटा डण्डा (शावर भैरव डण्डा) अग्नि बान के शस्त्र तथा घोर-अघोर फटकार पाशुपत वातास्त्र गरुड़ास्त्र इत्यादि अस्त्र-शस्त्र आभूषणों आदि से पूजा करके आवरण देवताओं का पूजन करे।।२९-३०।।

योगिनी तन्त्र संपूज्या दिकपालाः भैरवादयाः।
पार्श्वे मत्स्येन्द्र नाथ पूजयेत् साधकोत्तम।।३१।।

आदिनाथ च-गोरक्ष-सत्यं-संतोषकं तथा।
अचलांचम्भ नाथ च उदये गजकन्थकम्।।३२।।
प्राक् जलंधाराश्च सिद्धः चर्तुरङ्गे पूजयेत।
पश्चद् सिद्धि ऋद्धिश्च नवदुर्गा समन्विताः।।३३।।
महाविद्या संपूज्याः योगिन्या क्षेत्रपालकान्।
आवध्येत् यन्त्र मध्ये तु पूजयेत् यत्नपूर्वकम्।।३४।।

भावार्थः- हे योगिनी वही अष्टभैरव एवं दश दिग्पालों और उनके अस्त्रों की पूजा कर श्रेष्ठ साधक दोनों पार्श्वों में सद्गुरु मीन (मत्स्येन्द्र) नाथ और आदिशक्ति उदयनाथ की पूजा करे एवं आदिनाथजी गोरक्षनाथजी सत्यनाथ (ब्रह्माजी) सन्तोषनाथजी (विष्णुजी) अचल अचम्भे नाथजी (शेषजी) गजवेली, गजकन्थड़ नाथजी (श्री गणेशजी) सिद्ध चौरंगी नाथजी (चन्द्र भगवान) जालन्धर नाथजी सह चौरासी सिद्धों आदि, शक्ति नव दुर्गाजी तथा दशमहाविद्याओं ऋद्धि सिद्धि सह पूजन करे हे उदयनाथजी चौसठ नाथ सिद्ध जोगिनीयाँदि और सभी क्षेत्रपालों सहित इन सभी का यन्त्र के मध्य मे आवाहन करे और यत्नपूर्वक इनकी पूजा करे।। ३१-३२-३३-३४।।
(यहा ''श्री नाथ सिद्ध यन्त्र'' की स्थापना करे।)

ततो गोरक्षनाथस्य षड्चक्राणि प्रपूजयेत्।
शुद्ध भावेन् जपेन्मन्त्रं मन्त्र पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।३५।।
जपं समर्पितं नाथ घण्टानादं पूर्वकम्।
स्तोत्र कवच च आदेश पठेत्, पूर्वक यो विधिः।।३६।।

भावार्थः- तत श्री गुरु गोरक्षनाथजी के षड्चक्र की

पूजा कर पुष्पाजली प्रदान करे, और शुद्ध भाव से साधक यथा शक्ति मन्त्र का जाप करे तथा जप समर्पित कर घण्टा घड़ियाल वजाकर नाद पूर्वक परम नाथ सिद्धों को प्रसन्न करे और स्तोत्र-कवचम् का पाठ कर विधि पूर्वक आदेश (नमस्कार) करे।।३५-३६।।

श्रृणु वत्स्य प्रवक्ष्यामि गोरक्ष योग दुर्लभम्।
पंच तत्वादिकाना च मन्त्रयोगं वदाम्यहम्।।३७।।
सर्वदा पञ्चतत्वैः पूजयेत् तु महाजती।
पञ्चतत्व बिना पूजामभिचाराय् कल्पयेत।।३८।।
पञ्चतत्वेन गोरक्षं प्रसन्न जायते क्षणाद्।
महापूजामेव पंचचक्रेण, स जीवो लभते शिवम्।।३९।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती अव मैं गोरक्षनाथजी का परम दुर्लभ योग एवं पंचतत्वादि का मन्त्रयोग कहता हूँ। उसे सुनिए। महाजती गुरु गोरक्षनाथ जी की पूजा सदैव पंश्चतत्व से करे। पंचतत्व के विना पूजा व्यर्थ होती है। पश्चतत्वों के द्वारा श्री गोरक्षनाथजी प्रसन्नता क्षणभर में हो जाती है। यह पंच तत्व के पंचचक्र महापूजा योग द्वारा साधक का जीवन शिव स्वरुप हो जाता है।।३७-३८-३९।।

पञ्चतत्व समः किञ्चित कलियुगे न विद्यते।
स्वयंपंचतत्त्वरुपो ब्रह्मः पंचतत्त्वमैवपरांगतिम्।।४०।।

{ **विशेष** :- श्री नाथ सिद्ध कवचम् एवं स्तोत्रम् की पुस्तके (श्रीनाथ सिद्ध यन्त्र) इसी स्थान से अलग से प्राप्त कर सकते हैं।}

श्रृणु नाथोदय पञ्चतत्वमेव सदाशिवः।
पञ्चतत्व स्वयं ब्रह्मः स्वयमेव जनार्दनः।।४१।।
पञ्चतत्व महायोगि मोक्षं-मुक्तिं प्रदायक्
पञ्चतत्वं विनौव सुखं मोक्षं विद्यते।।४२।।

भावार्थः- *कलियुग में पंचतत्वों के समान कुछ भी नहीं है। पंश्चतत्व परब्रह्म स्वरूप है और श्रेष्ठ गति दायक है। हे उदयनाथ जी सुनो पंचतत्व स्वयं सदाशिव ब्रह्मा और विष्णु स्वरूप है। पंचतत्व महायोग से मोक्ष और मुक्ति मिलती है। पंचतत्व के विना साधक को सुख और मोक्ष नहीं मिलता।।४०-४१-४२।।*

पंच तत्त्व प्रभावेण कोटि पापं प्रमुच्यते।
नाशयेत् तत्क्षणमेव तूल राशिमिवानलः।।४३।।
यन्त्रं पूजयेत् चक्रं तत्रं नाथ वशयेद् धुवम्।
चक्र विनापूजां गोरक्षनाथास्य विन्मुख न गच्छति।।४४।।

भावार्थः- *हे योगिनी पंचतत्व के प्रभाव से करोड़ो महापाप उस प्रकार नष्ट हो जाते है जिस प्रकार अग्नि रुई (कपास) के ढेर को भस्म कर देती है। पंचतत्व की चक्र पूजा जहाँ होती है, वहाँ गुरु गोरक्षनाथजी निश्चय ही निवास करते है। चक्र पूजा से रहित स्थान से महाजती गुरु गोरक्षनाथजी विमुख हो जाते हैं।।४३-४४।।*

पृथ्वी आपाग्नि वायुं आकाशं च समन्वितम।
ते सर्व संस्थिते पिण्डे चक्रं पूजां स्वरूपिणे।।४५।।
नित्यं पंच तत्त्वंच चक्र साधनांन् तथा जपेत्।।

भावार्थः- *पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु-आकाश सहित वह*

(पंचतत्व) सभी शरीर में चक्रपूजा अर्थात (कुण्डलिनी चक्र जाग्रती) के स्वरूप में स्थित है। अतः नित्य पञ्चतत्व पूजा से चक्र पूजा की साधना करनी चाहिए।।४५।।

शुभकाले तु स्थाने च मिताहारं तथा परम्।
नाड़ीं शुद्धिं च तत्पश्चात् प्राणायामं च साधयेत्।।४६।।
प्राणायामेव प्राणस्य सुस्थिरंगतिम्।
पूरकं कुम्भकं रैचकं च प्राणापान चतुर्थकम्।।४७।।

भावार्थः-अर्थात् प्रथमतः शुभ समय, शुभ स्थान और सम्यमक आहार कर नाड़ियों की शुद्धि करनी चाहिए। इसके पश्चात प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। शरीर के नाड़ियों में प्राण के प्रवाह के प्रयास पूर्वक उसे स्थिर रखने की क्रिया ही प्राणायाम है तथा पूरक कुम्भक रेचक और प्राण-अपाण का संघटन यह प्राणायाम के चार भेद है और यही प्राणायाम के लक्षण भी है।।४६-४७।।

भुवि पित्त वर्ण च भुवर्लोके लकारकम्।
अधिष्ठातास्वयं ब्रह्मः मूलाधारे च डाकिनी स्थित.।।४८।।
एतानि पंच घटिका मूलाधारे स्थिताः।
कुण्डलिनी ऊर्ध्वगामीचं पृथ्वीं तत्त्वं वशं भवेत्।।४९।।

भावार्थः- पृथ्वी तत्व पित वर्ण का है। भुवर्लोक में यह ''लं'' कार बीज से युक्त अधिष्ठाता ब्रह्माजी है। यह शक्ति डाकीनी सह मूलाधार चक्र मे स्थित है। प्राण-अपान को मूलाधार चक्र मे संघटन (मिलन)

करके (मन्त्र जाप में) पांच घड़ी (२ घण्टे) तक अभ्यास करना चाहिए। इसके प्रभाव से शक्ति कौलिणी (कुण्डलीनी) उर्ध्वगमन करती है और पृथ्वी तत्व वश में हो जाता है।।४८-४९।।

श्वेतवर्णं जलं च स्वर्लोकं वँ कार बीजकम्।
स्वाधिष्ठान च शाकिनी विष्णुः स्वयमधिष्ठिताः।।५०।।
विलीयं मनं प्राणं घटिका पच धारयेत्।
बीजं मन्त्रस्य जापं वा स्वाधिष्ठानस्य चिन्तनम।।५१।।
भस्मं गच्छन्ति सर्वदः स्वाति कालकूटं विषमपि।
तेषां भयं मृत्युं न जायन्ते जलंमयम्।।५२।।

भावार्थः-यह जलतत्व श्वेत वर्ग है। स्वर्लोके में ''वं'' कार बीज से युक्त है और स्वाधिष्ठान चक्र में शक्ति शाकिनी स्थित है और भगवान विष्णुजी अधिष्ठाता है। मन और प्राण के विलय कर पांच घड़ी (२ घण्टे) तक धारण करे। बीज मन्त्र का जाप अथवा चक्र स्वाधिष्ठान का चिन्तन करे। इससे दुसह कालकूट विष भी भस्म हो जाता है। (यह वारुपी धारणा है) इस धारणा से ना जल का भय रहता है और ना जल में मृत्यु होती है।।५०-५१-५२।।

रक्तवर्णे महर्लोके अग्नि ''रं'' कार बीजकम्।
मणिपुरे च लाकिन्या रुद्रदेवताधिष्ठिता।।५३।।
तत्र लीन कुरु प्राणं घटिका पंच धारयेत।
वैश्वानरी धारणा प्रोक्ता अग्नि तत्वं वशाप्नुयात्।।५४।।

भावार्थः- यह अग्नि तत्व महर्लोक में रक्तवर्ण (लाल) से नाभि में ''रं'' तत्व बीज से युक्त है। यह मणिपुर चक्र में शक्ति लाकिनी सहित रुद्र देवता अधिष्ठित है। इसमें प्राण को लीन कर पांच घटी (२ घण्टे) धारण (बीज मन्त्र रो) करनी चाहिये। इससे अग्नितत्व वश में हो जाता है। यह वैश्वानरी धारना है।।५३-५४।।

वायु यं कार बीज सहितं च हृदि स्थित्वानहदम्।
धूम्रवर्ण जनर्लोके अधिष्ठातृ च ईश्वरः।।५५।।
विलीय घटिका पंच तत्र प्राण च धारयेत्।
आकाशगामी योगी च वायवी धारणाऽयम्।।५६।।

भावार्थः- वायु तत्व ''यं'' बीज सहित अनहद (हृदय) चक्र में धूम्रवर्ण और जनर्लोक मे शक्ति काकिनी स्थित है। इसके अधिष्ठातृ देवता ईश्वर है। प्राण को इसमें बीज मन्त्र से पांच घड़ी (२ घण्टे) विलय धारणा करने पर योगी आकाशगामी हो जाता है। यह वायवी धारणा है।।५५-५६।।

''हं'' बीज युक्तं श्वेत वर्ण आकाशे स्थित शाकिनी।
विशुद्ध च तपर्लोके अधिष्ठिता सदाशिवः,।५७।।
लक्ष्यंमनं प्राणश्च समोक्षमाप्नुयात्।
सुख-दुःखाद् परं योगी धारणांय नभो यथा।।५८।।

भावार्थः- आकाश तत्व श्वेत वर्ण से विशुद्ध चक्र में ''हं'' बीज से युक्त है। इसके अधिष्ठातृ देवता सदाशिव तथा शक्ति शाकिनी सह तपर्लोक में स्थित है। इसमें मन और प्राण का लक्ष्य कर पाँच घड़ी

(२ घण्टे) तक धारणा करनी चाहिए। इससे योगी सुख दुख के परे जाकर मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। यह नभो की धारणा है।।५७-५८।।

{ **विशेष** :- ''आकाश तत् सदा शिव जान''

ऐसा गुरु गोरक्षनाथजी कहते हुये इन पांच महाभूतों की धारणा से मोक्ष की प्राप्ति होती है। (अर्थात् जीव शिवमय हो जाता है।) इसे ही पंचतत्व या चक्र (जाग्रत) पूजा की साधना कहते हैं।}

योगिनि पंच तत्वं च मोक्षं मुक्तिं मवाप्नुयात।
श्रृणु शेष महाकाश शून्य चक्रस्य धारणा।।५९।।

भावार्थः- हे योगिनी इस प्रकार पंचतत्व की धारणा से मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति होती है। अतः शेष महाकाश और शून्यातित चक्रों की धारणाओं को सुनो।।५९।।

तत्त्वोऽयं महाकाशः सत्त्वाकाशे च संस्थितः।
प्रणवोंकारं च शम्भ्वधिष्ठ देवता।।६०।।
ध्यायेत् पंचघटिका यावत् तत्र प्राणं च धारयेत्।
जपंबीजमंत्रस्य भूमध्ये च चिन्तनम्।।६१।।
इदं धारणा च प्रोक्ता महानभो धारणा तथा।
कपाटमवरुद्धं च योगिनः मोक्षमाप्नुयात्।।६२।।

भावार्थः- यह महाकाशतत्व सत्यलोक में भूमध्य आज्ञा चक्र में स्थित है। इसका बीज प्रणव ॐकार है। इसके अधिष्ठाता शम्भु शक्ति हाकिनि सह यहा स्थित है। यहाँ प्राण का (मन सहित ॐकार बीज से) लय करके

पांच घड़ी (२ घण्टे) तक साधक को महाकाश धारणा करनी चाहिए इस अभ्यास के फल स्वरूप योगी का मोक्ष का बन्द दरवाजा खुल जाता है। इसे महानभो धारणा कहते हैं।।६०-६१-६२।।

शून्यातीतं परंतत्वं सहस्त्रागारे च स्थितः।
गुरुमन्त्र स्वरूपो परंबीजं च सस्थितः।।६३।।
सत्गुरु पराशक्तितः च परलोके प्रतिष्ठितः।
ध्यायेत् गुरु मन्त्रं जप प्राणं सचित्तकम्।।६४।।
मंत्रस्य प्रभावेण संः सिद्ध मोक्षमाप्नुयात्
समनः वैरवरीं गत्त्वा शून्योऽयं समाधिरुच्यते।।६५।।

भावार्थः- यह शून्यातित परंतत्व सहस्त्रागार चक्र (टालू भाग मे) में परम बीज गुरु मन्त्र के रूप में स्थित है। इस परंलोक में सत्गुरु परा-शक्ति सहित स्थित है। इस शून्य तत्व में (शिश के टालु भाग में) गुरु मन्त्र द्वारा (मन्त्र का जाप जपते हुये) मन प्राण सह चित्त का लय करना चाहिए। इसके प्रभाव से साधक तत्काल मोक्ष-मुक्ति स्वरूप हो जाता है। मन शून्य समाधि में पहुँच जाता है। इसे शून्य धारणा कहते हैं।।६३-६४-६५।।

यदा पञ्चतत्वं न शक्यते साधकैः।
जपेत बीजमन्त्रं सपादलक्षकम्।।६६।।
यथा विधिं जपे नित्यं चत्वारः लभते धर्मम्।
निप्लवा सर्वे विघ्ने ऋद्धि सिद्धि प्राप्यते।।६७।।

भावार्थः- हे योगेश्वरी अगर साधक यह पंचतत्व की (उपरोक्त चक्रपूजा की साधना) साधना को नहीं कर

पाता तो वह बीज मंत्र का सवालक्ष जाप करे। उसे नित्य विधिवत जाप करने पर उसे चारों धर्म (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति होगी और सभी संकटों का नाश होकर ऋद्धि सिद्धि की प्राप्ति होगी।।६६-६७।।

यंयं कामार्थ संपूज्य तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
संपूजयेत्तु गोरक्षं विजयं तं निश्चितम्।।६८।।
पुरश्चर्येत सवालक्षं जपेत्तु साधकोत्तम्।
तददशांशाहुतिं दध्यात् पायसंमधु घृतं तथा।।६९।।
तर्पयेद् तद दशाश जलं चन्दनं मिश्रितम्।
तद दशाश जलं मिश्रित अष्टगन्धैरभिसिंचयेत्।।७०।।
तद दशांशाभिषेकंस्य नाथ साधुं च स्तोषरोत्।
मिष्टान्नं दक्षिणां दानः नाथः भक्ता तर्पयेत।।७१।।
पुरश्चर्येत् इदं कृत्वा सिद्धो भवति साधकाः।
सर्वाणि प्रयोगाणि च सिद्धिर्भवति सो तदा ।।७२।।

भावार्थः- हे उदयनाथ जिस-जिस कामना के लिये उक्त प्रकार जो श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की पूजा करता है। वह उस-उस कामना को हस्तगत कर निश्चय ही विजय प्राप्त करता है। पुरश्चरण काल में बुद्धिमान साधक के, सवालाख जप करना चाहिए। उसका दशांश ''हवन'' घृत शर्करा मधु युक्त खीर द्वारा करना चाहिए। उसका दशांश तर्पण चन्दन युक्त जल से करना चाहिए। उसका दशांश अष्ट गंधादि द्वारा अभिषेक करना चाहिए और अभिषेक का दशांश उत्तम

नाथ सन्तों को और नाथ भक्तो को मिष्ठान अन्न (भोजन) एवं दक्षिणा दानादि से संतुष्ट करना चाहिए। इस प्रकार पुरश्चरण की क्रिया कर साधक सिद्ध हो जाता है और तब वह प्रयोगों को करने में निश्चित रूप से सक्षम हो जाता है।।६८-६९-७०-७१-७२।।

तत हृदये नाथ संयुज्य शेषं प्रति।
निर्माल्यमीशानं क्षिपेत् वत्तं च परिकल्पयेत्।।७३।।
प्रसादं गृहित्वा च साधकाः भक्तैः सह।
भक्त्यानन्दं समाध्यानन्दं भक्तिरस स्वयमीश्वर।।७४।।

भावार्थः-इसके पश्चात् (अर्थात् पंश्चतत्वादि चक्र पूजा साधना तथा जप हवन तर्पनादी) के पश्चात हृदयरथ श्री गुरु गोरक्षनाथजी को (यन्त्रस्त पूजा-हवनादि) शेष का (बचा हुआ पूजा साहित्य तथा भोग प्रसाद) के प्रति उन्मुख कर ईशान कोन में वृत्त कि कल्पना करके निर्माल्य छोड़े और साधकों या भक्तों के साथ भक्ति भाव पूर्वक (श्री नाथजी का) प्रसाद ग्रहण कर अपनी भक्ति सह महद्-आनन्द में (भक्ति-आनन्द-भावानन्द समाधि का आनन्द सच्चिदानंद इ० भक्तिरस में) विहार करे।।७३-७४।।

गोरक्ष साधनं मूलं जपादिकस्य मूलकम्
श्रृणोदयं तु गोरक्षम् जीवन मूलमेवय च।।७५।।
ऐहिक परलोकस्य गोरक्ष ही तु मूलकम्।
नाथ मूलं तपः सर्वत्र धर्म अर्थादिकम् चतुः।।७६।।

भावार्थः- गुरु गोरक्षनाथजी ही साधना जपादि का

मूल है। श्री गोरक्षनाथ ही जीवन का मूल और वही इहलोक एव परलोक का मूल है। श्री गोरक्षनाथ जी ही तप का मूल है। हे उदय नाथ सुनो धर्म अर्थ काम एवं मोक्ष का भी मूल गोरक्षनाथ ही है।।७५-७६।।

गोरक्ष मूलं सर्वाणि स्थावराणि जङ्घमानि च।
अज्ञानात् पापिनिः सर्वे यान्ति नरकादिम्।।७७।।
तस्मा .त्सर्व प्रयत्नेन् साधकंश्च शिवाज्ञया।
साधकोः साधनां ध्ययित्, अन्यथायान्ति रौरवम्।।७८।।

भावार्थः- जड़ और जङ्गम का मूल गोरक्ष नाथजी ही है। इस तथ्य को न समझकर अज्ञान से पापी लोग निश्चित रूप से भयानक नरक मे जाते है। इसलिए भगवान शिव की आज्ञा के अनुसार साधक प्रयत्न करके श्री गुरु गोरक्षनाथजी का प्रसाद एवं नाथ सिद्धों की योग साधना को धारण करना चाहिए अन्यथा साधक रौरव नरक में जाते है।।७७-७८।।

इदं पूजादिकं सर्व गोरक्ष प्रतिकारकम्।
गोरक्षनाथ पूजनेन् प्रसन्नोभवतिसर्वदा।।७९।।
चक्र पूजां सम केचिद् नास्ति सिद्धिः प्रदायकम्।
गोरक्ष सदा रक्षति यो मंत्र यंत्र च नित्यं जपति।।८०।।
उदय सर्वाणि कर्माणि आवाहनादि मेव च।
गन्धादि लेपनं चैव पूजयेद विविधेन च।।८१।।
यन्त्र चक्रं समं केचिद् नास्ति ज्ञाने तु अन्यके।
महाप्रीतिर्भवेद नाथ सिद्धो भवति तत्क्षणाद।।८२।।

भावार्थः- यहाँ सारा पूजनादि श्री गुरु गोरक्षनाथजी

को प्रसन्न करता है। श्री गोरक्षनाथजी के यन्त्र और मन्त्र से की गयी पूजा से गुरु गोरक्षनाथजी अत्याधिक प्रसन्न होते है। चक्र पूजा (पञ्चतत्वादि-योग साधना-कुण्डलिनी चक्र जाग्रती) यह महापूजा है। उसके जैसी कोई सिद्धि नहीं है। यह गोरक्षनाथजी के यन्त्र जैसी कोई सिद्धि नहीं है। यह श्री गुरु गोरक्षनाथजी के यन्त्र पूजा एवं मन्त्र जाप नित्य करने से श्री गुरु गोरक्षनाथजी नित्य रक्षा करते हैं। उसमें आवाहनादि सभी कर्म कर उस पर विविध प्रकार के गन्धादि का लेपन करे। इससे गुरु गोरक्षनाथ जी को अत्यंत प्रसनन्ता होती है और साधक शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है। मेरे ज्ञान में यन्त्र पूजा-चक्र पूजा जैसी समान अन्य कोई भी पूजा नहीं है।।७९-८०-८१-८२।।

।। इति श्री गोरक्ष तन्त्रे उदयनाथ-आदिनाथश्वर।।

संवादे तृतीयोध्यायः समाप्त

अथ चतुर्थोऽध्यायः

।। गोरक्ष मन्त्रम् ।।

(श्री गोरक्षनाथजी के मन्त्र)

"श्री आदिनाथ उवाच"

श्रेष्ठोयद् परमं मन्त्रं सादरं श्रृणु योगिनी।
यं जपेत् किंचित् मात्रेण, सर्व कामार्थ सिद्धये।।१।।
इन्द्रादिक त्रिदेवंच, यक्ष मन्धर्व किन्नरान।
योगिनी सिद्धिः नायिका च डाकिनी भैरवादयाः।।२।।
ज्ञानी विज्ञानीश्च साधयतिस्वंस्वं मनोरथाः।
प्रसादे इदमागत्यं स्वकीय विषयान्तिता।।३।।
दुर्लभं गोरक्ष मन्त्रेण, श्रेष्ठता च परां गतिम्।
स्वर्गे मृत्युलोके च पाताले सिद्ध साधकाः।।४।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे (उदयनाथ) योगिनी परम अति श्रेष्ठ मन्त्र कहता हूँ। उसे आदर सहित सुनो। यह साधना करने मात्र से त्रिदेव इन्द्रादि देव यक्ष गन्धर्व किन्नर योगिनी डाकिनी भैरवी नायिका और सभी नाथ सिद्ध सन्तों के सहित सभी की कामना पूर्ण होती है। ज्ञानी और विज्ञानी भी अपने-अपने मनोरथ को पूर्ण करते हैं। स्वर्ग लोक मृत्यु लोक और पाताल लोक में जो भी सिद्ध साधक है। वह श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के दुर्लभ मन्त्र से श्रेष्ठ

योग्यता को प्राप्त करते हैं।।१-२-३-४।।

ग्रों ग्रों ग्रों त्रीणिबीजानि हूँ हूँ द्वेय बीज्वकम्।
हिं हिं द्वे बीजे पुनः गोरक्षं वदेत्।।५।।
निरंजनात्मनः शब्दं पूर्वोक्तं बीजं कल्पयेत।
द्वेऽन्ने प्रोक्तं अस्त्रं ठः मन्त्रं तन्त्रेषु दुर्लभम्।।६।।

अथ मन्त्र

ग्रों ग्रों ग्रों हूँ हूँ हि हिं गोरक्ष निरंजनात्मने हि हि हूँ हूँ ग्रों ग्रों ग्रों फट् स्वाहा

भावार्थः-हे उदयनाथ पार्वति आपने तीन बीज (ग्रो ग्रों ग्रों) उसके बाद दो क्रोध बीज (कूर्य) (हूँ हूँ) और दो माया बीज (हिं हिं) फिर गोरक्ष कहना चाहिए तब निरन्जनात्मने शब्द और पूर्वोक्त। बीजों की पुनः कल्पना करनी चाहिए और अन्त में दो अस्त्र दो ठं (फट् स्वाहा) यह सभी तन्त्रों मे दुर्लभ मन्त्र कहा गया है।।५-६।।

आदौ ॐकारं प्रोक्तं महापातक नाशनम्।
दुर्लभोत्रिलोकेषु चतुर्वर्ग प्रदायकम्।।७।।
यस्य स्मरण मात्रेण सर्व विघ्नः विनाशनम्।
सर्वाण्यभद्राणि पतंगानि दह्यते यथाग्निः।।८।।

भावार्थ-पूर्वोक्त मन्त्र के आदि में प्रणव (ॐ) लगाने से महापातक नष्ट हो जाते हैं एवं चार वर्गों (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति होती है। यह मन्त्र तीनों लोकों

मे दुर्लभ है। इस मन्त्र के स्मरण मात्र से ही सभी प्रकार के विघ्न उसी प्रकार नष्ट होते है। जैसे अग्नि मे पतंगे जलकर भस्म हो जाते हैं।।७-८।।

गृहीत्वा मत्रं मात्रेण प्रियो भवति सः नरः।
भक्तिः मुक्ति करे तस्य जीवनन्मुक्तो भविष्यति।।९।।
तंहदि स्वयं वसति लक्ष्मी मुखे साक्षात् सरस्वतिः।
जायते तस्य वंश वृद्धिः भवेत् कुलंमजरामरम्।।१०।।

भावार्थः-मन्त्र लेते ही मनुष्य सभी लोगों का प्रिय बन जाता है। भोग और मोक्ष उसके हाथ मे आ जाते हैं। और वह जीवनमुक्त भी हो सकता है। स्वयं लक्ष्मी उसे वरण कर लेती है और साक्षात् सरस्वति उसके मुख में निवास करती है तथा उसके वंश वृद्धि और कुल परम्परा अमर हो जाती है।।९-१०।।

श्रृणु उदयनाथः सर्वेषु गोरक्षेषु पीठादिकः।
अभीष्ट सिद्धिमाप्नोति नात्र किंचित् संशयः।।११।।
मंत्रस्य प्रभावेण पलायन्ति हिंसकान् सर्वान।
सादर नमस्कुर्वन्ति, विद्रदामरहर्निशं सदा।।१२।।

भावार्थः-हे उदयनाथजी सुनिये सभी गोरक्षादि पीठों में आश्चर्य जनक सिद्धि होती है। इसमें कोई भी शंका नहीं है और इस मन्त्र के प्रभाव से सभी हिंसक पशु भाग जाते हैं तथा सत्पुरूष जन आदर से आदेश सहित नमस्कार करते हैं।।११-१२।।

कोट्यनन्त सहस्त्रेस्तु शतैकोटि मुखादपि।
वर्णितं मन्त्रं माहत्म्यं नशक्यते योगिनी।।१३।।
योगनी न्यासं पूजनं च सर्व पूर्वमुच्यते।
पुरश्चर्यं यथा विधिः नव सहस्र मनसा च।।१४।।
नवशतं मंत्रं जपेत तत्दशांशाहुतिं दध्यात्।
आप्नोति मंत्र सिद्धिश्च एतत्त्वरित साधकों भवेत।।१५।।

भावार्थः- हे योगिनी करोड़ों हजारों और करोड़ों सैकड़ों मुखों से भी इस मन्त्र की महिमा का वर्णन करना अशक्य है। न्यास पूजनादि सभी बाते पहले ही (तृतीय अध्याय) कही जा चुकी है और इसके पुरश्चरण में यथा विधि नौ हजार जाप और नौ सौ मन्त्र द्वारा उसकी दशांश आहुतियाँ प्रदान करे। इससे साधक को मन्त्र सिद्धि मिल जाती है और वह इसका प्रयोग करने में सक्षम हो जाता है।।१३-१४-१५।।

श्रृणु गोरक्ष ध्यानं च धनं धान्यं सुखं प्रदाम्।
हरति तत्क्षणं दारिद्रयं, मंत्रं न कोऽपि संदेहम्।।१६।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती श्री गुरु गोरक्षनाथजी का ध्यान सुनिये जो धन-धान्य और सुखदायक है। क्षण भर में ही दरिद्रता का नाश कर देता है। इसमें सन्देह नहीं है।।१६।।

।। गोरक्ष ध्यानम्।।

आदि शिव स्वरूपेण गोरक्षनाथ सर्वदा।
महायोगी परंज्ञानी सिद्धिश्च मुक्ति दायकम्।।१७।।

ध्यायेनित्यं गोरक्षम वृक्षाधे वह निभं चारू चद्रा वतं सं।

कर्पूर कान्तिं सम च अक्षयं वर मुद्रा भीति हस्तं प्रसन्नम्।।१८।।

पद्मासीनं समन्तात् व्याघ्र कृतिं वसानं सुललितं जटाश्य।
ब्रह्मादि दैवतं सदैव वन्दनीयं त्रिनेत्र तं नमामि।।१९।।

ऋद्धिः सिद्धिः स्वरूपाय कृपया भक्त सर्वदा।
स्वयंभू ज्योति रूपाय, शिव गोरक्षं भजाम्यहम्।।२०।।

सर्वदा तु कलौ काले महापातक नाशकम्।
यः भुक्ति योग सहितं च सर्वदानन्द दायकम्।।२१।।

भावार्थः- श्री गुरु गोरक्षनाथजी जो सदा सर्वदा शिव आदिनाथ जी स्वरूप और महायोगी परम ज्ञानी परम सिद्ध एवं मोक्ष मुक्ति प्रदान करने वाले है। वटवृक्ष के नीचे रहने वाले जिनके मस्तक पर चन्द्र विराजमान है। जिनकी कर्पुर समान कान्ति है। जिनके हाथ अक्षय मुद्रा एवं वर मुद्रा से सुशोभित है और जो सदैव प्रसन्न चित्त वाले है। पद्मासन लगाए व्याघ्राम्बर धारण किये हुए सुन्दर जटाधारी तथा ब्रह्मादि सभी देवो द्वारा सदैव वन्दनीय ऐसे त्रिनेत्र वाले गुरु गोरक्षनाथजी को मैं नित्य ही नमस्कार करता हूँ। ऋद्धि और सिद्धि स्वरूप सर्वदा भक्तों पर कृपा करने वाले एवं स्वयंभू ज्योति स्वरूप साक्षात शिव स्वरूप गुरु गोरक्षनाथजी का मैं भजन करता हूँ। जो कि कलियुग में सर्वदा बड़े-बड़े

पापों का नाश कर भोग और योग सहित सभी प्रकार का आनन्द देने वाले हैं।।१७-१८-१९-२०-२१।।

योगिनी परमं गुह्यं ध्यानमपि दुःख नाशकम्।
सर्वेषु तन्त्रेषु परं गुह्यं तव स्नेहात्प्रकाशितम्।।२१।।

भावार्थः- हे योगिनी यह (गुरु गोरक्षनाथजी का) ध्यान परम गुप्त और दुः ख नाशक है। सभी तन्त्रों में यह अत्यन्त गुह्य है, तुम्हारे स्नेह भाव होने से मैंने इसे प्रगट किया है।।२१।।

।।इति श्री गोरक्ष तन्त्रे उदयनाथ आदिनाथेश्वर।।
संवादे चतुर्थोऽध्यायः समाप्त

अथ पञ्चमोऽध्यायः

।। गोरक्ष-पूर्णाभिषेक-विधानम् ।।

(श्री गोरक्षनाथ का सम्पूर्ण अभिषेक का विधान)

"श्री उदयनाथ पार्वत्युवाच"

आदिनाथो महानाथो, महाज्ञानी च वन्दनीयम्।
पूर्णाभिषेकविधिं ''साबरं'' वद्मांमुक्तिदायकम्।।१।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ पार्वति ने कहा हे परमवन्दनीय, महाज्ञानी एवं महानाथजी आदिनाथजी शाबर (मन्त्रतंत्रादि) विधि के द्वारा पूर्णाभिषेक के सम्बंध में मुझे बतलावो जो मोक्ष-मुक्ति दायक है।।१।।

"श्री आदिनाथजी उवाच"

श्रृणु योगिन्युदय नाथ! पूर्णाभिषेको परमाद्द्भुतम्
आशान्वितं पूर्तिं च गोरक्षं प्रदायक्।।२।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे योगिनी उदयनाथजी अत्यन्त विलक्षण पूर्ण अभिषेक के सम्बन्ध में सुनो जो सभी आशाओं की पूर्ति करने वाला और गोरक्षत्व को देने वाला (अर्थात वरदान देने वाला) है।।२।।

आवह्येत गुरु श्रेष्ठः पूजयेतभिषेकं विधिम्।
गुहयाति गुह्यं स्थले रम्ये सिद्धेस्य चरेत।।३।।
सुवासिभूषणानि च सद्गुरुमर्पयेत्।
भक्तगणा समानीय तत्वानि च श्रृणुयत्नतः।।४।।

दीक्षितादीक्षिता वा सर्व मनसा जपेत्।
आप्नोति सत्गुरुलोकं योगिन्यत्र न संशयः।।५।।

भावार्थः- योग ध्यान में पारंगत ज्ञानी और सभी में श्रेष्ठ उत्तम सद्गुरुजी को आवाहित (आमंत्रित) करके अभिषेक विधि करे। अत्यन्त गुप्त और शुद्ध तथा सुन्दर स्थान में (आश्रम में) जो नाथ योगिओं द्वारा समर्पित हो भक्तगण और तत्वो (पूजनादि सामग्री) को सुन्दर प्रयत्न करके साथ एकत्रित करे। फिर वही दिक्षित (विशेषतः) नाथ सिद्धों को वुलाकर भक्ति पूर्वक विठाए। तव अभिषेक के वस्त्रादि आभूषणों से सद्गुरु जी का पूजन करे।।३-४-५।।

पूजयेत विधिना श्रद्धया शम्भु नादेन ॐ कारेण च।
स्तुवन्निर्मलेन भावेनभिषेकं मृदुलं वदेत।।६।।
बोहाय पयाभिषेकं भैरसौवर्य कुरुमेसदा।
हे! नाथ सिद्धेश्वर अभिषेकं विधिं कुरु
शरणागतोस्म्यहम्।।७।।

भावार्थः- सद्गुरुजी को विधिवत एवं श्रद्धा पूर्वक नमस्कार (नादि आदेश या ॐकार उठाकर शम्भु आदेश) करे। और उनका स्तवन करके उन्हे प्रसन्न करे। फिर शुद्ध भाव से एवं मृदु वोल कर प्रार्थना करे। कि हे गुरुदेव अभिषेक विधि को वतलाकर मुझे कृतार्थ करे। हे कृपावन्त, हे नाथजी हे सिद्ध गुरुदेव मैं आपकी शरण में आया हूँ अतः अभिषेक विधि को करे।।६-७।।

ततो रात्गुरुं प्रसन्नोभूत्त्वा तत्त्वानां शोधनं कुरु।
मन्त्रैर्मुद्रैर्युक्त कलशस्य स्थापनं कुरु।।८।।
धूपदीपैश्चचितानै च सुगनधीनि पुष्पाणि च।
योविधिना पूज्यश्च नित्यं स सत्गुरंमहीते।।९।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती तब ज्ञानवन्त सद्गुरुजी प्रसन्न होकर तत्वो का शोधन करे, और मन्त्र एवं मुद्राओं द्वारा अपने सन्मुख कलश की स्थापना कर धूप दीप आदि के द्वारा (स्थान को) वातावरण को प्रफुल्लित कर विविध पुष्पों-सुगन्धियों और सभी प्रकार की सामग्रियों से पूजन करे।।८-९।।

रंचितं तन्त्रोस्तविधिना यत्रं, शास्त्र सम्भत्संयुतम्।
अभिषिक्त्वा गोरक्षस्य जल कुम्भ निर्मलम्।।१०।।
समाप्य महती पूजां तत्त्वानिपचं सन्निवेघ च।
गुरुसमर्पयेद पश्चाद स्वयमेवं प्रसादं गृहेत।।
अमृताभिषेकं पूर्व गुरुं दद्यात्पश्चात् स्वयमेवपिवेत्।।११।।

भावार्थः- तन्त्रोक्त विधि से चक्र की रचना (अर्थात पूजनादि साहित्य एवं साधकों के चक्रासन इ०) करके गुरु गोरक्षनाथ जी (अर्थात-मूर्ति या चरण पादुका या नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र इ०) का कुम्भ के निर्मल जल से अभिषेक करे। और महापूजा को समाप्त कर तत्वों (पंचतत्वात्मक भोग-ताम्बुल इ०) को अर्पित कर चुकने पर प्रथम सद्गुरुजी को प्रसाद देकर तब थोड़ा प्रसाद स्वयं ग्रहण करे। तथा अभिषेक का अमृत (तीर्थ) का

उन्हें पान कराए और स्वयं पान करे।।१० ११।।

अतः प्राणायाममुद्रादि पंचतत्वानि साधयेत।
येन परमसुखानन्दयोः विहरणं कुरु।।१२।।
साधकमचलं सिद्धिर्भवतु निश्चला।
अभिषेचना साधना कर्म निर्विघ्नं भवति निश्चितम्।।१३।।

भावार्थः- अब प्राणायाम एवं मुद्रादि पंचतत्वात्मक साधना करके सुखानन्द एवं परमानन्द में विहार करें और कहे कि साधना करने वाले को अटल सिद्धि प्राप्त हो, इस प्रकार 'अभिषेक' साधना कर्म निश्चय ही शीघ्र और निर्विघ्न सम्पन्न होता है।।१२-१३।।

चक्रालयान्निः सरेन्न जन एकोऽपि उदय।
प्रातर्कृत्कर्माणि कुर्यात तत्रैव साधकः।।१४।।
त्रीणि दिनानि यावत्, भक्तयो तांस्तु समर्चयेत।
नवं च एको वेंशतिका एकचत्वारिशत् दिनानि च।।
तदर्हर्निशं भवेत् पूजां, गोरक्षसिद्धिर्भवेत्।।१५।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती चक्रालय से एक भी व्यक्ति (साधक) बाहर न निकले, प्रत्येक साधक को वही प्रातः कृत्यादि समस्त कार्य करने चाहिए। इस प्रकार तीन दिनों तक, नौ, इक्कीस या इकतालीस दिनों तक साधक रात-दिन भक्ति पूर्वक उन सबका अर्चन करे तब वह गुरु गोरक्षनाथजी का (अर्थात मूर्ति या चरण पादुका या श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र) का अभिषेक होता है।।१४-१५।।

उदयं श्रृणु सादर विधिं वक्ष्ये अनुष्ठान।
दीर्घादीर्घ प्रमाणं घटमानयेत्।।१६।।
मृतिका, ताम्रेण वापि स्वर्णेन निर्मितं च वा।
अष्टधातु पंच धातु च धातु नवम तथैव च।।१७।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती सादर सुनो जो अनुष्ठान विधि बतलाता हूँ। न बहुत बड़ा न बहुत छोटा उचित रूप का घट ले आये चाहे मृतिका का हो चाहे ताम्बे का बना हो या सोने का अथवा अष्टधातु या पञ्च धातु या नौ धातुओ का हो।।१६-१७।।

नाना लंकार वस्त्राणि नाना द्रव्याणि भूरिशः।
केशरं कस्तुर्यष्टगंधः नाना गन्धीनि वस्तूनि च।।१८।।
बिल्व पत्राणि पुष्पाणि पञ्च तत्वानि यत्नतः।
विहितान् धूप दीपश्च घृतं प्रयत्नतः आनयेत।।१९।।

भावार्थ- विविध प्रकार के आभूषण और वस्त्र विविध प्रकार के द्रव्य पर्याप्त मात्रा मे केशर कस्तुरी, अष्टगध और विविध प्रकार के सुगन्धित पदार्थ एकत्र करे। बिल्व पत्र-फुले तथा फल इ० विविध प्रकार से पंचतत्व यत्नपूर्वक धूप तथा घृतदीपक प्रयज्ञ करके लाए।।१८-१९।।

ततः शिष्यं समाहूय गुरु पूजालये उदय।
भक्ताभिः साधकै सार्द्धं पूजनं च समाचरेत्।।२०।।

विधियुक्तं भक्त्युक्त चेतसा।
पूजां समाप्य गोरक्षस्तु स्तवैस्तु प्रणमेन च।।२१।।

भावार्थः- तब हे उदयनाथ पार्वती-सद्गुरुदेव शिष्य को (शुद्ध) पूजन स्थान में लाएं और (नाथ) भक्त तथा साधकों के साथ पूजन करे। अध्याय में बताई विधि से भक्तिपूर्वक गुरु गोरक्षनाथजी की पूजा समाप्त करे और आनन्द के साथ स्तुतियों द्वारा नमस्कार करे।।२०-२१।।

ततो हि शिव शक्तिं गन्ध-माल्यानि सुशोभितिम्।
आसनं वस्त्रं -भूषाश्च प्रत्येकं योगेश्वरि।।२२।।
ततः शंखघंटिकादि-वाद्यश्च पश्चात् मंगलमाचरेत्।
घट स्थापनं पूर्वक क्रमात तंत्रं श्रृणुप।।२३।।

भावार्थः- तदनन्तर हे योगेश्वरी शिव (आदिनाथजी) शक्ति (उदयनाथ योगिणी) को गन्ध पुष्प मालादि से सुशोभित करे। प्रत्येक को आसन वस्त्र और आभूषण प्रदान करे। तब शंखादि वाद्य बजाते हुये, मंगलचरण का गान करते हुए 'घट' की स्थापना करे। हे उदयनाथ उसकी विधि सुनो।।२२-२३।।

प्राण-बीजेन सम्प्रोक्ष्य वाग्भवनैव शोधयेत्।
शक्तया कलश मारोप्य मायया पूरयेज्जलैः।।२४।।
दक्षिणापञ्चरत्नानि स्नानं च विन्यसेत तंत्र यत्नतः।
आवाहयेच्य तीर्थानि मन्त्रेणाने नं देशिकः।।२५।।

भावार्थः- प्राण बीज (ॐ सोंह) से 'घट' का प्रोक्षण

कर वाग्भव (ऐं) से उसे शुद्ध करे। शक्ति (सौः) से कलश को स्थापित कर माया (ह्रीं) द्वारा उसे जल से भरे। उसमें यत्न पूर्वक दक्षिणा (पैसे) तथा (या) पाँच रत्न (मोती, मुँगा, इ०) डाले और निम्न मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे।।२४-२५।।

ॐगंगाद्या सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च।
सर्वे समुद्राः सरिताः सरांसि जलदा नदाः।।२६।।
ह्रदा प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्ग पाताल भू-गताः।
सर्वाणि तीर्थानि पुण्यानि, घटे कुवन्तु सन्निधिम्।।२७।।

भावार्थः- गंगा आदि सभी नदियाँ और समुद्र तथा सरोवर सभी सागर एवं धाराएं तालाब नद और जलाशय पवित्र झरने आदि जो समस्त पवित्र तीर्थ स्वर्ग पाताल और पृथ्वी में है वे सब इस ''घट'' में प्रविष्ट हो जाये।।२६-२७।।

लक्ष्मी बीजेन मंत्रेण पल्लवं प्रतिपादयेत।
कूर्चेन नारिकेलं दान स्याद् गन्धं वस्त्रं ह्रदात्मना।।२८।।
वधू बीजं सिन्दुर पुष्प दद्यात्तु कामतः च।
मूलेन बिल्वपत्रं प्रणवै कुर्यादभ्युक्षणं ततः।।२९।।
हूँ फट स्वाहेति अस्त्रठव्दय कुरु दर्भेश्च मार्जनम।
ततः स्मरेत् गोरक्षं च तत्र तु घटं पूजयेत।।३०।।
स्व-तन्त्रोक्त-विधानेन प्रार्थयेदमुना बुधः।
घटोपरि स्थापयेद्धस्तं गुरु शिष्यौ च प्रार्थयेत्।।३१।।

भावार्थः- लक्ष्मी वीज (श्रीं) से घट के ऊपर अभिमंत्रित पल्लव रखे। कूर्च (हूँ) से फल (नारियल पाणीवाला) से फल दे और हृद (नमः) से गन्ध एवं वस्त्र प्रदान करे। वधू वीज (स्त्री) से सिन्दुर और कामवीज (क्लीं) से पुष्प चढ़ाए। मूल मंत्र का उच्चारण करते हुये विल्वपत्र चढ़ाकर प्रणव (ॐ) से घट का अभ्युक्षण करे 'अस्त्र ठंद्वय' (हूँ फट् स्वाहा) से कुशो द्वारा घट का मार्जन करे। तब घट में गुरु गोरक्षनाथजी का स्मरण करके उसका पूजन करे। इसके बाद उस घट के ऊपर अपने तन्त्रोक्त विधान से हाथ रखकर गुरुदेव एव शिष्य निम्न मंत्र द्वारा घट से प्रार्थना करे।।२८-२९-३०-३१।।

ॐ उत्तिष्ठ नाथ-कलश। देवताऽभीष्ट-दायकम्।
सर्व तीर्थाम्बु सम्पूर्ण पूरयास्माकं मनोरथम्।।३२।।

भावार्थ- अर्थात समस्त तीर्थो के जल से पूर्ण एवं देवता के अभीष्ठ फल को देने वाले हे! श्रीनाथकलश उठो और हमारे मनोरथ को पूर्ण करो।।३२।।

अभिषिच्चेत् गुरुं शिष्यः मन्त्रैश्व योगिनि।
पल्लवैश्च विल्वपत्रेश्च नति मेव गोरक्ष्यमेव च।।३३।।
मड़लैनिखिलै द्रव्यै साधकैः शक्तिभिः सह।
आनन्दै परमेशानि भक्तानां हितकारिणी।।३४।।

भावार्थः- हे योगिनी परमानन्दपूर्वक गुरुदेव एव शिष्य निम्नोक्त मन्त्रों का उच्चारण करते हुये विल्वपत्र द्वारा प्रथम गुरु गोरक्षनाथजी का (अर्थात श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र-या-गोरक्षनाथजी की मूर्ति-या-चरणपादुका-इ०)

का अभिषेक करे अन्त में उपस्थित सभी साधको और शक्तियों सहित समस्त मण्डल पर जल छिड़के। इससे सभी भक्तो का कल्याण होता है।।३३ ३४।।

ततो अभिषेके न मन्त्रेण पठने विनियोगेन च।
ॐ दक्षमूर्ति ऋषिरनुष्टुप् छन्दः नाथ शक्ति देवता सर्व संकल्पं सिद्धर्थे विनियोगः।।३५।।

भावार्थः- अतः निम्न अभिषेक मन्त्रों का विनियोग का पठन (पाठ) करे। जो दक्षिण मूर्ति ऋषिरनुष्टुप छन्द नाथ शक्ति देवता सर्व संकल्प सिद्ध करे। इती विनियोगाः।।३५।।

।।अभिषेक-मन्त्राः।।

(अभिषेक के लिए मन्त्र)

ॐ योग योगेश्वराय अलख निरंजनाय।
हृदयस्थित गोंडनाथ दिव्य शक्ति समन्वितः।।३६।।
'अ' कार उ कार म कारो मायानाथो महातपः।
एकारस्त्वेक ऐ कार एक मूर्ति त्रिलोचन।।३७।।
रक्षतु तु गोरक्ष मन्त्र शक्ति स्वरूपणम्।
भक्ति भावेन मंत्रेण एत्रौ त्वामभिषिंच्च नमम्।।
पूर्ण रूपं स्वरूपं चं पूरयास्मन्मनोरथम्।।३८।।

भावार्थः- हे योगी योगीश्वर अलख निरंजन जो हृदय में स्थित गों (गोरक्ष) नाथजी दिव्य शक्तिओं से युक्त अकार ऊकार मकार त्रिगुणों से रक्षक अमर माया पती महा तपस्वी रूप विष्णु, एक ही ब्रह्म रूप महेश्वर एक

मूर्ति त्रिलोचन शिव स्वरूप मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो और गोरक्षनाथजी यह भक्ति भाव मन्त्र से आपका जलाभिषेक सिन्चन करता हूँ। अतः सर्व स्वरूपों से सम्पूर्ण हमारे मनोरथ पूर्ण करो।।३६-३७-३८।।

ॐ दिगम्बराय धीरो अवधूताय ब्रह्मचारिणे।
योगी नागहारी नागरूपो नागधारिणः।।३९।।
भूतनाथो विपन्नाथो संकट दुष्टमर्दनम्।
भैरवो भैरवाकारो भय हर्ता भवापहाः।।४०।।
रक्षा कुरु मे गोरक्ष मन्त्र शक्ति स्वरूपिणम्।
भक्त्या भावनेन मन्त्रेण रक्षत्वंमभिषिश्चनम्।
सर्वस्वरूपो सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।४१।।

भावार्थः- दिगम्वर धैर्यशाली अवधूत ब्रह्मचारी योग के प्रभाव से गुप्त हाल जानने वाले सर्पो को परास्त करने वाले नागरूपधारी, नागों को धारण करने वाले भूतों के नाथ, विपत्तिओ का नाश करने वाले, संकटों के हरण करने वाले: दुष्टो का मर्दन करने वाले, भैरवनाथ भैरवोकार भय का हरण करने वाले ओर संसार का भय दूर करने वाले हे गोरक्षनाथजी इन मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो। भक्ति भाव मन्त्र से यह तुम्हारा जलाभिषेक सिन्चन करता हूँ। अतः सर्व स्वरूपों से सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करो।।३९-४०-४१।।

ॐ गुरु प्रियं शिष्य प्रियं भक्त प्रियं गुरुरूपी।
'ऋ' करो मन्त्र रूपी तंत्र कारो ऋ सुतमर्दनः।।४२।।

हं कारो यं कारो रं कारो वं करो लं कारो च।
सृष्टि कर्तृभर्तृश्च जगत प्रलय कारकः।।४३।।
रक्षं कुरु तु गोरक्षं मन्त्र शक्ति रूपिनम्।
भक्ति भावेन मन्त्रेन एते त्वामभिषिच्यन्तुम।।
सर्व स्वरूपं सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।४४।।

भावार्थः-ॐ सतगुरु के प्रिय, शिष्यप्रिय, भक्तप्रिय गुरु स्वरूपी, आप गायत्री स्वरुप मन्त्र रूपी तन्त्र स्वरूपी असुरो के नाश करने वाले, आकाश (हं) रूपी वायु (यं) रूपी तेज (रं) रूपी जल (वं) रूपी धरती (लं) रूपी और सृष्टि के कर्ता, पालक जगत के प्रलय करने वाले हे गोरक्षनाथजी इन मन्त्र शक्ति रवरूप से हमारी रक्षा करो। भक्ति भाव मन्त्र से यह तुम्हारा जल सिन्चनाभिषेक करना हूँ। अतः सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करो।।४२-४३-४४।।

ॐ श्मशान भैरव नाथ कालं तथा जटेश्वरः।
परापरा गोरक्षं अस्त्र-शस्त्र च धारिणम्।।४५।।
शाबरं सिद्धिश्च कालंच शक्ति दिव्य ब्रह्मास्त्र तथा।
नित्याऽनित्य क्षेपणं च गोरक्ष तू रुद्र रूपिणम्।।४६।।
भक्ति भावेन मन्त्रेन एते त्वामभिषिच्चनम्।
सर्व स्वरूपम सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।४७।।

भावार्थः- ॐ हे जटेश्वर श्मशानी भैरव, कालरवरूपी तथा परा अपरा गोरक्षनाथजी अस्त्र शरत्र धारण किये हुये. शावर सिद्ध काल शक्ति तथा दिव्यास्त्र ब्रह्मास्त्र नित्या-नित्य गोरक्षनाथजी आप रुद्र रूप से मारण

करते हो अतः हे गोरक्षनाथजी आप ये मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो। भक्ति भाव मन्त्र से यह आपका जल सिन्चन अभिषेक करता हूँ। अतः सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करो।।४५-४६-४७।।

ॐ घोराघोर रूपेण, उग्र-भद्र नाथस्थतः।
ग्रों ग्रों गोरक्षं मारणोच्चाटदिकम्।।४८।।
सत्त्वरजतमश्चैव त्रिकालेष्वपराजितः।
स्वर्ग मृत्युं पातालं च त्वं हि सर्वरक्षकम्।।४९।।
रक्षा कुरु में गोरक्षः मन्त्र शक्ति स्वरूपिणम्।
भक्ति भावेन मन्त्रेण स्त्वामभिषिंच्चनम।।
सर्व स्वरूपम् सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।५०।।

भावार्थः- हे ग्रों ग्रों गोरक्षनाथजी आप अत्यंत उग्र घोर अघोर तथा भद्र नाथ रूप में मारण उच्चाटानादि क्षण भर में कर देते है और राजस सात्विक एवं तामसि तीनों गुणों से त्रिकाल ज्ञानी आप अ-पराजित हो तथा हे गोरक्षनाथजी आप स्वर्ग मृत्यु पाताल (तीन लोक के) सर्वांसर्व रक्षा करने वाले हो। अतः हे गोरक्षनाथजी आप यह मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो! भक्ति भाव मन्त्र से यह आपका जलाभिषेक सिंचन करता हूँ अतः सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।४८-४९-५०।।

ॐ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र यन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिका।।५१।।

सहजा कुलजा माला डांकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।।५१।।
ग्रह भूत पिशाचश्च यक्ष गर्धव राक्षसाः।
ब्रह्म राक्षसः वेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः।।५३।।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य तुभ्यम् हृदि संस्थिते।
या रक्ष कुरु तु गोरक्ष मन्त्र शक्ति स्वरूपिणम्।।५४।।
भक्ति भावेन मन्त्रेन एते त्वामभिषिच्चनम्।
सर्वारिष्ट् विल्पवा च पूरयास्मन्मनोरथम्।।५५।।

भावार्थः- इस पृथ्वी पर जारणमारण आदि जितने अभिचारक प्रयोग होते है। इस प्रकार के जितने ही तंत्र मंत्र होते हैं। वे ही नहीं पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता, आकाशचारी देव विशेष जल के सम्बन्ध से प्रगट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले देवता कुलदेवता, मालायें डाकिनी शाकिनी अन्तरिक्ष में विचरने वाले अत्यन्त वलशाली भयानक डाकिनियाँ ग्रह भूत पिशाश्च यक्ष गन्धर्व राक्षस ब्रह्म राक्षस वेताल कूष्माण्डा और भैरव आदि अनिष्ट कारक देवता भी आपको हृदय में धारण किये हुये रहने पर उस जीव को देखकर नष्ट हो जाते है। वही आप गोरक्षनाथजी अपने मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो। भक्ति भाव मन्त्र से यह आपका जलाभिषेक रिंचन करता हूँ अतः हमारे सर्व अरिष्टों का नाश करके हमारे सर्व मनोरथ पूर्ण करो।।५१-५२-५३-५४-५५।।

ॐ जती सती तपस्विनी ध्यानी ज्ञानी च योगेश्वर।
महाविद्या नवदुर्गा च स्वशक्त्या सहचारिणी।।५६।।
ऋद्धि सिद्धि महामाया नाथ जोगणिस्तथा।
शक्तिपरमगुह्येन रक्षं ते भक्तया प्रियम्।।५७।।
मंत्र शक्त्या तु भक्तान सदारक्षां कुरु।
भक्ति भावेन मन्त्रेन एते स्त्वामभिषिच्चेनम।।
सर्व स्वरूपम् सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।५८।।

भावार्थः- जती-सती-तपस्वी तथा ध्यानी ज्ञानी योगेश्वर, दश महाविद्या, नव दुर्गा यह सब अपने शक्ति द्वारा सहयोगी बने रहते है तथा ऋद्धि-सिद्धियाँ नाथ सिद्ध चौरासठ जोगन महामाया आदि के गुह्यतम शक्ति के (सहयोग) रूप से भक्तों पर (कृपा) दया करके रक्षण करते हो। इन मन्त्र शक्ति रूप से हे गोरक्षनाथजी हमारी रक्षा करो, भक्ति भाव से आपका जलाभिषेक सिन्चन करता हूँ । अतः सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।५६-५७-५८।।

ॐ नागासना रुढ़ा नागास्त्र च शक्तिसहः।
वाममार्गे कापालिकाः त्रिलोके च वन्दितम्।।५९।।
दण्डभैरवाः त्रिशूलधाराय चमेटनं विभूतिय च।
शक्ति क्षेपणं शस्त्रं च तस्मात शत्रु भयभवः।।६०।।
अतोऽहं स्त्रोमि रक्ष भक्तावत्सलम्।
भक्ति भावेन मन्त्रेन एते त्वामभिषिच्चनम।
सर्वारिष्ट विल्पवा य पूरयास्मन्मनोरथम्।।६१।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप नागासन पर तथा सर्पो पर आरूढ़ नागास्त्र के शक्ति सह वामपंथ के कापालिक हो! आपको तीन लोक वन्दन करते है। भैरव दंड त्रिशूल चिमटा तथा विभूति धारण कर इन शस्त्र द्वारा शक्ति को शत्रु ऊपर (फेकते) छोड़ने हो तो शत्रु भयभित हो जाते है। अतः हे भक्तवत्सल गोरक्षनाथजी आपको प्रार्थना करता हूँ। कि हमारी रक्षा करे। भक्ति भाव से मंत्र से यह आपका जलसिन्चन अभिषेक करता हूँ। हमारे सर्व आरिष्ट को नष्ट करो और हमारे मनोरथ को पूर्ण करो।।५९-६०-६१।।

ॐ चक्रेश्वर चक्रनाथ दिव्यास्त्रं च रुद्रनाथम्।
ब्रह्मास्त्रं पर्जन्य वातास्त्र च सुशोभिताः।।६२।।
रामशरेण बंकरुपेण सुरासुरादर्पमर्दनम्।
चण्ड प्रचण्डा घोराऽ च सर्व विघ्ननाशकम्।।६३।।
अतः रक्षा करुमे नाथं मन्त्र शक्ति रूपिनम्।
भक्ति भावेन मन्त्रेन एते त्वामभिषिच्यनम्।
सर्व स्वरूपं सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।६४।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप चक्रनाथजी के रूप में चक्रों के ईश्वर हो रुद्रनाथजी के रूप में दिव्य अस्त्र, ब्रह्मास्त्र पर्जन्यास्त्र वातास्त्रों से सुशोभित है। आप बिरबंकनाथजी के रूप में राम-बान द्वारा सूर-असूरों का मर्दन करते हो, चण्ड प्रचण्ड तथा घोर अघोर रुप में सर्व संकटों का नाश करते हो अतः हमारी मन्त्र शक्ति रूप से रक्षा करो और भक्ति भाव मन्त्र से

आपका यह जलसिचन अभिषेक करते है। अतः आप सर्व स्वरूपों से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।६२-६३-६४।।

ॐ गोरक्षं च बालयोगी तथा योगेश्वरः शिवः।
योगमाया महामाया-दिव्य योगी तथा परा।।६५।।
शिवरूपाय नाथाय मृत्युंजयी परं शून्योऽसि।
रक्षां कुरुमें गोरक्ष! मन्त्र शक्तिं स्वरूणिम्।।६६।।
यो भक्ति भावेन मन्त्रेण एतेस्त्वामभिषिच्चनम्।
सर्व स्वरूपम् सम्पूर्ण पूरया स्मन्मनोरथम्।।६७।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप बालयोगी और योग के ईश्वर शिव हो तथा योगमाया महामाया के परे आप दिव्य योगी है। आप प्रत्यक्ष शिव के स्वरूपी मृत्युंजयी परम शून्य हो। इन मन्त्र शक्तिओ से हे गोरक्षनाथजी हमारी रक्षा करो। जो भक्ति भावनाओं से मन्त्रों से आपका जलाभिषेक सिंचन करते है। अतः आप सर्व स्वरूपों से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करो।।६५-६६-६७।।

ॐसंवत्सराश्चायनौ च मास पक्षिकौ दिनानि च
तिथयश्चाभिपिन्च्चन्तु प्रसन्नोभवसर्वथा।।६८।।

भावार्थः- सवंत्सर मास पक्ष और दिन तिथि अनुसार जो जलाभिषेक सिंचन करते है अतः आप प्रसन्न होकर हमारा कल्याण करो।।६८।।

ॐ रविः सोमः कुंजः सौम्यो, गुरुः शुक्रः शनैश्चराः।
राहुः केतुश्च सततमभिषिच्चन्तु ते ग्रहाः।।६९।।

एताः सर्वरूपं सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।७०।।

भावार्थः-सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिचर, राहु एवं केतु इन नवग्रहों से सतत् जलाभिषेक सिंचन करता हूँ। इन सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।६९-७०।।

ॐ नक्षत्रं करणं योगोऽमृतं सिद्धिस्ततः परम्।
दग्धानि सर्वाणि पापानी भद्राणि योगंवार क्षणानिच।।७१।।
वार वेला, काल वेला दण्ड-राश्यादयस्तथा।
एतान् रक्षं तु गोरक्ष मन्त्र शक्तिं स्वरूपिणम्।।७२।।
यो भक्ति भावेन मन्त्रेण एते स्त्वामभिषिच्चनम्।
सर्व स्वरूपम् सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।७३।।

भावार्थः- नक्षत्र, करण, अमृतसिद्धियोग तथा परम सिद्धि योग, क्षण में पापों को जलाने वाले भद्रा योग वार तथा समय काल दण्डित राश्यांगणों दया से इन मन्त्र शक्तियों से हे गोरक्षनाथजी आप हमारी रक्षा करो। जो भक्ति भाव मन्त्र से आपका जलाभिषेक सिंचन करते है। अतः आप इन सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।७१-७२-७३।।

ॐ असितागों रूरूश्चण्डः क्रुधोन्मत्त संज्ञकाः।
कपाली भीषणाख्यश्च संहारोऽष्टौ च भैरवाः।।७४।।
एतान् रक्ष कुरु गोरक्ष मन्त्र शक्ति स्वरूपिणम्।

यो भक्ति भावेन सतत मंत्रेन अभिषिच्चनम।
एताः सर्वरूपेन सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।७५।।

भावार्थः- *ॐ असितांग भैरव, रुरुश्चण्ड भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत भैरव, संज्ञक भैरव तथा कपालि भैरव, भीषण भैरव, संहार भैरव यह अष्ट भैरवों से इन मन्त्र शक्तियों रूप से हे गोरक्षनाथजी आप हमारी रक्षा करो जो कि भक्ति भाव मन्त्र से सतत जल सिंचन अभिषेक करते है। इन सर्व स्वरूपों से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।७४-७५।।*

ॐ डाकिनी-शक्तिकाश्चैव राकिनी शक्तिकास्तथा
लाकिनी-शक्तिश्चान्ये, काकिनी-शक्तिकाः परे।।७६।।
शाकिनी शक्तिका भूयो हाकिनी शक्तिस्तथा।
ततश्च यक्षिणी शक्ति देवी-शक्ति स्ततः परम्।।७७।।
मातृणां च तथा शक्त्योर्ध्व मुख्या शक्तिश्चवै।
अधोमुख्या शक्तिश्चैव उन्मुख्याश्च शक्तिः परे।।७८।।
एतान् रक्ष तु गोरक्षं शक्ति मन्त्रस्य रूपिणम्।
यो भक्ति भावेन मन्त्रेन एते स्त्वामभिषिच्चन्त।।
शक्ति स्वरूपम् सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।७९।।

भावार्थः- *ॐ डाकिनी शक्ति एवं राकिनी शक्ति तथा लाकिनी शक्ति तथा अन्य पराशक्ति काकिनी फिर शाकिनी शक्ति तथा हाकिनी शक्ति ततपश्चात यक्षिणी शक्ति तथा परदेवी शक्ति और सप्त मातृकादि शक्तियाँ*

तथा वास्तव में यह उर्ध्वमुखी शक्तियाँ एवं अधोमुखी शक्तियाँ तथा उन्मुखी शक्ति के परे इन शक्तियाँ मंत्रों के रूप में हे गोरक्षनाथजी हमारी रक्षा करो। जो कि भक्ति भाव मन्त्रों से आपका जलसिंचन अभिषेक करते है। अतः आप सम्पूर्ण शक्ति स्वरूप से हमारा मनोरथ पूर्ण करो।।७६-७७-७८-७९।।

ॐ ब्रह्म विष्णुश्च रुद्रश्चीश्वरा सदाशिवः।
एतान् रक्ष तु गोरक्ष त्रिदेवादी मन्त्र रूपिणम्।।८०।।
यो पठेत् भक्ति भावेन करोति त्वाम्भिषिच्चनम्।
शक्ति स्वरूपम् सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।८१।।

भावार्थः-ॐ ब्रह्माजी, विष्णु जी एवं रुद्रदेवादि सदाशिव ईश्वर इन त्रिदेवादी मन्त्र रूप से हे गोरक्षनाथजी आप हमारी रक्षा करो। जो कि भक्ति भाव मन्त्र से हम आपका जलाभिषेक सिंचन करते है। अतः इन शक्ति स्वरूप से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।८०-८१।।

ॐ प्रकृति पुरुषश्चैव मनश्चित्तैव तथा परे।
आत्माऽन्तरात्मा च परम-ज्ञानात्मना प्रकीर्तिताः।।८२।।
आत्मनश्च गुणश्चैव स्थूल-सूक्ष्माश्च येऽपरे।
एतान् रक्षं तु गोरक्ष आत्म शक्तिः च रूपिणम्।।८३।।
य भक्ति भावेन मन्त्रेण एते त्वामभिषिच्चनम्।
ज्ञानात्मरूपेण सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम्।।८४।।

भावार्थः- प्रकृति एवं पुरुष तथा मनः चित्त के परे। जो आत्मा एवं गुण तथा स्थूल सूक्ष्म के भी परे जो

आत्माअन्तरात्मा एवं परम आत्मज्ञान प्रतिपादित हुए है। इन आत्मशक्ति रूप में हे गोरक्षनाथजी हमारी रक्षा करो, जो की भक्ति भाव मंत्र द्वारा आपका जलाभिषेक सिंचन करते है। अतः आप सम्पूर्ण आत्मज्ञान स्वरूप द्वारा हमारा मनोरथ पूर्ण करो।।८२-८३-८४।।

ॐ कारादिनाथः शक्तिः पार्वती उदयनाथस्तथा।
सत्य ब्रह्म शक्तिं सन्तोषः विष्णुस्तथा।।८५।।
गजबेल्या गजेकन्थडनाथस्य अचलाचम्भस्तथा।
चन्द्रस्य चतुःरंगी मत्स्येन्द्रस्यकौलमायापरे।।८६।।
ततश्च गोरक्षं शक्ति शाबर शक्ति स्ततः परम्।
एता नवनाथ शक्ति च उर्ध्व मुख्या सिद्धौ परा।।८७।।
ततश्च चतुस्सीति सिद्धौ च सर्वे शाबर शक्तयः।
उक्तान्येतानि शक्तिनी गोरक्षेण उत्पादिताः।।८८।।
एतान् रक्षं तु गोरक्षं शाबर शक्ति स्वरूपिणम्।
यो अभिषिच्चन्त ते सर्वे मन्त्र भक्ति भावना।
एता सर्वरूपेण सम्पूर्ण पूरयास्मन्मनोरथम।।८९।।

भावार्थः- ॐ कार आदिनाथजी की शक्ति एवं उदयनाथ पार्वती की शक्ति तथा सत्यनाथ ब्रह्माजी की शक्ति तथा अन्य सन्तोषनाथ विष्णुजी की परम शक्ति और गजबेली गज कन्थडनाथजी की शक्ति फिर अचल अचम्भेनाथ जी की शेष शक्ति ओर सिद्ध चौरंगीनाथजी की चन्द्र स्वरूप शक्ति तथा महामाया के परे

श्री मत्स्येन्द्रनाथजी की निजा कौल शक्ति तत्पश्चात गुरु गोरक्षनाथजी की परम, अपरम्पार शावर शक्ति और इन नवनाथ सिद्धों की उर्ध्वमुखी पराशक्ति तदनन्तर चौरासी सिद्धों की सर्वतः शावर शक्ति यह सर्व शावर शक्तियाँ गुरु गोरक्षनाथजी आपके द्वारा प्रतिपादित है। इन शावर मंत्र शक्ति रूप से हे गोरक्षनाथजी आप हमारी रक्षा करो जो कि हम भक्ति भाव मन्त्रों से आपका जलसिंचन अभिषेक करते है। अतः इन सभी स्वरूपों से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।८७-८६-८७-८८-८९।।

ॐ कालाकाल भैरवाः च रक्तबालः भैरवादयः।
जलभूमिचराः क्षेत्रपालाकाश भैरवारतथा।।९०।।
भैरवाष्ट मन्त्रेण क्षिपन्ति शक्तिकोपारी।
रक्ष रक्ष तु गोरक्ष भैरवः मंत्रस्वरूपकम्।।९१।।
सिन्चामि त्वा भक्तियुक्त चेतसः।
भैरव स्वरूपेण सिद्धयन्तु मनोरथम्।।९२।।

भावार्थः- काल भैरव, अकाल भैरव, लाल भैरव, वाल भैरव, जल भैरव, थल भैरव, आकाश भैरव तथा क्षेत्रफल भैरव यह अष्ट भैरव मन्त्र से शक्ति को (दुष्टों पर) छोड़ते है। अतः हे गोरक्षनाथजी आप इन भैरव मंत्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो। जो कि हम भक्ति भावनाओं से मन्त्रों से सतत सदा सर्वदा जल सिंचन अभिषेक करते है। तव सम्पूर्ण भैरव रूप से हमारा मनोरथ को पूर्ण करो।।९०-९१-९२।।

बीजं हुँ बीजं वेदोक्त स्त्री बीजं मीन केतनम।
शक्ति बीजं रमा बीजं माया बीजं सुधाकरम्।।९३।।
चिन्तामणिं महाबीजं नारसिंह च शांकरम।
मार्तण्डं भैरवं दुर्ग बीजं श्री पुरुषोत्तमम।।९४।।
गाणपत्यं च वराहं च काली-बीज भयापहम्।
रक्ष तु गोरक्षं बीजं मंत्र शक्ति स्वरूपणम्।।९५।।
एतानि चाभिषिञ्चानि बीजमन्त्रैस्तथा।
गोरक्ष मन्त्र रूपेण पूरयास्मन्मनोरथम।।९६।।

भावार्थः- सम्पूर्ण वेदोक्त बीज, हूँ बीज स्त्री बीज तथा मीन, केतनम बीज शक्ति बीज रमा बीज, माया बीज तथा सूर्य (गायत्री) बीज चिन्तामनी बीज महाबीज नारसिंह बीज शिव शंकर बीज और मार्तण्ड बीज भारव बीज तथा नव दुर्गा दी बीज, श्री बीज, पुरुषोत्तम बीज और गणपति बीज वराह बीज काली बीज जो भयकारक है। जो कि सम्पूर्ण बीज भयकारक है। इन बीज मन्त्र शक्ति रूपसे हे गोरक्षनाथजी हमारी रक्षा करो। इस बीज मन्त्र भक्ति भाव से आपका जलसिंचन अभिषेक करते है। अतः इस बीज मन्त्र रूप से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।९३-९४-९५-९६।।

ॐ भीमो भैरवोरूपो शोणो घघरिव च ।
सिन्धुश्चैव ह्रदश्चैव तथा पाताल संभवा।।९७।।
एतानि रक्ष तु गोरक्षं मन्त्र शक्ति रूपिणा।
यो त्वामभिषिच्चति मन्त्र भक्ति भावना।।
अतः कुरु शक्ति रूपेन पूरयास्मन्मनोरथम्।।९८।।

भावार्थः- भैरव, भीम और शोणवांद घर्घर रूपवाले सर्व जल अर्थात सप्तसागर एवं सप्त पाताल तथा सभी हृदयस्थ यथा संभव हे गोरक्षनाथजी आप इन मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करो। जो कि भक्ति भाव मंत्रो से आपका जल सिंचन अभिषेक करते है। अतः आप इन शक्ति रूप से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।९७-९८।।

ॐ कार 'गों'कार 'र'कारश्च बिन्दुरूपेण गोरक्ष।
'शं' शान्ति, 'धूं' धर्मश्च सं संर्वागं गोरक्षमयं।।९९।।
'हुं' हुकारः वं विघ्ननाशाय भ्रां भ्रीं भू भैरवास्तथा।
'जूं' सं मृत्युंजयाय गं गं गोरक्षं गुरु च।।१००।।
यो रक्षं तु गोरक्ष ग्रों ग्रों मन्त्र शक्ति रूपेण च।
एता स्त्वामभिषिच्चामि भक्ति भावेन मंत्रेण च।
गोरक्ष कुरु कल्याण पूरयास्मन्मनोरथम्।।१०१।।

भावार्थः- ॐ कार, गों कार 'र' कार एवं विन्द रूपी गोरक्षनाथजी आप 'श' शान्तिमय 'धूं' धर्ममय हूँ हुकारमय वं विघ्ननाशक तथा भ्रां भ्रीं भु भैरवाः सह सं संर्वागनाथ रूप से सर्वत्रमय हो और जूं 'सं' मृत्युजय और गं गं गोरक्षनाथ जी आप सतगुरु स्वरूप हो। जो की ग्रों ग्रों गोरक्षनाथजी इन मन्त्र शक्ति रूप से हमारी रक्षा करें इस भक्ति भाव मन्त्रों से हम जलाभिषेक सिंचन करते है। अतः आप हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।९९-१००-१०१।।

ॐ जम्बु द्वीपादयः सरितः सागरा लवणादयः।
अनन्ताद्यास्तथा नागाः सर्पा ते तक्षकादयः।।१०२।।
अनन्त कोटि ब्रह्माण्डः गोरक्ष स चराचरम्।
विष्णुः शिवः लोकादिश्च सर्वार्थ तु सर्व व्यापकम्।।१०३।।
अतः रक्ष तु गोरक्ष स्वयक्तान्भुवादयः।
एते त्वामभिषिच्चन्तु भक्ति भावेन मंत्रेण च।।
यस्य पूरयास्मन्मनोरथम् ब्रह्म स्थितः रूपेण।।१०४।।

भावार्थः- जम्बु द्वीपादि सर्व द्वीपो सर्व सागर सरोवरादी। अनन्तादि (अष्टकुली) नागों तथा तक्षकादि सर्पा अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में सचराचर में स्थित गोरक्ष विष्णुलोक शिवलोकादि सर्वत्र सर्वव्यापक यही सर्वव्यापक स्थितप्रज्ञ गोरक्षनाथजी आप हमारी रक्षा करो। जो की इन भक्ति भावना मन्त्रों से हम आपका जलाभिषेक सिंचन करते है। जिनके ब्रह्म स्वरूप, अत्यंत सर्व व्यापक स्वरूप आप हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।१०२-१०३-१०४।।

ॐ निरंजनो शून्य बीजं च सुधबुध ते सूं बीजं।
कलेश्वरः षूं ष बीजंय लाल ग्वालाय लू लं स्तभने।।१०५।।
चौरंगी ह्रिं, हं बीज च आकर्षणाय स्वरूपम्।
विमलं वं वुं बीजं अध्यामन तु रूपेम।।१०६।।
सर्वांग सों सं बीजंच सद्यपत्यायं सत्यनाथेती।
क्रोध बीजं ग्रों गोपालं च गोरक्ष नाथश्च नाम।।१०७।।

क्षेत्र नाथ च क्ष्णी बीज वशित्वां क्ष्णो ते क्षोभनः।
भूचराः 'भुं' बीजंश्च दिव्य डांकिनी सिद्धौ च रूपम्।।१०८।।
द्वादशैता नि नामानि च जपत्वा बीज मंत्रेणयः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्व सिद्धि करं परम।।१०९ ।।
रक्ष रक्ष तु गोरक्ष सर्वनामे बीज मंत्रेन।
एतानि चाभिषिश्चन्ति बीज मंत्र भक्ति भावेन।
अतः मन्त्र रूपेन च पूरयास्मन्मनोरथम्।।११०।।

भावार्थः-निरंजननाथजी का शून्य बीज और सुधबुध नाथजी का 'सूं' बीज तथा कलेश्वर नाथ जी का षूं षं बीज एवं लालग्वालायनाथजी के लूं लं बीज जो स्तभन स्वरूप है। चौरंगीनाथजी का ह्रिं ह बीज मन्त्र जो आकर्षण स्वरूप है। विमलनाथजी का 'वं' 'वुं' बीज मंत्र जो की अध्यामन कर्म स्वरूप है और संवागिनाथजी का सं सों बीज मन्त्र एवं सत्यनाथ नाम का सं बीजमंत्र जो सद्यपत्याय स्वरूप है तथा क्रोधबीज 'ग्रों' गोपालनाथजी के जो गुरु गोरक्षनाथजी का ही नाम है और क्षेत्रनाथजी नाम से 'क्ष्णो' बीज मंत्र जो वशीकरण स्वरूप है तथा 'क्ष्णो' बीज क्षोभन स्वरूपी है तथा भूचर नाथजी का 'भुं' बीज मन्त्र दिव्य डाकिनी सिद्धि प्रद है। इस प्रकार श्री गुरु गोरक्षनाथजी के यह बारह नामों के बीज मंत्र से जो जप ध्यान करेगा उसे किसी भी संकट का भय नहीं होगा और उसे नाथों की सिद्धियाँ प्राप्त होगी। अतः हे गोरक्षनाथजी आप अपने इन सर्व (बारह नाम) नाम बीज मंत्र से हमारी रक्षा करो। अतः इन बीज मंत्रों को

भाव भावेत से आपका जल सिंचन अभिषेक कर रहे है। अतः इन तीन मन्त्रो से हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।१०७ १०८-१०९ ११० १११ ११०।।

ॐ गंगा गोदावरी रेवा यमुना च सरस्वती।
आत्रेयी भारती चैव सरयु गण्डकी तथा।।१११।।
कर तोया चन्द्र भागा च श्वेत गंगा कौशिकी।
भोग-वती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा।।११२।।
नदीनां स्वरूपेण गोरक्षास्मान्सर्वदा।
एता स्त्वामभिषिचन्ति भक्त्या मंत्रेण च।
नदीभिरेव मंत्रेण पूरयास्मन्मनोरथम्।।११३।।

भावार्थः- ॐ गंगा, गोदावरी, रेवा, यमुना और सरस्वती एवं आत्रेय, भारती सरयु गण्डकि तथा चन्द्र भागा श्वेत गंगा और कौशिकी, कर तोया और पाताल लोक की भोगवती तथा स्वर्ग लोक की मन्दाकिनी अतः इन सभी नदियो के रूप से हे गोरक्षनाथजी हमारी रक्षा करो इन (नदियो के नाम) मन्त्र भावित भाव से आपका यह जल सिंचन अभिषेक करते है। अतः उक्त सभी नादियो के नाम मन्त्र द्वारा हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।१११-११२-११३।।

ॐ यानि कानि च तीर्थान्यस्मार्भिपरिक्रमाणि च।
तानि त्वामभिषिचन्ति भक्तयाभिमंत्रेण च।
परिक्रमा पूण्यरूपेण पूरयास्मन्मनोरथ।।११४।।

भावार्थः- जो-जो तीर्थ स्वरूप पुण्य स्वरूप है हम परिक्रमा करते है वही परिक्रमा भावित भाव से आपक

जलसिंचन अभिषेक करते है। अतः परिक्रमा पुण्य रूप से हमारा सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।११४।।

ॐ सदा रक्षतु गोरक्ष मंत्रैरभिषिञ्चितः
यो भक्तया मन्त्रेणैव त्वाममिषिञ्चति।
त्वामेव स्वरूपेण पूरयोस्मन्मनोरथम्।।११५।।

भावार्थः- इस प्रकार हे गोरक्षनाथजी आप इस सम्पूर्ण अभिषिक्त मंत्रों से हमारी रक्षा करो। जो की भक्ति भाव मन्त्रों से आपका हम जल सिंचन अभिषेक करते है। अतः आप स्व स्वरूप (अर्थात स्वयंम) हमारे सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो।।११५।।

सूचना-ऊपर लिखे मन्त्रो का उच्चारण करते समय जहां जहा, 'अभिषिञ्चन्तु' शब्द आये उसे कहते हुये विल्व पत्र द्वारा घटस्थ (कलशमेके) जल से श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र (तंत्रम्) या गुरु गोरक्ष नाथजी के (मूर्ति) शिश पर या चरण पादुका पर या श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष तंत्र पर अभिषेक करना चाहिये तथा विल्व पत्र कि उपलब्धी न होने पर दक्षिण मुख शंख द्वारा या शिंगी द्वारा भी अभिषेक कर्म कर सकते हो।

अतः अभिषेक कर्म के पूर्ण होने पर चंदन-अष्टगंध अक्षद तथा पुष्प हाथ में लेकर निम्न प्रार्थना वचनो (बोले) का उच्चारण करे।

''प्रार्थना''

गोरक्षनाथाय भद्राय शिवस्वरूपाय वेद से।
शिव गोरक्षनाथाय शिष्य मत्स्येन्द्रायच नमः।।११६।।

प्राणतः गोरक्ष रौद्र घोराः रूपिणम्।
विघ्नहरं सदा नौमि पूरयास्मन्मनोरथम्।।११७।।
नमस्ते कृद्धाग्नि रूपाय नाथ रूपाय ते नमः।
भक्त प्रियाय नाथाय गोरक्ष नमोऽस्तुते।।११८।।

भावार्थः- हे कल्याणमयी गुरु गोरक्षनाथजी आप शिव स्वरूप से जाने जाते हो, ऐसे मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्य शिव (स्वरूप) गोरक्षनाथजी को मैं नमस्कार करता हूँ। हे रौद्र (रुद्र) रूपी हे घोर रूपी गोरक्षनाथजी आपको मैं प्रणाम करता हूँ। जो की सदा सर्वदा संकटों को, विघ्न बाधाओं को हरण करके हमारी सम्पूर्ण मनोरथ को पूर्ण करो। हे क्रोध अग्नि स्वरूप को मैं नमन करता हूँ आप के नाथ रूप को नमस्कार करता हूँ। आप अपने भक्तों के प्रिय गुरु गोरक्षनाथ जी आपको हम नमस्कार करते है।।११६-११७-११८।।

नश्यन्ति प्रेत-कुष्माण्डा राक्षसा दानवाश्च ये।
पिशाचा गुह्यका भूता रक्ष कुरु तु गोरक्ष।।११९।।
अलक्ष्मी काल-कर्णी च क्षणं नश्यन्ति महान्ति च।
विल्पवा क्षण मात्रेन रक्षतु गोरक्षं।।१२०।।
रोगाः शोकाश्च द्रारिद्रयं दौर्बल्यं चित्तं विक्रिया।
नष्टाति सर्वपापानि त्वामहं शरणागतम्।।१२१।।

भावार्थः- हे गुरु गोरक्षनाथजी प्रेत-कुष्माण्डा राक्षसो दानव एवं पिशाच गुप्तभूत जो नष्ट करके हमारी रक्षा करे। हे जती गोरक्षनाथजी आप अलक्ष्मी (गरीबी)

कालकर्णी और बड़े-बड़े महापापों को क्षण मात्र में नष्ट करके हमारी रक्षा करो। हे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी आप हमारे रोग विमारियाँ शोक दुः ख दारिद्रता दुर्बल्य चित्तों के विकार नष्ट करके हमारी रक्षा करो। हे सर्व पूज्य गोरक्षनाथजी आपके हम शरण में है।।११९-१२०-१२१।।

लोकानुरागस्त्यागश्च दौर्भाग्यमपि दुर्यशः।
नश्यन्तु सर्वगतम् रक्ष कुरु तु गोरक्ष।।१२२।।
तेजोऽतेजो बलहीनश्च मन्दता तथैव च।
दौर्भगं सौभंग चैव रागोऽरागो जयाजयो रक्षतु च सर्वदा।।१२३।।

भावार्थः-हे सर्वत्र व्यापि गुरु गोरक्षनाथजी आप लोक अनुराग-त्याग-तथा दुर्भाग्य, दुर्यश जय-पराजय, को नष्ट करके हमारी रक्षा करो और तेज हीनता वल हीनता वुद्धि हीनता को नष्ट करके हे गोरक्षनाथजी आप हमारी चल अचल में रक्षा करो।।१२२-१२३।।

विषापमृत्युं-रोगं च डाकिन्यादि भयं तथा।
घोराभिचारा-क्रूचरा ग्रहा नागा स्तथा परे।।१२४।।
नश्यन्ति काली बीजेन रक्ष रक्षय तु गोरक्षम्।
विल्पवा विपदः सर्वाः सम्पदः सन्तु सुस्थिरः।
अभिषेकेण शक्तिन पर्णा सन्त मनोरथाः।।१२५।।
रक्ष रक्ष तु गोरक्ष ग्रों ग्रों हूँ हूँ रूपिणम।।
नमो आदेश नमो आदेश नमो आदेश नमः।।१२६।।

भावार्थः-विष-विषावत (जहरीले पदार्थ तथा प्राणीओं से)

आने वाली अपमृत्यु (घात अपघात अप्राकृतिक मृत्यु आदि से) रोग-(विभिन्न विमारियाँ) शाकिनी डाकिनीयाँ आदि के भय से तथा घोर-अघोर अभिचारक प्रयोग क्रोध युक्त अनिष्ट ग्रहों से नाग सर्पादंश के परे इत्यादि को काली बीज मंत्रों से नष्ट करके हे गुरु गोरक्षनाथजी हमारी वार-वार रक्षा करो। अनेक विपदाये (कष्ट संकटो) को सर्व नष्ट करके सर्वत्र सम्पदाओं से श्रेष्ठ पुरुषों सन्तो को अत्यन्त उत्तम प्रकारे स्थिर (स्थापत्य) करो और इन अभिषेक के शक्ति से सर्व सन्त उत्तम नर नारियों का मनोरथ को पूर्ण करो। हे ग्रों ग्रों हूँ हूँ गुरु गोरक्षनाथजी आप हमारी वार-वार रक्षा करो, आपको वार-वार त्रिवार आदेश नमस्कार करता हूँ।।१२४-१२५-१२६।।

सूचना-पर्णा सन्त मनोरथाः कहने के साथ ही हाथ में लिए हुए अष्टगन्ध अक्षदा पुष्प को गुरु गोरक्षनाथजी के (अर्थात् मूर्ति के चरण पादुका पर या श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र (तन्त्रम्) के ऊपर) शीश के ऊपर या चरणों के ऊपर छोड़कर ''नमो आदेश..... नमो नमः कहकर सहृदय तीन वार नमस्कार करो (नाथ साधु सन्तों ने तीन वार नादि बजाकर आदेश करना चाहिए) और गुरु गोरक्षनाथजी से आशीर्वाद के लिये प्रार्थना करनी चाहिए।

।।उत्तरार्ध।।

श्री उदयनाथ उवाच

श्रुतं रहस्यं श्रीनाथ चाभिषेचनं कर्मणः।
साधनं वदं तत्वं च साधकानां सुखावहम्।।१२७।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ पार्वती ने कहा हे आदिनाथजी मैंने अभिषेक कर्म का रहस्य सुन लिया अतः साधक के लिए सुखदायक पञ्चतत्व साधन (साधना) बताइए।।१२७।।

श्री आदिनाथ उवाच

श्रृणु तत्वं योग उदय साधनं तु सुखावहम्।
यद् किञ्चिद गदितं पूर्व विस्मृत तद वदाम्यहम्।।१२८।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे उदयनाथ पार्वती-साधक के लिये सुखदायक पंचतत्व योग के साधना को सुनो जो कुछ मैंने पहले बताया था। वह विस्मृत हो गया उसी को फिर से बताता हूँ।।१२८।।

अभिषेक विधिं पश्चात् काया च साधकानांम्।
प्राणायाम ततः कृर्यानित्य सात्त्विकया धिया।।१२९।।

भावार्थः- अभिषेक विधि के पश्चात् साधकों को अपनी काया (वाचा मने) शुद्धि के लिये सात्विक बुद्धि से उत्तम प्राणायाम को नित्य करे।।१२९।।

सूर्याचन्द्रम सोरनेन विधिनाभ्यास सदा तन्वतां।
शुद्धा नाडिगणा भवति यमिना मासत्रायादूर्ध्वतः।
भूयः तत्व योगधति करोतु दिव्य समाधिचः।।१३०।।

भावार्थः- सूर्य (इड़ा) नाड़ी से पूरक (भरणा) कर कुम्भक (रोकना) करके चन्द्र (पिंगला) नाड़ी से रेचक (छोड़ना) करे और पुनः चन्द्र (पिंगला) नाड़ी से पूरक कर कुम्भक करके सूर्य (इडा) नाड़ी से रेचक करे इस (प्राणायाम) विधि से सदैव अभ्यास करते हुये साधक

के सभी नाड़ीओं की शुद्धता तीन मास तक हो जाती है फिर तेजस्वी पंच तत्व योग करके दिव्य योग समाधि को करे।।१३०।।

मद्यमांसेस्तथा मत्स्यैर्मुद्राभि मैथुनैरपि।
यः पंच मकारतत्वानि साधकानां साधयेत्।।१३१।।
कायेन मनसावाचा तस्मात् तत्व परो भवेत्।
ये न वै च महादिव्य सन्त मोक्ष च मुच्यन्ते।।१३२।।

भावार्थः-मद्य, मांस मीन (मत्स्य) मुद्रा और मैथुन जो पंचमकार तत्वों की योग साधना साधक ने करनी चाहिये, अतः मन वचन और शरीर से वह तत्व परायण होना चाहिए। वास्तव में जिनके द्वारा श्रेष्ट पुरूष को महादिव्य मोक्ष मुक्त हो जाते है।।१३१-१३२।।

मुद्राप्रथम तत्त्वस्या संगतेर्सदा त्यजेत्।
ब्रह्मचारी मिताहारी त्यागी योग परायणः।
मनो चित्त वृतीन्द्रयः वसेत साधका सदा।।१३३।।

भावार्थः-प्रथम तत्व मुद्रा अर्थात कुसंगति का त्याग करके ब्रह्मचारी, मितहारी (अन्न पदार्थो से सय्यामित भोजन) त्यागी तथा योग साधना में पारंगत होना चाहिए अर्थात् मन (गों) इन्द्रिय तथा मती अर्थात चित्त के वृत्तियोंको सम्पूर्णतः सय्यम अर्थात विवेक करके सय्यम करना चाहिए। (यहि मुद्रा का भावार्थ है)।।१३३।।

द्वितीयं तत्व गौमांस भक्षयेन्नित्यं साधकाः।
गोशब्द जिव्हाचतत्प्रवेशो हि तालुके।

गोमांस भक्षणं तत्तु महापातक नाशनम्।।१३४।।

भावार्थः-दूसरे प्रकार के तत्व मांस अर्थात गौ मास भक्षण है। जो साधक प्रतिदिन मांस भक्षण करता है। अव गोमांस शब्द के भावार्थ को कहते हैं। कि गों पद से (शब्दको) जिव्हा कहा जाता है। साधक तालुके समीप जा ऊर्ध्व छिद्र उसमें जो जिव्हा का प्रवेश उसको गो मास भक्षण कहते है। जो महा पातकों का नाश करने वाला है।।१३४।।

तृतीयं तत्व मद्य-पानं कुर्वन्ति नित्य साधकाः।
ऊर्ध्व जिव्हा स्थिरो भूत्वा सोमपान करोति यः।।१३५।।
चुबनं यदि लंबिकाग्रमनिशं जिव्हारसस्पदिनी।
सक्षाराकटुकाम्ल दुग्ध सदृशी मध्वाज्यतुल्यस्तथा।।१३६।।
मासार्धेन न संदेहो मृत्यु जयति योगवित।
खेचरी मुद्रा उदय मांस नामेन निरूपितम्।।१३७।।

भावार्थः-तीसरे प्रकार के तत्व मद्यपान है जो साधक नित्य करता है। तालुका के उपर के छिद्र के उन्मुख है, जिव्हा जिसकी ऐसा जो साधक वह सोमपान (अमृतपान) करता है। अर्थात् ऊर्ध्व छिद्र में से गिरते हुये चंद्रामृतको पीता है। यदि जिव्हा तालुके ऊपर छिद्र का बारंबार चुंबन (स्पर्श) करे, जो रस (सोमकलामृत) को स्पंदन (झरना) करने वाली और लवण के रस के समान और मरीच आदि कटु और इमली आदि आम्ल और दुध इनके सदृश और मधु (शहद) और घृत इनकी तुल्य जो

इसमे मधुरता, स्निग्धता का पान करता है। तो वह पक्षभर में मृत्यु पर विजय पा लेता है। इसें तनिक सन्देह नहीं है। हे उदयनाथ पार्वती मांस तत्व नाम से खेचरी मुद्रा का निरूपन किया है।।१३५-१३६-१३७।।

चतुर्थ तत्व च मीन (मत्स्य) यो प्राणाधार च।
मनोवेग सम भूत्वा सरोवर झषस्तथा।।१३८।।
गंगाजमुनार्योमध्य मीन रूपेण प्राणः च।
बेलास गृहीयात्तद् शुषम्णीन प्राणः।।१३९।।

भावार्थः-चतुर्थ तत्व का नाम मीन (मत्स्य) है, जो प्राण स्वरूप (या मन स्वरूप अर्थात प्राण मन का आधार है।) कहा जाता है। जो मन के वेग समान तथा मन सरोवर में मीन रूप प्राण (मन) नित्य चलाय मान रहता है (विहार करता है।) गंगा-जमुना है आधार जिनके या गंगा-यमुना नदियाँ रूप जो इड़ा पिंगला (प्राण-अपान) नाड़ियाँ है। उनके मध्य में अर्थात् शुषम्ना नाड़ी के मार्ग में प्राण (मन) रूपी मीन (मत्स्य) उसको हटपूर्वक या बलात्कारे ग्रहण करे।।१३८-१३९।।

(अर्थात् (प्राण-अपान) के इड़ा पिंगला नाड़ियों द्वारा प्राणायाम करते हुये कुम्भक संयम से इस प्राण अर्थात मन अर्थात मीन अर्थात मत्स्य को शुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश बलपूर्वक करना चाहिए।)

शुषुम्ना वाहिनी प्राणे (मीन) शून्ये विशति मानसे।
तदा सर्वाणि कर्माणि निर्मूलयात् साधकान्।।१४०।।

भावार्थः- अर्थात प्राण (मीन) जब शुषुम्ना नाड़ी के

(मार्ग में) बहने लगता है और मन-चित्त इन्द्रियां वस्तु के परिच्छेद से (शून्य) ब्रह्म में प्रविष्ट हो जाता है। उस समय मन चित्त वृत्तिओं का निरोध होकर साधक प्रारब्ध सहित सम्पूर्ण कर्मो को निर्मल नष्ट कर देता है। (अर्थात मुक्त (निर्मल) हो जाता है।।१४०।।

पंचम तत्व मैथुनं शिवशक्ति च योगमुच्यते।
कुण्डलिणी तु परंशक्ति शिव ब्रह्म च उदय।।१४१।।
प्राण (मीन) शक्तिसह शुषुम्ना शिवस्य योग मार्गम्।
षट्चक्राणि मैथुनं पथमुच्यत इति केचित।।१४२ ।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती पांचवे तत्व मैथुन जो शिव शक्ति का योग अर्थात मिलन को कहा जाता है। कुण्डलिणी परशक्ति है तो शिव परंब्रह्म कहा जाता है। जब प्राणसह कुण्डलिनी का शुषुम्ना पर शिव मिलन का मार्ग है। षटचक्रों के क्रम से (मूलाधार से जीवन प्राण) शक्ति को उठाकर (शुषुम्ना मार्ग द्वारा) सहस्त्रागारस्थ परम शिव के साथ मिला देना ही मैथुन (पथ) लक्ष है।।१४१-१४२।।

श्रृणु उदय अन्यय मैथुन तत्त्वं प्रियम्।
योनी मुद्रा समासाद्य स्वयं शक्तिमयो भवेत्।।
सुश्रृंगाररसनैव विहरेत् परमात्मनि।।१४३।।
आनन्दमयः सम्भूयैक्य् ब्रह्माणि संभवेत्।
अद्वैत ब्रह्माडरिम समाधिस्तेन जायेत।।१४४।।

भावार्थः-हे उदयनाथ पार्वती मैथुन तत्व प्रित्यर्थ अन्य

साधन को सुनो, योनी मुद्रा का साधन करके योगी स्वयंम में शक्ति की भावना और परमात्मा (शिव) में पुरुष की भावना करे। फिर यह भावना करे कि मुझमें और परमात्मा में शक्ति और पुरुष रूप में विहार हो रहा है। फिर आनन्द मय ऐक्य को स्थापित करता हुआ यह चिन्तन (विचार) या मनन (भाव) करे, कि मैं अद्वैत ब्रह्म हूँ, इसमें जो समाधि होती है। उसे लय योग समाधि कहते है। (अर्थात मैथुन तत्व भाव से भी महालय समाधि होती है।)।।१४३-१४४।।

मैथुनसंधान समाधिभाजम।
योगीश्वराणां हृदिवर्धमानम्।।१४५।।
आनन्दमेकं वचसामगम्यम।
जानन्ति तं गुरोः गोरक्षनाथमेकम्।।१४६।।

भावार्थः-मैथुन (एकत्व, समरसत्व) से जो समाधि होती है। उसके कर्ता योगेश्वर के हृदय में बदला हुआ एक आनन्द होता है। जो की वाणी से अगम्य है। उसे एक मात्र गुरु गोरक्षनाथ जी ही जानते है।।१४५-१४६।।

सोम मद्य मति मुद्रा प्राण मीन च गौपलम्।
शिव शिवानी मैथुनस्य ते नासौ योगी उच्चते।।१४७।।

भावार्थः-साधना करते समय सोमपाग (अमृतपान) करना मद्य है। मती, अर्थात चित्त अर्थात बुद्धि (विवेक द्वारा) संय्यम करना मुद्रा है तथा (प्राणायाम करते समय) प्राण को मीन कहा गया है तथा गौ अर्थात इस इन्द्रिय (विशेषतः मन को) (पल) मांस कहा गया है। शिव और शिवानी (कुडलिनी) शक्ति इनके ब्रह्म

मिलन को मैथुन कहा है। अथवा शिव-शक्ति की अखण्ड स्वरूपता में आत्माभिव्यक्ति ही मैथुन है। अतः मद्य, मुद्रा, मीन, मांस तथा मैथुन यह सब महाशक्ति में समर्पित (परिवर्तन) करने वाला श्रेष्ठ योगी है। पंञ्चमकार या पंच तत्व के सेवन के इस सात्विक रूप में जीवात्मा को परम श्रेष्ठ योगी कहा जाता है।।१४७।।

{ **विशेष सूचना** :- यहाँ नाथ सम्पदाय की मर्यादा अर्थात् गुरु गोरक्षनाथ जी के आदेश अनुसार सभी साधकों ने मद्य-मांस-मत्स्य-मुद्रा-मैथुन इन पञ्चमकारो का अनुक्रम से मदिरापान-मास मछली भक्षण तथा कुसगती, नारी संग संभोग यह अर्थ नहीं लेना चाहिये। अतः यह सभी प्रकार से वर्जित है।}

यदा उदय, साधनेषु पञ्च तत्व नहि कुर्वन्ति।
सः यथा बीज मंत्रेण जपत्वा अष्टोत्तर सहस्रकम्।
धर्म अर्थ काम मोक्षश्च प्राप्यर्थे न संशयः।।१४८।।
यथा विधि जपे नित्यं पंच सहस्रकम् च।
विल्पवा सर्वे विघ्न, चं ऋद्धि सिद्धि प्राप्यते।।१४९।।

भावार्थः-हे उदयनाथ पार्वती अगर साधक यह पंचतत्व (उपरोक्त पंचमकारात्मक योग) साधना को नहीं कर सकता है तो वह बीज मन्त्र का एक हजार आठ बार नित्य जप करने पर वह धर्म अर्थ काम मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। इसमें कोई संशय नहीं है। उसी प्रकार यह बीज मंत्र पांच हजार बार जपने से साधक के सभी संकट नष्ट होकर वह ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होती है।।१४९।।

तदा दशांश हुनेदाज्यैः शर्करा मधु पायसैः।
तर्पयेत् तदा-दशांशश्च जलैश्चन्दन-मिश्रितैः।।१५०।।
अष्टगन्धाद्यः साधकाधीशस्तद-दशैरभिषिनचयेत।
अभिषेकं दशांशेन भोजयेच्च साधूत्तमम्।।१५१।।
मिष्ठान्न साधकान नाथ, नाथ भक्ता सुखैः।
एवं पुरच्चरण कृत्वा सिद्धो भवति साधकः।।१५२।।

भावार्थः-उसका (मत्र जाप सख्यानुसार) दशांश हवन घृत शर्करा मधु युक्त खीर द्वारा करना चाहिए। उसका दशांश तर्पण चन्दन-युक्त जल से करना चाहिए उसका दशांश अष्टगंधाक्षदादी अभिषेक करना चाहिए। उसका दशांश श्रेष्ठ साधु संत को मिष्ठान्नों द्वारा और नाथ भक्तों को सुखपूर्वक भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार पुरश्चरण की क्रिया करके साधक सिद्ध हो जाता है।।१५०-१५१-१५२।।

।। उपसंहार ।।

ततो श्रीनाथं गुरुं चैव प्रणमेद बहुदा मुदा।
दक्षिणां गुरवे दद्यात् स्वर्ण-काञ्चन मानतः।।१५३।।
नाना वस्त्रगन्धपुष्पाणि रुद्रनादुपनयस्तथा।।
तोषयेत् स्तुतिं वाक्यैश्च प्रणमेत पुनरेव हि।।१५४।।

भावार्थः-अन्त में शिष्यों ने आनन्दपूर्वक श्री गुरु गोरक्षनाथजी को एवं सतगुरुदेव को श्री चरणों में बारंबार प्रणाम करना चाहिए और सुवर्ण मूल्य के अनुसार यथाशक्ति दक्षिणा सतगुरु को देनी चाहिए। विविध प्रकार के वस्त्रों गन्ध पुष्प रुद्राक्ष माला नाद जनेऊ आदि

से तथा स्तुति प्रार्थना वचनो द्वारा उन्हे प्रसन्न करना चाहिए और पुनः प्रणाम करना चाहिए।।१५३-१५४।।

काया मनसा वाचा गुरुः कुर्यात् तथाऽऽशिषः।
वचनै विविधैः शिष्य ग्रहयेत् तत्वमुत्तमम्।।१५५।।

भावार्थ-सत गुरुदेव मनसा वाचा और शरीर से शिष्यो को आशीर्वाद दे विविध उपदेशो से शिष्यों को उत्तम तत्व समझाए।।१५५।।

तथा नवमदिने व्याप्य कुरु कर्म भैरवान् बुधः।
दशमे दिवसे शिष्यं पुनः कुर्यात तु पूजनम्।।१५६।।
ताम्र पात्रोदकैः नाथ विधा राजा जपन सुधी।
कुन्दुका च तथा सप्त सम्पत्ति हेतवे उदय।।१५७।।
एक चत्वारिंशत् एक विशत्यकचत्वादिशत दिवे
गुरुणा सह पूजन कुर्यात।
कुर्वन्ति कर्मसानन्दे गुरु शिष्यसपरिवारः।।१५८।।
साधकेभ्यो भक्तेभ्योऽऽपि ततो वस्त्रादि भूषणम्।
दद्यात् प्रयत्नतः साधु विधि उदय समापनम्।।१५९।।

भावार्थः-इस प्रकार बुद्धिमान साधक नौ दिनों तक यह कर्मकाण्ड कराए। दसवे दिन शिष्यों ने पुनः पूजनादि कर्म करते समय. हे उदयनाथ पार्वती (धन धान्य) सम्पत्ति लाभ के लिये वहाँ सात कुम्भ स्थापन कर ताम्र पात्रस्थ जल द्वारा श्रेष्ठ (मूल-बीज मंत्र) मन्त्र का जाप करे। उसी प्रकार यह कर्म सआनन्द गुरु शिष्य परिवार इक्कीस या इक्तालीस दिन तक करना

चाहिए। अन्त में साधकों को एवं भक्तों को भी प्रयत्नपूर्वक वस्त्र भूषण (प्रसाद आदि) प्रदान करे। हे उदयनाथ इस प्रकार यह अभिषेकादी कर्म सम्पन्न होता है।।१५६-१५७-१५८-१५९।।

।। श्री गुरोर्लक्षणम् ।।

श्रृनु प्रिय उदय कर्म श्री गुरोर्लक्षणम्।।१६०।।
आत्मज्ञानी महायोगी शुद्धो गुरु परायणः।
निग्रहानुग्रहे गुरु शिष्य पालन तत्परः।।१६१।।
त्याग-विरागी च सज्जनस्तु पपूजितः।
श्रद्धावानं च नित्यं सोऽधिकर्ता न चान्यथा।।१६२।।

भावार्थः-हे प्रिय उदयनाथ पार्वती सुनो इस अभिषेक आदि कर्मों के लिए श्री सत गुरुजी के लक्षणं (यह सतगुरुजी) आत्मज्ञानी महायोगी तथा विशुद्धाचारी एवं गुरु भक्त श्रेष्ठ सतगुरु जो अनुशासन करने में और कृपा करने में समर्थ है तथा जो शिष्यों का पालन करता है। त्यागी वैराग्यवान सज्जन सम्मानित होता हुआ सदा श्रद्धावान रहता है। वही इस अभिषेक आदि कर्म करने में अधिकारी है। अन्य कोई नहीं।।१६०-१६१-१६२।।

विहीनंदृष्टि पुन्गु च तथा रुग्णं अल्प ज्ञान युत पुनः।
सामान्य स्वंमुखे वरदे वर्जयेन्मति मान सदा।।१६३।।
नि गुरां विशेषेण वर्जयेत क्रोधादि कामुकाः।
इदम् मुखादिक्षा वन्ध्या नारी यथा योगिने।।१६४।।

भावार्थः-हे उदयनाथ पार्वती योगी (साधक या गुरुजी)

ने अन्धे लूले रोगी और अज्ञानी सामान्य मनमुखी साधक इनको बुद्धिमान ने सदा छोड़ दे। मोह माया कामी क्रोधादि विशेषता निगुरा का सहयोग न ले क्योंकि हे योगिनी नि गुरुरा के (या मनमुखी के) मुख से ली गई दिक्षा उसी प्रकार निष्फल होती है जिस प्रकार वांझ स्त्री।।१६३ १६४।।

अज्ञानाद यदि वाः मोहाद् निगुरुऽऽत पामरः।
दीक्षान्त भवेद् उदय। विघ्नस्तस्य पदे पदे।।१६५।।
किं तस्य जप पूजाभिः कि ध्यानैः कि च भक्तितः।
सर्व हि विफलं तस्य नरकं यान्ति चान्तिमे।।१६६।।
कल्प कोटि - शतैर्देवि। तिष्ठति स नरकं सदा।
ततो हि बहु जन्मेभ्यो श्री नाथ मन्त्रमवाप्नुयात्।।१६७।।

भावार्थः-हे उदयनाथ पार्वती अज्ञानवश या मोह में पड़कर जो निगुरा (अर्थात् मनमुखी, जिनको गुरु परम्परा नहीं हो) साधक से दीक्षित होता है। उसके मार्ग में पग-पग पर बाधाएं आती है। उसके जप पूजन-ध्यान और भक्ति सभी निष्फल होते है। अन्त में वह नरक में जाता है। हे देवी करोड़ों सैकड़ों कल्पों तक वह सदा नरक भोग करता है। तब अनेक जन्म के बाद श्री नाथजी का मन्त्र (दिक्षा) प्राप्त करता है।।१६५-१६६।।

ततो हि विहितं आत्म ज्ञानी गुरुमालभेत्।
अभिषेकादि कर्माणि पुनः कुर्यात प्रयत्नतः।।१६८।।
सफल हि सदा कर्म सर्व तस्य भवेंद ध्रुवम्
आत्मज्ञानं मोक्ष तुल्य पालितं साधनो नाथ।।१६९।।

[illegible] सतगुरुः शिवः साक्षात् मोक्ष पथ हि दीक्षितः।
स एव सर्व दीक्षित या अभिषेकादि परायणः।।१७०।।

भावार्थः [illegible] आत्मज्ञानी (आत्मदर्शी) [illegible] करना चाहिए। फिर [illegible] करके [illegible] चाहिए। तब उस (दीक्षार्थी) [illegible] नाथजी (उदयनाथजी) आत्मज्ञानी (अर्थात ध्यान ज्ञान साधना इत्यादि करने वाला) मोक्ष मुक्ति के समान है। तो उन ध्यान योग, कर्मकाण्ड आदि साधना का पालन पोषण निरंतर करना चाहिए। वही सतगुरु (आत्मज्ञानी) साक्षात् शिव स्वरूप होते हैं। दिक्षा प्राप्ति ही मोक्षपथ होता है। तब वही सब दीक्षित अभिषेकादि कर्म के [illegible] (लायक) कहे जाते हैं।।१६८-१६९-१७०।।

तस्यैव सफलं जन्म दीक्षितं श्रृणु योगिने।
तस्यैव सफलं कर्म तस्यैव सफलं धनम्।।१७१।।
तस्यैव सफलं धर्मः कामः सफलो मनुः।
दीक्षा हि सफला नाथ। क्रिया च सफला तनु।।१७२।।

भावार्थः [illegible] सफल होता है। [illegible] सफल होता है। [illegible] सफल होती है [illegible] होता है। उसी की दिक्षा सफल होती है और तब उसकी क्रियायें भी (सफल) फलवति होती हैं।।१७१-१७२।।

इदं तु सेंचनादिं नाथ त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
गणेशः पात्रमत्रैव, कीर्तिकेयोऽपि उदय।।१७३।।

त्रिदेव तुल्यो नवनाथ तुल्योऽत्र भाजनम्।
कोटी वक्त्रै शक्तो न वर्णितुं योगेश्वरि।।१७४।।

भावार्थः-हे नाथ उदय यह अभिषेक आदि विधि तीनो लोक में दुर्लभ है। हे उदयनाथ गणेश और कार्तिकेय जैसे देवता की पात्रता इसमें है। त्रिदेव नवनाथादि को इसमें योग्यता है। हे योगेश्वरी कोटी मुखो से भी इसकी महिमा का वर्णन करना सम्भव नहीं है।।१७३-१७४।।

इति ते कथितं गुह्यं सेचनं परमं महत्।
गुह्यातिगुह्यं गुह्यं प्रयत्नतः।।१७५।।
यथा रति गोपनीया तथाभिषेचनं परम्।
यथा योनिर्गोपनीया तथाऽभिषेचनं परम्।।१७६।।
यथा भूगर्भेधनं गुह्यं गोपयेत तु यथा परम्।
तथैव तु महायोगिनेः गोपनीय ममाज्ञया।।१७७।।

भावार्थः-इस प्रकार मैंने अत्यन्त महत्वपूर्ण गुप्त अभिषेक का वर्णन तुमसे किया है। इसे प्रयत्न-पूर्वक गुप्त रखना चाहिए। जिस प्रकार रति क्रीड़ा और योनि गोपनीय है उसी प्रकार श्रेष्ठ अभिषेक को गुप्त रखना चाहिए। जैसे भू-गर्भ मे धन रखकर उसे अति गुप्त रखा जाता है। उसी पकार हे महायोगिनी। इसे मेरी आज्ञा से गुप्त रखना चाहिए।।१७५-१७६-१७७।।

।। इति श्री गोरक्षतन्त्रे उदयनाथ (पार्वती)।।
आदिनाथ संवादे पञ्चमः अध्यायः सम्पूर्ण

अथ षष्ठोऽध्यायः

।। अथ गोरक्ष मूल मन्त्रविधिनम् ।।

(गोरक्षनाथजी के मूल मन्त्र के विधि विधान)

"श्री उदयनाथ उवाच"

श्रुतं शाबर मंत्र साधकेभ्यः वाद्य मंत्र सहायभूतले।
पाठ मात्रेण सिद्धि स्यात् , पावने उपदिशतु सिद्धेश्वरे।।१।।

भावार्थः-श्री उदयनाथ पार्वती ने कहा हे नाथजी ह सिद्धेश्वर अब भूतल में शावर मन्त्र साधक के बिना पाठमात्र से ही सिद्धि करे उस पावन शावरी विद्या का उपदेश कीजिये।।१।।

"आदिनाथ उवाच"

अशेषः विद्यानां उदय, सर्वेषां वाच्छितं फलम्।
षड्कर्मादिसाधकानां वक्ष्ये सिद्धिप्रद कलौ।।२।।

भावार्थः-आदिनाथजी ने कहा हे उदयनाथ पार्वती सभी प्रकार की विद्या सभी साधकों को वाच्छित फल देने वाले सिद्धिदायक षड़कर्म आदि के मूल मंत्र कहता हूँ।।२।।

श्रृणु उदय प्रवक्ष्यामि मूल मन्त्रं यथा विधिम्।
यस्य स्मरणमात्रेन स्व रक्षा भवेत् क्षणात्।।३।।
मूलमन्त्रस्यैषा नाथ गोरक्ष प्रभावतः।
विल्पवा दुष्टानां सर्वेषां विरोधिना स्तम्भयेत।।४।।
चक्र मुद्रां न्यासंक चैव मूल मन्त्रं कारयेत्।
षड़ दीर्घ भाजा ध्यायेतु गोरक्षाभिष्ठ दायकम्।।५।।

भावार्थः-हे उदयनाथ पार्वती मैं गुरु गोरक्षनाथजी के मूल मन्त्र बतलाता हूँ। जिसके स्मरण मात्र से क्षणभर में स्वयं की रक्षा होती है। हे नाथ योगेश्वरी इस गोरक्षनाथ जी के मूल मन्त्र प्रभाव से सभी प्रकार के दुष्टों का नाश होता है एवं विरोधियों का स्तम्भन होता है। अतः चक्रन्यास मुद्रान्यासादि और मूलमन्त्र का करे और तब अभीष्ठदायक गुरु गोरक्षनाथजी का ध्यान करे।।३-४-५।।

विनियोगः (संकल्प)

(दाहिने हाथ में जल, गंध, अक्षदा, लाल फूल लेकर निम्न मन्त्र को पढ़े।)

ॐ अस्य श्री गुरु गोरक्षनाथ मूल मन्त्रस्य सहृदयच्छन्दों श्री गोरक्षनाथाय मम् सन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां स्तम्भनायै विद्वेषणार्थे वशीकरणाथे ॐ ग्रों गोरक्षनाथ वरप्रसादाय सिद्धयर्थे जपे (पाठ) विनियोगः

(जलाक्षतेः भूमौ निक्षिपेत्)

(जलाक्षदादि भूमि पर छोड़ दें।)

''चक्र न्यासः''

(प्रत्येक चक्र-न्यास पर प्राणायाम करते हुये कुम्भक रोककर निम्न मन्त्र वोलकर स्पर्श करे।)

ॐ लं, ग्रों मूलाधाराय नमः गुह्ये।

(रिढ के अधोभाग (गुहयांग को स्पर्श करे।)

ॐ वं ग्रों स्वाधिष्ठाणाय नमः मेरुदण्डो।

(मेरुदण्ड को स्पर्श करे)

ॐ रं ग्रों मनिपुराय नमः नाभौ।

(नाभि को स्पर्श करे।)

ॐ यं ग्रों अनहदाय नमः हृदि।

(हृदय को स्पर्श करे।)

ॐ हं ग्रों विशुद्धाय नमः कण्ठे।

(कण्ठ को स्पर्श करे।)

ॐ ग्रों आज्ञाचक्राय नमः भूमध्ये।

(भूमध्य में स्पर्श करे।)

ॐ ग्रों ब्रह्मरन्धाय नमः शिखायै।

(शिखा में स्पर्श करे)

''मुद्रान्यास''

(निम्न पन्चतत्वात्मक मन्त्रउच्चारण करके मुद्रायें (कृति) करके शुद्धि करे।)

ॐ रं ग्रों अंगुण्ठाभ्यां नमः। अग्नि मुद्रा :- हाथ के अंगूठे को स्पर्श करे।)

ॐ यं ग्रों तर्जनीभ्यां स्वाहा। पवन मुद्राः- तर्जनी अगुली को अंगूठे के मूल में लगाकर अंगूठे को दबाए रखे।

ॐ हं ग्रों मध्यमाभ्यां नमः वषट। शून्य (आकाश) मुद्राः- मध्यमा अंगूली, अंगूठे के मूल में लगाकर थोड़ा दवाव डाले इसे आकाश मुद्र कहते है।

ॐ लं ग्रों अनामिकाभ्याम् नमः हुम्, पृथ्वी

मुद्रा:- अनामिका और अंगुष्ठ के अग्रभागों को मिलाकर बाकि अंगुलियाँ सीधे रखें।

ॐ वं ग्रों कनिष्ठिकाभ्यां नमः वौषट। (वरुण)

जल मुद्रा :- कनिष्ठा अंगुलों को अंगुठे से लगाकर रखे इसे वरुण मुद्रा भी कहते है।

ॐ हँ, यँ, रँ, वँ, लँ ग्रो पंचतत्व करतल कर पृष्ठाभ्याँ नमः फट्। दोनो हथेलियों आगे पीछे के भागों को स्पर्श कर नमस्कार करे।।८।।

ॐ ग्रों गोरक्ष शस्त्रसह अस्त्राय ॐ हूँ फट्

शिर के ऊपर से चुटकी सभी दिशा को बन्ध करे। त्रिताल ताली बजाये।।९।।

।। मन्त्रोद्धार।।

ॐ शिव गोरक्ष योगिन्द्रो नमः

या

ॐ नमः शिव गोरक्ष योगी

इस मन्त्र का या अपने सतगुरु के मन्त्र (गुरुमन्त्र) का १०८ बार जाप करे। स्वच्छ स्थान में प्राणायाम करे। प्राणायाम कम से कम १० बार करे।

अतः अन्तरमुख तथा प्रसन्न होकर गुरु गोरक्ष नाथ जी का ध्यान करो।

''अथ ध्यानम्''

व्याघ्रचर्मासन संस्थिता कर्पूरवर्ण त्रिनेत्रं च।
जटा जूट मुकुटं च शीर्षे शशीं विराजितम्।।१०।।

हस्ते पाश वज्रं दण्डपाणी च अस्त्रशस्त्र भूषणै।
रक्षतु गोरक्षं त्रिजगतां तं नमाभ्यहम्।।१२।।

भावार्थ :- हे तीनों जगत के रक्षा करने वाले गुरु गोरक्षनाथजी व्याघ्रा चर्म के आसन पर बैठे हुए कर्पूर वर्ण कान्ति के जिनके तीन नेत्र है। जटाजुट मुकुट और शिश पर चन्द्र विराजमान है। हाथों में पाश, वज्र तथा दण्ड के अरत्र शस्त्र के भूपणनादि आपको मैं नमस्कार करता हूँ।।१२।।

''मूल मन्त्र''

ॐ ग्रों ग्रों ग्रों हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं गोरक्ष निरान्जनात्मने ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ ग्रों ग्रों ग्रों मम शत्रून् स्तम्भय, स्तम्भय, कीलय-कीलय, विनाशय विनाशय हूँ फट् स्वाहा।।१३।।

पंचतत्व-पूजनम्

विधिः- अतः श्री गुरु गोरक्षनाथजी का यन्त्र (तन्त्रम्) अथवा उनकी मूर्ति या प्रतिमा या उनके नाम से स्थापित कलश का पंचतत्वात्मक पूजन निम्न मंत्र पढ़कर कर।

ॐ ग्रों गोरक्षनाथाय नमः वं वं अमृततत्त्वात्मकं (जलतत्व) दिव्य स्नानं च तिलकाक्षतान समर्पयामि।।१४।।

विधिः- (जल छिड़ककर चंदन या अष्ठगंध या केशर का तिलक करे एवं अक्षदा (चावल) चढ़ाये।)

ॐ ग्रों गोरक्षनाथाय नमः यं यं यं वायवात्मकं वस्त्रं पुष्पं च बिल्वपत्रकम् समर्पयामि।।१५।।

विधिः- (भगवे, लाल वस्त्र, सुगन्धित पुष्प या पुष्पमाला तथा बिल्व पत्र या बिल्वफल अर्पण करे।)

ॐ ग्रों गोरक्षनाथाय नमः हँ हँ हँ आकाशात्मकं नादउपनयण, कुण्डलं च रुद्रं समर्पयामि।।१६।।

विधिः- (नाद जनेऊ (नादिपवित्री, ऊन का जनेऊ) कुण्डल जोड़ी (मृतिका या धातु के) और रुद्राक्ष या रुद्राक्ष माला अर्पण करे)

ॐ ग्रो गोरक्षनाथाय नमः रं रं रं तेजतत्वात्मकं धूप दीप कर्पूरं समर्पयामि।।१७।।

विधिः- (धूप अगरवत्ती, गौघृत दीप और कर्पूर प्रज्वलित करके आचवाये तथा अर्पण करे)

ॐ ग्रों गोरक्षनाथाय नमः लं लं लं पृथ्वी पृथिवव्यात्मकं रोटं, कृशरान्न च दुग्धं समर्पयामि।।१८।।

विधिः- (रोट (कच्चा या पक्का), खिचड़ी तथा गौ का कच्चा दूध नैव्यद्य (भोग) लगाये।)

पूजाविधि प्रवक्ष्यामि गोरक्ष सिद्धिदम्।
एक पञ्चाशतं वारं अष्टोत्तरयतं रुद्रेण जपेत्।।१९।।
ग्रहणेच्दीपावल्यांव होलिकोत्तमे समये।
कृष्ण चतुथ्यामष्टम्यां च यथाविधि शुभ दिने।।२०।।

भावार्थः- इस प्रकार मैं गोरक्षनाथ मूल मंत्र सिद्धि का विधि बतलाता हूँ। इक्यावन बार रुद्राक्ष माला (१०८ दाने) से मूल मन्त्र का जाप करे। ग्रहण काल में या

दिवाली या होली या कृष्ण पक्ष के चतुर्थी या अष्टमी के शुभ दिन को करे।।१९-२०।।

नित्यं जपेत् मंत्रं रात्रौ द्वादशतः वादन त्रयम्।
एक चत्त्वारिशंत् दिनं यावत् जपेत् विधि विधानतः।।२१।।

तदा दशांशा हुयात् दुग्ध पायस केशरैः।
तर्पयेत् तददशांशै जलैश्चन्दन मिश्रितः।।२२।।
अष्टगन्धाद्यै साधकाधीशस्तद् दशैरमार्जनं।
सदक्षिणादानं च साधनः भोजयेत् प्रियम्।।२३।।
एवं पुरस्क्रिया कृत्वा सिद्धि भवति कार्यम्।
अभक्तै नैव दातव्यं गोपित् रक्ष उदय।।२४।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती या तो इस गुरु गोरक्षनाथजी के मूल मन्त्र को नित्य निशा रात्रि में (१२ से ३ बजे तक) तीन घंटी (सवा घण्टा) जप के ऐसा ४१ दिन (सवामास) सआनन्दभाव से विधि विधान से (जप) करे। तद्पश्चात् दुग्ध+केशर+खीर से एक दशांश हवन करे और जल+चन्दन मिश्रन से एक दशांश तर्पन करे और इसके एक दशांश अष्टगंध (और उपरोक्त तर्पन के जल) से मार्जन करे और इस मार्जन के एक दशांश साधु सन्तो को अन्न वस्त्र दान दक्षिणा करे। इस प्रकार पुरश्करण करने पर सभी कार्य सिद्ध हो जाते है। किन्तु हे उदयनाथ पार्वती यह विधि अभक्त (दुष्ट दुर्जन, रोगी, कपटी राजनीति इ०) को न बताकर यह गुप्त रखे।।२१-२२-२३-२४।।

अथ गोरक्ष ज्योत विधानम

अथ सपवक्ष्यामि गोरक्षंज्योत मुत्तम।
कृतेन येन विघ्नौघो विलपवायाति मन्त्रिणा।।२५।।
सप्तधान्यमेकं च मूहूर्तमुत्तानम्।
एकीकृत्य विधातव्यो दीपः सुस्निग्धशोभनः।।२६।।
षठत्रिशंत्तन्तुभिः कार्या दृढावर्ति सुरञ्जिता।
गोघृतेनपुष्पेण तैलं केशारिणा दीपं ज्वलेत्।
एतान्यानीय पूर्व तु ततो ज्योतिं प्रदापयेत।।२७।।

भावार्थः- समस्त विघ्नों का नाश करने वाले गुरु गोरक्षनाथ जी उत्तम ज्योत विधान (विधि) कहता हूँ। उत्तम मुहर्त में शुद्ध सप्त धान्य बीजों को एकत्र कर सुन्दर दीप बनाये। फिर छत्तीस तन्तु की बत्तियां बनाकर पहले से इकट्ठा किये गये गाय के घी कुसुम पुष्प या केशर के तेल से ज्योत जगाकर (जलाकर) श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी को पदान करे।।२५-२६-२७।।

कषाय रक्त वस्त्र परिधाय शुचीः क्षमी।
कुशासनो पविष्ठश्च गृहीतं रुद्रमाल्यादिकम्।।२८।।
उत्तराङ्ग समो भूत्वा पंचाकेन भूमौशुदृयेत्।
स्थापनं कृत्वा यन्त्रं तु दीपं संस्थाप्य तदोपरि।।२९।।
घृततमापूर्य वर्तिकाच ज्योत प्रज्वालयेत सुधी।
गोरक्ष मन्त्रं सम्मुच्चायं चेती, ज्योत ततौ वदेत्।। ३०।।
संकल्प -न्यास पूर्व तु जपेदष्टोत्तरं शतम्।
मालोमकं जपेत्नित्यं निशौरात्रौमासमे वहि।। ३१।।

असाध्य साधयेत् कार्य जनान् वशयेत्क्षणात्।
जायते शत्रुस्म्भने द्रुह्यमुह्य सिद्धि प्रदम।। ३१ ।।

भावार्थः- भगवे या लाल वस्त्र पहनकर पवित्र और क्षमा शील होकर कुशासन पर बैठकर रुद्राक्ष माला लेकर उत्तर की ओर मुँह करके पंचगव्य (अर्थात् गौ का घी + गौ का दही + गौ का दूध + गौ का गोबर + गौ का मूत्र) से लेपन किये हुये भूमि पर यन्त्र { श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र (तन्त्रम्)} निर्माण कर उस पर यत्न पूर्वक ज्योत को स्थापित करके, उसमें गौ घी भरकर ध्यान पूर्वक ज्योत प्रज्वलित करे, फिर गोरक्ष मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए, न्यास पूर्वक ज्योत का संकल्प करके एक माला मन्त्र जाप एक माह (सवा माह) तक रात्रि में (निशारात्रि में) करने से असाध्य, साध्य, शत्रुओं का वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण आदि कार्य तुरन्त सिद्ध हो जाता है।। २८-२९-३०-३१-३२।।

।। इति श्री गोरक्ष तन्त्रे उदयनाथ-आदिनाथजी।।
संवादे षष्टमः अध्याय सम्पूर्णम्

नित्य जप साधना हेतु कुछ मन्त्र-

अथ् गोरक्ष गायत्री मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पुत्राय।
धीमहि तन्नो गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात्।।
ॐ ह्रीं श्रीं गों हुं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरान्जनात्मने हुं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं शिव ग्रों गोरक्ष नमः ।

अथ सप्तमोऽध्यायः

।। सर्वरक्षेद् गोरक्षं अस्त्र च मन्त्रः।।

(सर्व रक्षा होने के श्री गोरक्षनाथजी का मंत्र तथा अस्त्र)

"श्री उदयनाथ उवाच"

महानाथं आदिनाथ करुणावरुणालयम्।
सर्वारिष्टं मुक्तिं च साधनं वद्में प्रभो।।१।।

भावार्थः-श्री उदयनाथ ने कहा हे महानाथ आदिनाथजी आप दया के सागर मुझे सर्व संकटों से खुद की मुक्ति (रक्षा) करने का वास्तव में साधन बतलाओ।।१।।

"श्री आदिनाथजी उवाच"

सर्वारिष्टं मुक्ति श्रृणु उदय परंगुह्यम्।
यस्य स्मरण मात्रेन रक्षारिष्ट भवेत् क्षणात्।।२।।
गुह्यतरं उदयनाथ तव स्नेहाद वितन्यते।
सदा शुचिः साधकेन्द्र प्रयोग तु समाचरेत्।।३।।
पूजयित्वा नाथ यंत्र पंचोपचारे साधकाः।
महाऽऽनन्द मयो भूत्वा, साधयेत् मन्त्रः महत्।।४।।

भावार्थः-श्री आदिनाथजी ने कहा हे उदयनाथ पार्वती सर्व संकटों से मुक्ति करने वाला मुक्ति मंत्र सुनो इसके स्मरण मात्र से सर्व संकटों से क्षणभरात रक्षा होती है। हे उदयनाथ यह गुप्त से गुप्त बात तुम्हारे स्नेह के कारण बताता हूँ। सदासर्वदा पवित्र रहने वाला श्रेष्ठ साधक को इस प्रयोग को करना चाहिए। श्री नाथ यन्त्र का पंचापचारे

पूजन षष्ठोऽध्यायः मे वर्णित कर अत्यत आनन्दमय होकर इस महान मत्र को कर।।२३-४।।

''सर्वारिष्ट मुक्त गोरक्ष मंत्रः''

ॐ नमो आदेश नाथ गोरक्षं नमो आदेश। परंयोग परिपूर्णः चमत्कारं ऋद्धि सिद्धिंप्रदम् शाबर प्रतापं, मम सर्वारिष्ट निवाराय। मम शत्रून मुष्ट, मुष्ट मुष्ट सम्पश्चतात्। ये न अस्त्र शस्त्रेण मम शत्रुं वाचं मुखं पदं स्तम्भय् स्तम्भम् तं यन्त्रं मन्त्रं बुद्धि तन्त्रं विनाशय विनाशय, अपर बुद्धि कुरु कुरु, आत्म विरोधिनां शत्रुणां सर्वाङ्गु शीर्षात्पादपर्यन्तं, पदशाकेश पर्यन्तं।स्तम्भय खे खी मारय, मारय, परमंत्र परंयन्त्र परंतत्राणि छेदय, छेदय ममात्मानं मन्त्र-तन्त्र यन्त्राणि रक्ष रक्ष ग्रहा निवारय निवारय, ॐ हूँ जूं स मृत्युन्जयाय मम आधिं व्याधि विनाशय विनाशय दुःखं हर हर हरेश्वराय मम द्रारिद्रयं निवारय निवारय रुद्र रुपाय सर्व मन्त्रतन्त्रयन्त्राणि स्वरुपेण, गुह्य शाबरीश्वराय यः परं सिद्धिः चमत्कार प्रयोगं सर्व तत्वदर्शी रुप यः अखण्ड ब्रह्माण्ड मण्डलाधरं मम दुष्ट ग्रह भूत ग्रह आकाश ग्रह-पाषाण ग्रह, सर्व चाण्डाल ग्रह

कालसर्पादि ग्रह, सर्व यक्ष किन्नर किम्पुरुष ग्रह, बन्धय-बन्धय-बन्धय ममाशेष प्रानन्द्य सन्चय सन्चय परिपूर्ण धनं धान्यं सम्पदादि कुरु कुरु स्वाहाः। यो गोरक्ष भूतनाथ रूपेण हूँ हूँ ॐ कार एषा भूतात्मा पेतात्मा पिशाचानां ब्रह्मराक्षसानां शाकिनी डाकिनीं ग्रहणां मारय, मारय अशेषः क्षुत्पिपासानां विप्लव विप्लव ॐरुद्र रूपेण रं रं रौद्ररूपेण गोरक्ष पूर्व दिशि बन्धय बन्धय वारवर्क रुपेणं गोरक्ष रक्ष रक्ष दक्षिण दिशिं बन्धय बन्धय कालास्त्र रूपेण गोरक्ष रक्ष रक्ष पश्चिम दिशं बन्धय बन्धय पाशास्त्र रूपेण गोरक्ष रक्ष रक्ष, उत्तरं दिशिम् बन्धय बन्धय महाकाल रूपेण गोरक्ष रक्ष रक्ष ऊर्ध्व दिशिं बन्धय बन्धय उग्रनादं अट्टहास डमर रूपेण गोरक्ष रक्ष रक्ष पाताल दिशि बन्धय बन्धय भू भू भूतरनाथ रूपेण गोरक्ष रक्ष रक्ष त्रिलोक्यवतशेषं परिपूर्ण रक्ष रक्ष मम श्री नाथ यः अक्षरं पोषणं मम सकल रोग विनाशय विनाशय ॐ हूँ हूँ हुंकार रूपेण च ॐ रं रं रौद्र रूपेण मम सर्वशत्रुन पलायतं पलायतं योजनानम्तं मध्ये सर्वत्र कि, कि,रूपेण राज स्त्री पुरुष जनान् वशं कुरु कुरुः स्वाहा। ॐ ग्रों ग्रों ग्रों हूँ हूँ हिं

हिं गोरक्ष निरान्जनात्मने हिं हिं हूँ हूँ ग्रों ग्रों ग्रों मम शत्रुन् दह-दह पच पच स्तम्भय स्तम्भ्यय मोहय मोहय आकर्षय आकर्षय उच्चाटय उच्चाटय हूँ फट् स्वाहा।।५।।

"श्री आदिनाथ उवाच"

इदानीं श्रृणु उदये परमंस्त्र सुदुर्लभम्।
गोरक्षस्य दिव्यास्त्रां महामत्रं जपेत्तु यथाविधिम्।।६।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे उदयनाथ पार्वती अब अति दुर्लभ अस्त्र को सुनो। यह गोरक्षनाथजी का दिव्या अस्त्र, महामन्त्र को जो की विधिवत जप (मनन) करना चाहिए।।६।।

''गोरक्ष-दिव्यास्त्रम्''

ॐ गों गों गोरक्षनाथाय नमः परब्रह्म परंशक्तिं परं शिव रूद्र रूपेण नतो अस्मि। शून्य मयी ज्ञानमयी ज्योतिः रूपेण नमो नमः। ॐ रं रं घोर गोरक्ष हूँ हूँ हूँ अघोरं रूपेण गोरक्षस्य स्मशान्नाथाय, भूत विडारेन महाघोर ग्रो गोरक्ष मम प्रिय सिद्धों महासिद्धो विद्याधरं वृन्द वन्दितं पादम् यतः घोर ब्रह्मा अघोर विष्णु रौद्र रूपाय प्रिय सर्वांग त्रिशक्ति च महाशक्तिं कालरूपी महाकाल, इन्द्र वरूणं कुबेरं भैरवं भैरवीं प्रियं, सर्व आदित्य मण्डलं अनन्तं कोटीं

ब्रह्माण्डादिक ब्रह्म शक्तिं स्वरूपेण गोरक्ष तुम्भ्यं मादेशम्।

ॐ हूँ हूँ हूँ कार गोरक्षं आगच्छ आगच्छ मानय मानय नुद नुद मम शत्रुन् मर्दय मर्दय षूं षूँ षः क्षेत्रनाथाय सः तंत्र मंत्र यंत्रैः सह चूर्णय चूर्णय आवेशयावेशय त्रुट त्रुट त्रोटय त्रोटय मम शत्रुं स्फुट स्फुट स्फोटय स्फोटय, इदम् स्मशान। सिद्ध गोरक्ष यः महाभूतान् जृम्भय जृम्भय युं यः रूपेण गोरक्ष ब्रह्मराक्षसानुच्चाटयोच्चाटय भूत प्रेत पिशाचानप्तृप्तात्मानां मूर्च्छय-मूर्च्छय मम शत्रुन उच्चाटयोच्चाटय, सं सों सत्यनाथाय सत्यं कथय-कथय ग्रों ग्रों गोपालनाथ रूपेण मम शत्रुन चूर्णय-चूर्णय वृक्षेभ्यः सन्नाशय-सन्नाशय लं लूं लालग्वाल रूपेण अर्कं स्तम्भय-स्तम्भय लीलांगालय वृक्षेभ्यो परिपातय-परिपातय शैलकाननं मही मर्दय-मर्दय मुखं उत्पाटयोत्पाटय पात्रं पूरय-पूरय हीं हः रूपेण गोरक्ष गरुणं पक्ष पातेन विषं निर्विषं कुरु कुरु भूत भविष्यं यत्सर्वं कथय कथय षूं षः कलेश्वरनाथाय मम शत्रुं हन्त हन्त, दह-दह, पच-पच, मथ-मथ, पृमथ-पृमथ, घर्घर-घर्घर च यः जूं सः रूपेण ग्रों ग्रों गोरक्ष मम शत्रुं ग्रासय-ग्रासय,

विद्रावय-विद्रावय उच्चाटयोच्चाटय चक्र सुदर्शन पवनास्त्रेन वज्रं इन्द्रस्य सूं रं रूपेण सर्वाङ्गनाथाय ज्वरं नाशय-नाशय प्रविदं स्फोटय-स्फोटय, ॐ क्लीं क्ष्णीं क्षेत्रनाथाय सर्व शत्रुन् मम वशं कुरु कुरु आकाश ग्रह मण्डलं सप्त पाताल पृत्यंतरिक्ष आनयानय, रं रं ग्रों ग्रों ग्रों गोरक्ष महांकाल रूपेण, रूद्र रौद्राय विक्राला रूपेण पूर्व दिशं निरोधय-निरोधय, लूं लं रूपेण पश्चिम दिश स्तम्भय-स्तम्भय, षूं षः रूपेण दक्षिण दिश निधय-निधय, शूं शं रूपेण उत्तर दिशं बन्धय-बन्धय, हूँ हूँ हिं हि ॐ बन्धय-बन्धय, ॐ उग्र तपो निधि जटा जूट नागशेषादि दिव्यासनम् विचित्र कुण्डलम् रुद्रमालां परि भूषनम् मेखला चन्द्रामृताम खर्पर चिमेटन, दण्डपाणी विद्यतत्स्फुरिते सकाशं विक्रालं भैरव रूपेण चाट्टयटहासं निलय-निलय हूं फट् फट्। तेजपुञ्जयं कायेन सप्तदीप क्रुते ब्रह्माण्ड ब्रह्मपवन सदृष्यभ्रमणे त्रिशुलादि मुस्सल दण्डमायुध अस्त्र शस्त्र च विरान शमय-शमय अनंत परंपरादि शक्तिं च ब्रह्मास्त्रे विष्णुच्चक्रं सहदी गुरु मुखं ग्रों ग्रों ग्रों गोरक्षनाथ मम सर्व शत्रुन मम सर्व दुष्टान् विनाशय विनाशय हुं फट् स्वाहा।

ॐ लूं लूं लालग्वालाय तेषा वाचं मुखं

पदं स्तम्भय-स्तम्भय, षूं ष रूपेण सर्वं कायास्तु कीलनं कीलनं यं यं रुपेण सूधवूध नाथ तस्ये बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ग्रों ग्रों ग्रों हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं गोरक्ष निरंजनात्मने ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ ग्रों ग्रों ग्रों मम वै शत्रुणां वाचं मुखं पदं स्तम्भय-स्तम्भय शत्रुन जिव्हा कीलय-कीलय शत्रुणां दृष्टिं-मुष्टिं गतिं-मतिं दन्तं तालुं जिव्हा बन्धय बन्धय वै मम-शत्रुन मारय-मारय शोषय-शोषय हूं हूं फट् स्वाहा।।७।।

टिप्पणी:-उपरोक्त रक्षा गोरक्ष मूल मन्त्र और सर्वारिष्ट मुक्त गोरक्ष मन्त्र तथा गोरक्ष दिव्यास्त्र मन्त्रों में आये बीजों का अर्थ जानना न सम्भव है न आवश्यक और वाच्छनीय है। यह तो केवल जप (मनन) पाठ मात्र करना ही पर्याप्त है।

विधि

सूर्यच्चन्द्रौ ग्रहणकाले जपेतष्ट्टोत्तर शतम।
दीपोत्सवं होलिकां च दुर्गाष्टमी भी शुभे दिने।।८।।
रौद्रमाल्या जपे नित्यं ताम्र जल पात्रयुक्तम्।
अन्ते जलं प्राशनं च सर्वानन्दे सुखकारकम्।।९।।
शिखरे आरण्ये वा सिद्ध देवालये गृहे।
संगमे च महानद्या निशायामपि साधयेत्।।१०।।

विधि:- चंद्र सूर्य ग्रहण काल में होली, दिवाली तथा दुर्गाष्टमी के शुभ दिन में एक सौ आठ वार जाप करना

चाहिए जल भरे ताम्र पात्र में रुद्राक्ष माला सह डालते हुये नित्य जप (पाठ) कर अन्त में आनन्ददायक सुखकारक होकर वह जल को प्राशन करे। पर्वत की चोटी घना जंगल सिद्ध स्थान देवालय (मन्दिर) घर अथवा महानदियो का संगम पर रात्रि में जाप करने से कार्य सिद्ध हो जाते है।।८-९-१०।।

जपन्नित्यपाठं च जोगन ब्रह्मचर्य व्रतं दृढ़म्।
निशौ रात्रौ दश घटिकां च जपेद चत्वारिशदिनम्।।११।।
हवनं तर्पणं मार्जनादि चं कियते यथा विधिम्।
कार्य सिद्धि भवनिच नाथ ! नाथ ! अत्रं न संशयः।।१२।।
त्रिकाल जपेद् मंत्रं षट्सहस्त्रकम् सविधिम्।
सर्वत्र भवति विजयं नात्र संशये जोगिन।।१३।।
यः करोति नित्यं पाठं सहृदयो भक्तिदः।
सर्वारिष्टं विल्पवाशुं रक्षा ! भवेत् तत्क्षणात्।।१४।।

भावार्थः- हे जोगन उदयनाथ सम्पूर्ण विधिवत ब्रह्मचार्य का पालन करते हुये इन मन्त्रों का नित्य प्रति निशारात्रि में दशघटी (४ घण्टे) मंत्र जाप चालीस दिन (अर्थात् सवा महीना) करे और हवन तर्पन मार्जनादि विधि करने पर सभी कार्य सिद्ध होते है। इसमें कोई संशय नहीं है। रोज त्रिकाल (प्रातः, मध्य, सन्ध्या) छः सहस्त्र जाप सविधि करने पर वह साधक सर्वत्र विजयी होता है। हे जोगन इसमें तनिक संशय नहीं है। उसी प्रकार रोज नित्य नियम से केवल सहृदय भक्ति से इन मंत्रों का मात्र पाठ करने पर उसके सभी

प्रकार के आरिष्ट संकटो का तत्काल नाश होकर क्षणभर में रक्षा हो जाती है।।११-१२-१३-१४।।

वैशिष्य निर्देशम्

{ अत्त्यावश्यक सूचना }

श्रृणु ! मम निर्देश गुरु गोरक्ष मंत्र तंत्रमतिगुह्यम्।
नैवाशिष्यं दातव्यं यत्नेन च रक्षितम्।।१५।।
रोगिणान्धपङ्गं च स्वल्पज्ञानिनः तथा।
काम क्रोधि दुष्ट जनान् निर्गुणा भागेनाभ यथा।।१६।।
दुष्टानमतिलोभिनां दुर्जनमतिमन्दितम् दुर्जनपि च आद्दत्।
दम्भकान्न न दातव्यं नाभक्ताय विशेषतः।।१७।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती मेरी निर्देश सूचनाओं को सुनो श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के यह अस्त्र और मंत्र (मूल-मंत्र-अरिष्ट मुक्त मंत्र, दिव्यास्त्र इ०) विधि अभक्त को ना बताकर गुप्त रखे तथा अन्धे, लुले, रोगी और अल्पज्ञानी, कामी क्रोधी कपटी निगुरे (जीसे गुरु नही है) और अभागी उसी प्रकार लालची दुष्ट दुर्जन पाकर उसे भी नहीं देना चाहिए विशेषतः अहंकारी (मूर्ख भाव शून्य-दरिद्री) और भक्तिहीन लोकों को इसे नही देना चाहिए।।१५-१६-१७।।

गोरक्षस्य मूल मंत्राणां बीजं मन्त्राण्यापि च।
परेषामहितानां च न कुर्यात्कदाचनः।।१८।।
करोति योऽपहितं निर्दोषं कष्टानि च।
सः घोरं नरकं याति, महा पातकमधि गच्छति।।१९।।

भावार्थः- इस गुरु गोरक्षनाथ जी के मूल मंत्र, बीज मंत्र (दिव्या) अस्त्र के द्वारा दूसरो का अहित करने में और दूसरों से शत्रुत्व करने से दूर रहे। जो भी अपने स्वहित अर्थात स्वार्थ के लिए निर्दोष जीवों को अहित (बुरा) करेगा उसके तत्काल चारो वर्ग (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) नष्ट हो जायेंगे और वह साधक महापातकी (महापापी) हो जाएगा।।१८-१९।।

तस्य निष्फलं ध्यान पूजा भक्तितया।
सर्व हि विफल तस्य नरकं यान्ति चान्ति मे।।२०।।
कल्प कोटी शतै उदय भुक्ते स नरक सदा।
भुक्ते चस नरकं शतकोटि कल्पान्तकम्।।२१।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती उसके जप पूजन ध्यान (अनुष्ठान) और भक्ति सभी निष्फल (विफल) हो जाते है और अन्त में वह घोर नरक में जाता है और करोड़ों, सैकड़ों कल्पोतक वह सदा नरक भोग करता (भोगता) है। हे उदय नाथ वह सदा-सर्वदा करोड़ों-सैकड़ों कल्पो तक नरक भोग भोगता है।।२०-२१।।

उदयः परमं रहस्यं सावधानतया श्रृणु।
शस्त्रादि प्रयोगं तदातु घोर संकटम्।।२२।।
मार्गमन्यं न द्रक्ष्यसे उपायमपि न पश्यसि।
अतः न कुरु प्रयोगानां स्वल्परुहाट जनान् प्रति।।२३।।
मंत्र तंत्रस्यापमानं, गोरक्षस्यापि तथा।
करोति यो नरः निष्फलं भवति तस्य साधनम्।।२४।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती मैं रहस्य को बतलाता हूँ सावचित्त होकर सुनो इन अस्त्र मन्त्रों का प्रयोग तब करे जब मनुष्यों पर अत्यत गभीर (संकट) परिस्थिति आ जाये और इतरत्र कोई भी मार्ग (उपाय) प्राप्त ना होता हो अतः बिना कारण छोटी मोटी बातों के लिए यह (मन्त्रों का) प्रयोग ना करे। अन्यथा इन गुरु गोरक्षनाथ जी के अस्त्र मन्त्रो का अपमान होकर यह कर्म करने वाला की सम्पूर्ण साधना निष्फल होकर वह नष्ट हो जायेगा।।२२-२३ २४।।

श्रृणु नाथ! स्वरक्षार्थं रहस्यं वदाम्यहम्।
कुरु सदा स्वरक्षार्थं मंत्र तन्त्र यन्त्रादिकम्।।२५।।
कथयामि पात्रं गुह्यं मंत्रतंत्रादि महत्त्वकम्।
गोपनीयं, गोपनीयं गोपनीयं सदा प्रयत्नतः।।२६।।

भावार्थः- हे नाथ उदय सुनो मैंने यह रहस्य केवल स्वरक्षा के लिये ही बतलाया है। अतः उन जीवों ने (लोकों ने) यह तन्त्र मन्त्र खुद के रक्षार्थ (अपनी रक्षा करने के लिए ही) करे। इस प्रकार मैंने अत्यंत महत्वपूर्ण गुप्त अस्त्र-मन्त्रों का वर्णन तुमसे किया है। इसे प्रयज्ञ-पूर्वक गुप्त से गुप्त रखना चाहिए।।२५-२६।।

।। इति श्री गोरक्ष तन्त्रे उदयनाथ आदिनाथ।।
संवादे सप्तमः अध्यायः समाप्त

अलख निरन्जन। अलख निरन्जन।।

अथ अष्टमोऽध्यायः

।।अथ गोरक्ष नाथस्य स्वरूपम्।।

(श्री गोरक्षनाथजी का स्वरूप)

"श्री उदयनाथ पार्वत्युचः"

आदिनाथः महायोगि गुरु गोरक्ष सर्वात्मनः।
कोऽयं मनसा कपटं न करोति सः।।१।।
शिष्यस्य संशयं नश्यन्तु शपथं मे।
सत्गुरु सैव शिष्यं संशयं सदाविनश्यति।।२।।

भावार्थः-श्री उदयनाथ पार्वति ने कहा हे आदिनाथजी जो महायोगी गुरु गोरक्षनाथजी सर्व रूपों में अवस्थित है। वह कौन है ? हे नाथ जी बताइए कपट ना करे, हे नाथजी यदि बताने में कपट करे तो आपको मेरी सौगन्ध (शपथ) जो की शिष्य के संशय को नष्ट करके हे गुरुदेव जी सत्य कहो।।१-२।।

श्रुत्वैतत् उदय वाक्यं प्रहस्यो वचांसि च।

"श्री आदिनाथ उवाच"

प्रिय शिष्य श्रृणु मद्वाक्यं सर्वज्ञः गोरक्ष नाथः।।३।।
यो यति गोरक्षनाथः सर्वात्मा सर्वज्ञ रूपिणम्।
सर्वात्मानो सर्वभूतेष आत्मबद्धधिष्ठितः।।४।।
ब्रह्मचर्याणां यतीनां च गोरक्षः सत्य परमात्मनः।
गुरु गोरक्ष नामेन विख्याता जगदेतच्चराचरम्।।५।।

अन्यथानास्ति सर्वभूषेतु गोरक्षः स्थितः।
सैव ब्रह्मेति जानी हि यज्ञार्थ दर्शनानि च ।।६।।

भावार्थः-उदयनाथ पार्वति के उक्त कथन सुनकर श्री आदिनाथ जी ने हँसकर कहा ''हे मेरे प्रिय शिष्य उदयनाथ सुनो तुम्हे बताता हूँ जो जती गोरक्षनाथजी सर्वत्र सर्वतो ज्ञान प्राणियों में आत्मारूप में अधिष्ठित है। ब्रह्मचारी तथा सम्पूर्ण जती एवं सत्य गोरक्षनाथ जी परमात्मन रूपी है। वह गुरु गोरक्षनाथ जी नाम से प्रसिद्ध है। हे नाथजी यह सत्य है। अन्य कोई बात नहीं है। वही जती गोरक्षनाथजी रूप से विख्यात है। यह निरसन्देह सत्य है। यज्ञ और दर्शन शास्त्र के लिए वे ही ''ब्रह्म'' है, ऐसा जानो।।३-४-५-६।।

यथा यथा च निर्झरी जल निर्यान्ति सागरे।
लीयते पुनरस्या च तस्य नाथ उदय।।७।।
इदं गोरक्ष व्यक्ता-व्यक्त जगदेतच्चराचरम्।
स्थूलं सूक्ष्मं परंतेजो गोरक्ष च गोरक्षं निरंजने।।८।।
अपरमिता शक्त्याधारो दयौघः सदन नाथ!।
भुक्ति मुक्ति ज्ञानौघः सच्चिदानन्द सागरः।।९।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती जैसे-जैसे सागर में जल लहरे उत्पन्न होते है और उसी में लीन हो जाते है। उसी प्रकार श्री गुरु गोरक्षनाथजी इस सार जगत चराचर में प्रगट (उत्पन्न) होते है और अप्रगट (विहीन) हो जाते है। वह स्थुल-सूक्ष्म तथा परम तेजस्वी गुरु

गोरक्षनाथजी अलख निरंजन अवस्था में असीमित शक्ति का आधार है और अपार दयामय है। हे नाथ वह मुक्ति दायक, ज्ञान दायक तथा सच्चितानन्द मय है।।७-८-९।।

विश्वम्भरो क्रिया शक्तिः गोरक्ष सनातनः।
यावत् यज्ञ कर्म-समाप्तौ च दक्षिणैव यभीष्ठदम्।।१०।।
मुक्तिः नाथ सर्वेषां फल-दायकम्।
तथा हि कर्मोधार गोरक्ष कथ्यते वर योगिने।।११।।

भावार्थः- वह विश्व का पालन करने वाले क्रिया-शक्ति और सनातन श्री (गोरक्ष) नाथ है। जिस प्रकार यज्ञादि कर्मो का समाप्ति पर ''दक्षिणा'' ही अभीष्ट फल देती है। उसी प्रकार हे (उदय) नाथजी वे ही मुक्ति और सबके अभीष्ठ फल को देने वाले है। इससे हे योगिनी वह कर्मो का आधार गुरु गोरक्षनाथ कहे जाते है।।१०-११।।

महासत्वो महामन द्यति-प्रिय विभावसु।
चिरनाथं चारु रूपं मृत्युञ्जय उदये।।१२।।
अहमेवास्मि गोरक्षो मद्रूपस्तन्निबोधतः।
योगमार्ग प्रचारार्थं ममैव रूप मिदं घृतम्।।१३।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती वह महाबलवान मनस्वी तेज-प्रिय जो अग्निस्वरूप है। वह ॐ कार आदिनाथस्वरूपी एवं नित्य सुन्दर रूप वाले और मृत्यु को जितने वाले (मृत्युंजयो) मनन शील गोरक्षनाथजी मैं ही हूँ गुरु गोरक्षनाथ जी को मेरा ही रूप समझो

योग मार्ग (मंत्रयोग तंत्रयोग आत्म योग इत्यादि) प्रचार-प्रसार के लिए मैंने यह रूप धारण किया है।।१२-१३।।

आगम-निगमागमानां तन्त्रशास्त्राणां च सदा शिवः।
उक्तानि सर्वाणि तन्त्राणि तथा न्यान्येति निर्णयायकः।।१४।।
कृत्वा संकल्पमित्यस्य कर्मसिद्धये बुधः।
पठति पाठयति श्रृणोति श्रावयति च।।
तं तें काममवाप्नोति श्री गोरक्षस्य प्रसादतः।
यथा पारसमणि नाथ तथैतत् तन्त्रमुत्तमम्।।१६।।

भावार्थः- आगम-निगम या तन्त्र-शास्त्र का निर्णय है कि सदा शिव स्वरूपी गुरु गोरक्षनाथजी दिव्य वर्ण से प्रकाशित है। सभी तन्त्रों में ऐसा ही कहा है, अन्य बात नहीं, यही निर्णय है। संकल्प कर जो बुद्धिमान काम्य कर्म के लिए इस गोरक्ष तन्त्र का पाठ करता है करवाता है, अथवा सुनता है, सुनवाता है, वह श्री मद गोरक्षनाथजी के कृपा से उन उन कामनाओं को प्राप्त करता है। हे (उदय) नाथजी पारसमणि के समान यह गोरक्ष तन्त्रम उत्तम फल-दायक है।।१४-१५-१६।।

यथा कल्पः मनुष्याणां सर्वाणिफलानि प्रददाति।
तथैवमनीषिभिः मंत्रतंत्राणि ज्ञातव्यम्।।१७।।
यथा सागरे सन्ति रत्नानि भुक्तिमुक्ति तिष्ठति मंत्रकम्।
देवानामाश्रयमेरु सिद्धीनामाश्रित मन्त्रतन्त्रादिकम्।।१८।।

भावार्थः- जिस प्रकार कल्पवृक्ष सभी फलों को प्रदान करता है। वैसा ही इस तन्त्र को मनीषियों को जानना चाहिए। जैसे सभी प्रकार के रत्न समुद्र में रहते है। वैसे ही हे योगिनी सभी सिद्धियाँ-भुक्ति और मुक्ति इससे मिलती है सब देवो का आश्रय जैसे मेरु पर्वत है। वैसे ही यह तन्त्र सभी सिद्धियों का आश्रय है।।१७-१८।।

उदयनाथ पार्वती सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।
दिव्यास्त्र शस्त्रादि युक्त मन्त्र च सत्य कथयामि।
यस्य गेहे स्थितं यां यंत्रं शस्त्रास्त्रादि युक्तम्।।१९।।
तस्यगेहे दुःख व्याधि शमनं सर्वपापविनाशन्।
चौरात्मय नास्ति नास्ति ग्रहादि राज भयम्।।२०।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती मैं सत्य कहता हूँ दिव्य अस्त्र तथा शस्त्रादि से युक्त यह मन्त्र है। जिसके घर में भय को दूर करने वाले यह तन्त्र विद्यमान है; उसके यहां दुः ख अधिव्याधियाँ और पापों का सब कुछ नष्ट हो जाता है। न वहां चोरों का भय रहता है, न ग्रहों या राज-दण्ड का भय।।१९-२०।।

नारिष्टं दुर्जनेभ्यः चित्ताशोकं कदापि न।
न चिन्ताशोकं हि भयं नैव मयोदितम्।।२१।।
प्रेत भूत पिशाचानां दैत्यदानवाः च राक्षसाम्।
भयं न स्यात कोऽपि हिंसकाः व्याघादीनामपि।।२२।।

भावार्थः- घर में न संकटों का भय रहता है न दुष्ट

दुर्जनों का उनको कभी चिन्ता-शोक नहीं होती न किसी अन्य प्रकार का भय रहता प्रेत भूत पिशाच और दैत्य दानव राक्षसों का न व्याघ्र आदि हिंसक पशुओं का भय उन्हें नहीं होता है। यह मेरा कथन है।।२१-२२।।

यक्ष किन्नरादि भय नस्यात् वेतालानां भयं तथा।
गणगंन्धर्वा सर्वेषां न च शंखनीना तथा।।२३।।
त्रिलोके च महोत्सवो ये ये सन्ति भयानकाः।
ये अरिष्ट कारश्चैव न तेषां भयं योगेश्वरि।।२४।।

भावार्थः- यक्ष किन्नर आदि का भय नहीं होता, न वेताला आदियों का सभी गणों गन्धर्व तथा डरावनी शंखनी आदि का भी भय नहीं होता। हे योगेश्वरी तीन लोक में जो-जो भयानक और अरिष्टकारक जीव है। उन सब का भय भी उन्हें नहीं होता।।२३-२४।।

मृत्युजिन्मुनि च तस्य मुच्यत्याशापाशं तथा।
वदाम्यं सत्यं सत्यं शपथं प्रिय उदय।।२५।।
धनं धान्यं च सम्पत्तिं तिष्ठति सप्त-पौरुषम्।
तेषां सर्वेषां मनोरथं परिपूर्ण प्रसादतः।।२६।।

भावार्थः- उसके आशापाश से न छुटते भी मृत्यु को जितने वाले हो जाते है। हे प्रिय उदयनाथ (पार्वती) मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ। उसकी धन धान्य असीम सम्पत्ति सात पीढ़िओं तक विद्यमान रहती है और उनके श्री नाथजी की कृपा से सर्वा सर्व मनोरथ परिपूर्ण हो जाते है।।२५-२६।।

एतत् ते कथितं उदय न व्यक्तं कदाचन्।
परमं गुह्यं गोपनीयं सदा उदय।।२७।।
भ्रष्टानां साधकानां च सान्निध्यं न वदेत्कदाचन्।
दाम्भिकाय न दातव्यं नाभक्ताय विशेषतः।।२८।।
मुढ़ाय भावहीनाय दारिद्राय ममाज्ञया।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वति यह सब मैंने जो कथन किया है, इसे कभी प्रगट ना करे। यह परम विशेष रूप से रचा गया इसे सदा सर्वदा गुप्त ही रखे। भ्रष्ट साधको के सन्मुख भी इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए। विशेषकर अहकारी मूर्ख भाव शून्य दरिद्र और भक्तिहीन लोगों को इसे नहीं देना चाहिए, यह मेरी आज्ञा है।।२७-२८।।

दद्यात् ज्ञानाय शान्ताय शुद्धाय योगेश्वरी।
नाथ भक्ताय-शैवाय वैष्णवाय शिवाज्ञया।।२९।।
भाव भक्ति युक्ताय महायोगी विरक्ताय च।
सर्वेषां वन्द्य कायाऽपि शिवाय प्रणताय च।।३०।।

भावार्थः- हे योगेश्वरी भक्ति भाव से युक्त शान्त शुद्ध ज्ञानी श्री नाथजी के भक्त शैव वैष्णव महायोगी त्यागी विरक्त सर्वत्र वन्दनीय विनम्र शिव स्वरूप साधक को ही इसे देना चाहिए। यहि शिव आज्ञा है।।२९-३०।।

।।इति श्री गोरक्षतन्त्रे उदयनाथ आदिनाथ।।

संवादे अष्टमःअध्याय समाप्त

अथ नवमोऽध्यायः

।। गोरक्षं-पीठ तीर्थ वर्णनम्।।

(श्री गोरक्षनाथजी के पीठ अर्थात तीर्थ क्षेत्रों का वर्णन)

"श्री उदयनाथ उवाच"

गोरक्षं पीठं विशुद्धं स्थाने वद में आदिनाथ।
यस्मिन् सिद्ध स्थानंच महात्म्यं किं प्रयोजनम्।।

भावार्थः- श्री उदयनाथजी के कहा हे आदिनाथ जी मुझे गुरु गोरक्षनाथजी के शुभ-शुद्ध तीर्थ स्थान अर्थात गोरक्षपीठ को बताइए, जिन सिद्ध स्थान महात्म्य का किस प्रकार प्रयोजन है?

"श्री आदिनाथजी उवाच"

गोरक्ष पीठं प्रवक्ष्यामि, सादरं श्रृणु योगिणे।
अलख क्षेत्र शिखरे च वायुलोके योगारुह्यम्।
तत्र महापीठे सःगोरक्षं त्रयलोके च वन्दिताः।।२।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे योगिनी मैं श्री गोरक्षनाथजी के पीठ स्थानों को कहूँगा आदर सहित सुनो अलख क्षेत्र नाम के शैल (कैलास) पर्वत पर जहां वायु लोक में योग पर आरुढ़ होकर गोरक्षनाथ जी निवास करते है वहां महापीठ में उन गुरु गोरक्षनाथजी को तीनों लोक वन्दन करते हैं।।२।।

नेपाले मृगस्थल्यांपीठे पशुपतिं विराजितम्।
हरिद्वारे महापीठे श्री नाथस्य सभा शुभाः।
तत्र पूजयन्ति जनाः सर्वे श्री नाथस्य पादुकाम्।।

भावार्थः- नेपाल में मृगस्थली (पीठ में) श्री पशुपति नाथजी अर्थात् गोरक्षनाथजी विराजमान हैं और हरिद्वार के महापीठ श्री नाथजीकी (नाथ सम्प्रदाय की) शुभ सभा है वहां संसार के लोग श्री नाथजी के चरणपादुका की पूजा करते हैं।।३।।

इरावती नद्या क्षेत्रे गोरक्षपुरी स्थान नामकमुत्तमम्।
नद्योत्तरे गोरक्ष पीठो सिद्धिदं सुपुण्यदायकम्।।४।।
तदुत्तरे शक्ति पीठः देवी पाटेश्वरी सुशोभिता।
तत्र गुरु गोरक्षस्य हस्त पादौ च स्थापितम्।।५।।

भावार्थः- इरावती नदी क्षेत्र में गोरखपुर नाम का उत्तम स्थान है और (नदी के) उत्तर में गोरक्षनाथजी का पुण्य प्रद गोरक्ष सिद्ध पीठ है। उत्तर दिशा में देवी पाटेश्वरी का शुभ शक्ति पीठ है वहां गुरु गोरक्षनाथजी के शुभहस्ते पात्रदेवता (स्थापित की) रचना की है।।४-५।।

पातालभुवनेश्वरअल्मोड़ाजनपदे कल्याणमयी गुहाऽस्ति।
जती गोरक्षनाथो तत्र योगे विराजितम्।।६।।
नेपाले द्वादशपत्तनी मत्स्येन्द्रं नाथो विराजिते।
तत्रैव नागजा मीननाथश्च वभूव पाणिग्रहणम्।।७।।

भावार्थः- पाताल भुवनेश्वर (अल्मोड़ा) में कल्याणकारी गुफा है जहां जती गुरु गोरक्षनाथजी ध्यान योग में

विराजे है और नेपाल में वारहनगर (द्वादश पत्तनी) मे सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथजी विद्यमान है जहा नागजा और मीननाथ जी का विवाह हुआ।।६-७।।

कैलासाचलनामास्ते शैल सुन्दरशेखरः।
तस्योपरि विराजन्ते समपादाम्बुजास्त्रयः।
शिवमत्स्येन्द्र गोरक्षः दण्डपाणि भैरवादयः।।८।।
तत्र तिष्ठन्ति सर्वे त्रिवेण्यां दैवैर्सह।।

भावार्थः- कैलास नाम का सुन्दर चोटी वाला पर्वत है। उसके ऊपर तीन चरण कमल विराजमान है। शिव मत्स्येन्द्रनाथ दण्डपाणि गोरक्षनाथ भैरव सर्व देवताओं के साथ त्रिवेणी में है।।८।।

श्री मद् गोरक्षरश्मिश्च टीलाभ्यान्तर स्थानं शुभम्।
तत्र भर्तृहरिनाथेन मृत्कायानाथं पुनरेव जीतिवम्।।९।।
तत्रैवसिद्धगौरैयानामाख्यं स्थानं परमं प्रसिद्धम्।
तत्र विप्र गृहे स्थित्वा गुप्तरूपेण नाथेन।
द्वादशवर्ष पर्यन्तं यावत् माःक्रीडां च चचार।।१०।।

भावार्थः- श्री गोरक्ष टीला जो किरण टीला के (अन्दर) शुभ स्थान है। वहां श्रीमान भर्तृहरिनाथजी ने मृत कायानाथ को स्पर्श कर जीवित किया था। वहां सिद्ध गौरियाँ नाम का परम पावन स्थान है वहां श्री गोरक्षनाथजी ने गुप्त रूप से एक ब्राह्मण के घर बारह वर्ष तक गाय चराया था और क्रीड़ा की थी।।९-१०।।

पुरा युगादितःश्रीनाथ योगीवाटं स्थानं नामकम्।

तत्र द्वादश पन्थानां योगीनां शासकाःसन्ति।।११।।
यस्मिन् ज्वालामुखी शक्तिरेव विराजिता।
तत्र गोरक्ष मञ्जूषा ज्योतेदर्शनं भवन्ति।।१२।।

भावार्थः- युग के आदि से ही श्रीनाथजी योगीवाट नामक स्थान है यहा बारह पन्थ योगियो का शासन है और साक्षात् ज्वाला मुखी शक्ति विराजमान है वहां गोरक्षडिब्बी स्थान में ज्योति के दर्शन होते है।।११-१२।।

शुभस्थाने सारंगकोट्टे सारंगदैत्यं च मर्त्य।
तस्यास्थिमांसैर्दुर्गमेकं नर्मापांचकार।।१३।।
अटकदर्या नामका सिद्धपीठोऽभूत्।
पुरा तत्रैव गोरक्षनाथो पीठाधिश्वरो बभूव।।१४।।

भावार्थः- शुभ स्थान सारंगकोट मे सारंग दैत्य को मारक उसके अस्थि और मांस से इस दुर्ग का निर्माण किया था और वहां अटकदर्या नाम का पीठ प्रसिद्ध है वहां प्राचीन काल में श्री गोरक्षनाथजी पीठाधीश हुये थे।।१३-१४।।

मनः करण पीठे नवनाथानां सिद्धासनम्
नवनाथैक डिब्बी का।
कौव चतुरसीति सिद्धनामप्यासनम।
यत्तपप्रभावेण सततं जलं प्रादुर्भवेत।।१५।।

भावार्थः- मनः करण धाम (पीठ) में नवनाथों की डिब्बी का (गद्दी अर्थात् सिद्धासन) है, वहां चौरासी सिद्धों की भी डिब्बी का है. जिनके तपो प्रभाव से वहां सदा जल (बहता) निकला है।।१५।।

अस्ति देवलगढ़ नामकं पुरीं चिचेणिके तीर्थं प्रसिद्धम्।
ततः बद्रीकेदारशिखरयोः भवतः शुभदर्शनम्।।१६।।

भावार्थः- देवलगढ़ नाम की पूरी तथा चिन्चेणिक नाम के तीर्थ है। वहां से वद्रीनाथ, केदारनाथ पर्वतों के दर्शन होते हैं।।१६।।

पश्चिमेबंगदेशे विशालायानामक सिद्ध पीठम्।
तत्र गोरक्ष नाथस्य शक्ति शिष्या च विमलामतिः।।१७।।
कणेभ्यःकणकार्याति, तुषकायी तुषान्ययात।
सिद्धात्मानांवृभौवालौ जातो नाथ प्रभवेत।।१८।।

भावार्थः- वंगदेश (वांगलादेश या पश्चिम वंगाल) में सिद्ध पीठ विशालक नाम का ग्राम है वहां श्री गोरक्षनाथ जी की विमलानाथ शक्ति शिष्या है। वहां कणों से कणकायी और तुषों से तुषकायी (अर्थात भुसों से भुसकाई और कनों से कनकाई) नाम के दो (पुत्रों को) नाथ सिद्ध आत्मा को (गुरु गोरक्षनाथजी ने) उत्पन्न किया था।।१७-१८।।

पूर्वस्यां उत्कलं नामकं सिद्धकुण्डं चतुर्थकम्।
यो महापापानं पापं विनाशयेत्।
तत्र गोरक्षनाथं सिद्धनाथमुच्यते।।१९।।

भावार्थः- पूर्व दिशा में उड़ीसा नामक चौथा सिद्ध कुण्ड है; जो महापापों का उच्छेद (विनाश) करने वाला है। वहां श्री गोरक्षनाथजी को सिद्धनाथजी नाम से पुकारे जाते है।।१९।।

बंगदेशे सिद्धपीठे गोरक्षबन्सिका।
गोरक्षो मूर्तिमास्तत्र राजते बन्सिविभूषणम्।।२०।।
पूर्वस्यां सिद्धंकालिंच उत्तरस्यां कामाख्या तथा।
तत्रैव जनाः पूज्यन्ते, श्री गोरक्षनाथकम्।।२१।।

भावार्थः- बगाल देश मे गोरक्षबन्सि नाम का सिद्ध पीठ हैः यहा बन्सि (भूषण) धारण किये हुये श्री गुरु गोरक्षनाथजी साक्षात विराजमान है। उसी पूर्व दिशा में काली का स्थान एवं उत्तर में कामाख्या नाम का स्थान है। वहां श्री गुरु गोरक्षनाथजी के लोक पूजन करते है।।२०-२१।।

अस्ति गंडकी नद्यातटे हरिहर तीर्थ संगमे।
अश्वस्थाद्योः गुरुगोरक्ष विराजिता।।२२।।
काशी क्षेत्रे मन्दाकिनी पुष्करिष्यास्ति पीठम्।
तत्र द्वादश पंथीनां योगिनः सदाऽनन्दितः।।२३।।
फल्गुतीर्थस्यसन्मुखे गयानामक नगरम्।
अस्मिन्नेव पिण्डदानेन वैकुण्ठं तदागमत् जनाः।।२४।।

भावार्थः- गंगा गण्डकी नदी के संगम पर हरिहर तीर्थ है। वहां पीपल के पेड़ के नीचे गुरु गोरक्षनाथजी विराजित है। काशी क्षेत्र में मन्दाकिनी पुष्करिणी नाम का स्थान (पीठ) है वहां बारह पंथ के योगी लोक रहते हैं। यहां फल्गु तीर्थ के सन्मुख गया नाम का नगर में श्री गोरक्षनाथजी का पीठ है। वहां पिण्डदान प्रदान किया जाता है।।२२-२३-२४।।

नग्नो नग्नाख्य देशेक्त ॐ कारेश्वरीनामकम्।
श्री आदिनाथ सिद्धेशों विराजितं तत्पदम्।।२५।।

भावार्थः- नग्न (नागा) देश में नग्न ॐ कारेश्वर नाम से आदिनाथ सिद्ध उस उत्तम पद पर विराजमान है। वहां श्री गोरक्षनाथजी का आसन और चरणकमल सुशोभित है।।२५।।

इतः प्रतीच्यां सौराष्ट्रे राष्ट्रे रैवतकाचलः।
तत्र गोरक्षनाथस्य शिखा भाति सुन्दरम्।।२६।।
तद्धो वर्तते तीर्थ श्री गोरक्ष कमण्डलुम्।
तत्रैव नवनाथानां स्यातुंमुख्यस्थली।।
चतुराशीति सिद्धानां महापीठं च कथ्यते।।२७।।

भावार्थः- पश्चिम दिशा में सौराष्ट्र राष्ट्र (गुजरात में) रैवतक (गिरणार) पर्वत है। वहां श्री गोरक्षनाथजी की सुन्दर चोटी (गुफा) शोभायमान है। उसके नीचे श्री गोरक्ष कमण्डु तीर्थ है। उसी प्रकार नवनाथों की स्थिति के लिये यह मुख्य स्थान है, चौरासी सिद्धों का उप महापीठ भी यह कहा जाता है।।२६-२७।।

पश्चिमायामास्ति प्रभास क्षेत्र मुत्तमम्।
तत्र गोरक्षमणिकानामो धामोऽस्ति पावनम्।।२८।।
तत्र रुक्मणि कृष्णयोः पाणिभूतमुत्तमम्।
गोरक्षनाथेन रुक्मिणिं कंकणं बंधनम्।।२९।।
ततस्तौ प्रपूजनं कृत्वा नाथस्तत्रैव स्थितम्।
युगादि स्थान नाथस्थ सिद्धेम्यः महोत्तमम्।।३०।।

भावार्थः- इससे पश्चिम दिशा में श्रेष्ठ प्रभास क्षेत्र है। वहां गोरक्षमढ़ी का नाम का परमधाम है। वहीं रुक्मिणी और श्रीकृष्ण जी का परिणय (विवाह) हुआ था। वहां श्री गोरक्षनाथजी ने रुक्मिणी को कंकण बांधा था। तद्पश्चात दोनों ने (रुक्मिणी श्रीकृष्ण) ने श्री नाथ जी का पूजन करके श्री गोरक्षनाथजी वहीं प्रतिष्ठित हुये यह श्रीनाथजी का युगादि स्थान सिद्धों का महान पीठ है।।२८ २९-३०।।

यः मध्ये सिन्धुद्वीपमिदं राजते द्वारका पुरीम्।
नवनाथानां चतुरशीति सिद्धाग्नि धानी विराजते।।
हरति तद्दर्थनात्पापं तथा मोक्षदायकम्।।३१।।

भावार्थः- जो समुद्र के मध्ये द्वारकापुरी मुक्तिदायक द्वीप विराजमान है। वहां नवनाथ चौरासी सिद्धों की अग्नि धानी (धुना) भी विराजमान है। जिसका दर्शन पापों का विनाश करने वाला और मोक्षदायक है।।३१।।

धुर्मनाथो महासिद्धो राजते कच्छ देशगो।
तत्र पापानां हर्तु हुतमुर्ग नामकं धूनकम्।।३२।।
अस्तिकन्थडकोटाख्यो ग्रामः सर्वत्र विश्रुतः।
तस्मिन श्री कन्थडीनाथस्यासनं वर्तते शुभम्।।३३।।

भावार्थः- श्री महासिद्ध धुर्मनाथजी कच्छ देश में विराजे है, वहां उन पापों को दूर करने वाली हुतमुर्ग धूपनी (धूना) है कन्थ कोट नाम का ग्राम है, जो सर्वत्र प्रसिद्ध है, उस ग्राम में गजवेली गजकन्थड़ नाथ (श्री गणेश अवतार नवनाथों में एक नाथसिद्ध) जी का शुभ

आसन विद्यमान है।।३२-३३।।

सिन्धुनामके देशे सिद्धों समाधि पीठकम्।
वीरनाथ कच्छेली पीठं विश्वविदितम् सदा।।३४।।
सिन्धुद्वीपे द्रुमचनामप्रदेशः श्री नाथस्य गुहावरा।
तत्रयात्रां दर्शनंकृत्वा जनाः भवन्ति पवित्रम्।।३५।।

भावार्थः- सिन्धु नाम के देश मे सिद्ध पीठ है. वहा वीरनाथजी (चौरासी सिद्धों में एक) का कच्छेली नामक पीठ विश्वविदित है और समुद्र के द्वीप में द्रुमच नामक पदेश है वहा श्री (गोरक्ष) नाथजी की श्रेष्ठ गुफा है। वहां लोक यात्रा एव दर्शन कर पवित्र हो जाते है।।३४-३५।।

अतः सिन्धोर्तटे विराजते धवलोगिरिः।
हिंगुलाजती विख्याता तत्रशक्त्या विराजिताः।।३६।।

भावार्थः- इसके बाद सिन्ध के किनारे धवलगिरि विराजमान है जहां हिंगुलाजा नाम की (देवी) शक्ति विराजमान है।।३६।।

कदली धामतत्रास्ति जनानां मुक्तिदायकम्।
युगादिद्वापरादौ स्थानं तमुच्यते।।३७।।
तत्र प्राच्यादिशि ऐल्दलंग्रामको नाममुच्यते।
गोरक्ष पर्वतश्च उत्तरे पितामह गिरि स्थितः।
तत्रैव गोरक्ष नाथस्य जनैपूजितं चरणपादुकाम्।।३८।।

भावार्थः- लोगों को मुक्ति पदान करने वाला वहां कदली धाम है. उसे द्वापर युग का आदि स्थान कहते

है। वहां पूर्व दिशा में इल्वल नाम का ग्राम है तथा वहां गोरक्ष पहाड़ और उत्तर दिशा में पितामह गिरी स्थित है लोगों द्वारा श्री गोरक्षनाथजी की चरण पादुकाएं पूजित है।।३७-३८।।

अथ कर्णाटके पीठे भैरव चुंचुनागिरीः।
पश्चिमे भिद्रुंगःपर्वतो एवं गोरक्षडिब्बीका।।३९।।
बालबाटी च सिरियाण च स्वर्णमयी भैरवादयः मिथ।
तत्र रेणुकाख्या शक्त्या सह नाथ पून्य विराजते।।४०।।

भावार्थः- कर्णाटक प्रान्त में भैरव चुंचुनगिरी पश्चिम दिशा में भिद्रुग पर्वत तथा गोरक्ष डिब्बी और बालवाटी और सिरियाण तथा सुनहरि भैरव इत्यादि सिद्ध पीठ है वहां शक्ति रेणुका माता सह श्री गोरक्षनाथ पूजनीय विराजमान है।।३९-४०।।

त्र्यम्बके कोलागिरिशिखरेऽनुपान पट्टतीर्थोऽत्र।
तत्रैव गौमुख च गोरक्षदरी ध्यान विराजिते।।४१।।
तीर्थ तोरणमालाख्या च विराड़ देशोऽग्निकोणके।
तत्र गुरु गोरक्ष नाथस्य पूजितं चरणाम्बुजम्।।४२।।

भावार्थः- त्र्यम्बकेश्वर (महाराष्ट्र) में कोलागिरी पर्वत पर अनुपान शिला का तीर्थ है वहां गौमुख (गोदावरी नदी का उगमस्थान) और गोरक्षनाथ जी की गुफा है जिसमें ध्यान विराजित है तथा तोरणमाल तीर्थ और अग्निय कोन में विराड़ देश तीर्थों में श्री गोरक्षनाथजी की चरण (पादुका) कमल पूजित है।।४१-४२।।

अस्यामुत्तरेदिश्येति धवलाचलः महत्पीठम्।

तत्र शक्ति, ऋंगेरीपादयोः नाथ सिद्धो विराजते।
तस्यैवोपासकाः प्रायः निवसन्ति सुखं जनाः।।४३।।

भावार्थः- इसके उत्तर दिशा में धवलाचल नाम का महापीठ है; वहां शक्तिपाद और श्रृंगेरीपाद नाथ सिद्ध विराजमान है। उनके उपासक लोक सुख पूर्वक निवास करते है।।४३।।

तत्र धूलिकणिकैरनायासेन स्वर्णशिखरं निर्मितम्।
सैव ईषरो शिखरः चित्तौरदुर्गान्तर्गोमुखोत्तमो-
पीठः।।४४।।
अस्मिन्नेव पवित्रतमे तीर्थेगोरक्ष विराजितम्।
तत्रैव गोरक्ष नाथस्य चरण पादुकां पूज्यते।।४५।।

भावार्थः- वहां श्री गोरक्षनाथ जी ने धूल के कणों से अनायास ही सोने का पहाड़ बना दिया वह इषारा नाम का पहाड़ है। इससे चित्तौर दुर्ग के अन्तर्गत गोमुख नामक उत्तम पीठ है, वहां गोरक्षनाथजी की चरण पादुका की पूजा होती है।।४४-४५।।

अस्मिन्नेव पश्चिमेदेशे पुरानामको ग्रामः।
पुराभर्तृहरिणा तपस्तेपेऽडतिदारूणम्।।४६।।
अथ विघ्नाय नमसः पतःविपुला शिलाम्।
घृत्वा कन्निष्ठाग्रे आच्छादितं गगन सम्पूर्णम्।।४७।।

भावार्थः- इसके पश्चिम देश में पीछे पुरा नाम का ग्राम है, वहां प्राचीनकाल में भर्तृहरिनाथजी ने अति दारूण तप किया था विघ्न (इन्द्रदेव ने परीक्षा लेने) के

लिये आकाश से गिरती हुई शिलाओं को कनिष्ठा (अंगुलि) के अग्रभाग से आकाश में छाते के समान धारण किया था।।४६-४७।।

इन्द्रस्थ पीठे च मण्डुकी पाद तधून्नी स्तथा।
लब्धावासः तीर्थश्च चोली रांख्य शुभासनम्।।४८।।
गहेलारावलस्तत्र मूर्ति मान स्ववाहनेव विद्यते।
नाथस्थ राजते तत्र परा चरण पादुका।।४९।।

भावार्थः-इन्द्रप्रस्थ और मुंडुकीपाद धूपनी (धूना) तथा लब्धवारा (आंजनग्राम) तीर्थ और चोलि (आसन) नाम के शुभ आसन है। वहा साक्षात गहेल्ना रावल (चोरासी सिद्धों में से एक) अपने वाहन के साथ विद्यमान है। जो श्री गोरक्षनाथजी की परा चरण पादुका भी है।।४८-४९।।

अथः कन्जलि पादोऽस्ति तथास्ते नाथ धून्नी।
यत्र स्थापितंस्थली पटं योगिभिः राता द्वादेशः।।५०।।
नाथाधिकारेअलवर तिजारानामाख्या पुरं महत्।
एकागुहा भर्तृहरिरास्ते पूजितं निर्जने बनं।।५१।।
इतः पुनस्तत्र देशे शेषावटीतिनामतः।
तत्र श्री गोरक्ष नाथस्य विराजते चरणपादुकाम्।।५२।।

भावार्थः- अब कन्जलीपाद तथा नाथ धूपनी (धूना) है। यहां वारह (यात्री) नाथ योगियों के द्वारा स्थापित स्थलपटी है। श्री नाथ जी के अधिकार में अलवर तिजारा नाम का नगर है। वहां निर्जन वन में

श्री भर्तृहरि नाथजी की गुफा पूजित है। यहां शेषावटी नाम से स्थान है। वहां श्री गुरु गोरक्षनाथजी के चरण कमल है।।५०-५१-५२।।

अस्तिमरुदेशस्य मारवाडान्तर्गते जालन्धरे पुण्यतीर्थो।
कलशाचलनामाद्रिस्तत्र सन्तिष्ठते महान।
श्री मज्जालन्धरी नाथः साक्षात्तत्र विराजते।।५३।।

भावार्थः- अतः मरुदेश के मारवाड़ अन्तर्गत जालंधर नामक तीर्थ स्थान है जहां कलशाचल नामक महान् पर्वत विराजमान है। वहां साक्षात् श्री जालंधरनाथजी विराजमान है।।५३।।

कपाली चन्दकूपोच सूर्य कुण्डं तीर्थमद्वितीयकम्।
महापीठोऽयं भोगमोक्षेक मात्रं साधनम्।।५४।।

भावार्थः- कपाली और चन्द्रकूप, सूर्यकुण्ड अद्वितीय तीर्थ है। यह भोग और मोक्ष के एकमात्र प्रदाता महा पीठे है।।५४।।

कणीपादो महासिद्धः कणेरीपाद एव च।
हरीताली पादहाली नाथायः योगिनोऽपरे।।५५।।
एवं राष्ट्रोडुवशीयो मालदेवो महातपाः।
रावलोऽपि महातेजश्च मान्धाता तपीश्वरो।
लभेमनोऽभिलषितं वरं श्री नाथ पादतः।।५६।।

भावार्थः- कणीपाद (कणीफनाथ) कणेरी पाद (कानिफनाथजी) हरीतालीपाद (हरीतालीनाथजी) हालीपाद (हालीनाथ जी) आदि महासिद्धों ने एवं

महातपस्वी उडुवंशीय राजा मालदेव तथा महातेजस्वी रावलजी और तपीश्वर राजा मान्धाता इन्होंने श्री (गोरक्ष नाथ, जालन्धर नाथ) नाथजी के चरणों के अनुग्रह से मनोवांछित वर पाया था।।५५-५६।।

ईदृशः तीर्थराज्ञां महिमा केन वर्णितम्।
एतान्सिट्टपीठान् सततं नमामः वयम्।।५७।।

भावार्थः- इस प्रकार इन तीर्थराजयों की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है इन पीठ श्रेष्ठ को बारम्बार नमस्कार है।।५७।।

यदि निर्जने स्थले, बने मध्येऽथवा कस्मिन बिल्वादि वने।
दुर्गमे घुणाक्षारण्ये मध्येऽथवागोरक्षमूत्थति।।५८।।
शुक्ल पक्षे, गुरुपुष्यौ अमृत सर्वार्थ सिद्धयोगे।
ग्रहण काले च योगिनी तत्र सिद्धिरनुत्तमम्।।५९।।

भावार्थः- हे योगिनी यदि किसी निर्जन स्थान में वन के बीच या किसी बिल्वादि वन में या किसी दुर्गम घने वन के बीच गुरु गोरक्षनाथजी की मूर्ति या धूनी हो तो उन सभी स्थान में बैठकर, शुक्ल पक्ष, गुरुपुष्यामृतयोग, अमृत सिद्ध योग, सर्वार्थ सिद्ध योग में या ग्रहन काल में गुरु गोरक्षनाथजी की साधना करने से अति उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है।।५८-५९।।

अन्यानि सिद्धपीठानि + चास्मिन जगति तले।
देव दानव गन्धर्वाः किन्नराः प्रथमादि यक्षादयः।।६०।।

सर्वे नवङ्गना: किन्नरनारिणस्तथा।
क्रियन्ते पंचतत्त्वै: गुरु गोरक्ष नाथस्य पूजनं सदा।।६१।।

भावार्थ:- अन्य भी नाथ सिद्धों के पीठ संसार में है, इसमें सन्देह नहीं। वहां देव-दानव गन्धर्व, किन्नर, प्रथमादी, यक्ष आदि सभी नायिकाएं, किन्नरियाँ और देवता पंच-तत्वां आदि से परम श्री (गोरक्ष) नाथ जी का पूजन करते है।।।६०-६१।।

गुरु सन्निधौ सततं पूजा त्वरितमेव फलं दायकं।
मिलतिद्विगुणंफलं सप्तपुरीषु पुण्यतीर्थेषु।।६२।।
नाथ सिद्धानां तपोभूमौ नास्ति फलमन्यतीर्थे।
अत: गुरु सन्निधौच तीर्थेषु पुजा करेतु।।६३।।

भावार्थ:- सद्गुरुजी के सहवास में सतत पूजा (कर्म) करने पर शीघ्र ही फल दायक है। उससे दूना फल सप्तपूरियाँ तीर्थों में मिलता है। विशेषकर चारों धामों में उससे भी द्गुना फल मिलता है। (नाथ सिद्धों के) तपो भूमि के समान फलदायक पूजा (जप, तप, कर्म) अन्य किसी तीर्थ में नहीं होती अतः सर्व तीर्थों में सद्गुरु सहवास में ही पूजा कर्म करना चाहिए।।६२-६३।।

हिमपर्वतेषु गंगातटे क्रियतेपूजां प्राप्नोति अनन्तफलम्।
तथैवाप्नोति नाथपीठेषु भूमौ गर्भगृहो।।६४।।
गंगा गोदा फलदा प्रोक्ता नदी संगमे तथा।
सैव फलमाप्नोति जलधौ संगमेतटे।।६५।।

भावार्थः- हिमालय पर्वतो और गंगा किनारे पूजा (कर्म) करने से अनन्त गुणा-फल होता है। श्री नाथ सिद्धों के तीर्थ एवं शक्ति पीठो मे भी और भूमि के गर्भ (तल गृहों मे) में वैसा ही फल मिलता है। गंगा जी गोदावरी नदियों तथा नादियो के संगम पर के समान ही फल-प्रद है। उससे ही नवगुणा फल नदी, समुद्र संगम पर मिलता है।।६४-६६।।

ततश्चतुर्गुणं फलं प्रोक्तं नद्यां कुण्डे च श्रीनाथे।
एवंच्चतुर्गुण फलं प्रोक्त समुद्रान्त द्वीपे सन्निधो।।६६।।
यत्र सिद्धेश्वरो नाथो विद्यमानो मिलति द्विगुणं फलम्।।
ततश्चतुर्गुणं फलं प्रोक्तं कटीतलं जलमध्ये वदन्ति विवुधाः जनाः।।६७।।

भावार्थः- नदी कुण्ड और श्री नाथ सिद्ध कुण्ड में पूजा कर्म का चौगुना फल होता है। उससे तीगुणा फल समुद्र के द्वीपों सानिध्य में मिलता है। जहां नाथ सिद्ध योगेश्वर विद्यमान है वहां द्विगणा फल मिलता है। उससे चौगुना फल कटी तल जल के मध्य में (कमर तक डुबे हुये जल मे खड़ा होकर) बताया गया है।।६६-६७।।

श्री नाथ सिद्धेश्वरस्य जलस्थलेषु कृतांपूजां तथैवाप्नोति फलम्।
श्रीनाथस्य सिद्धपीठेषु देवालर्येषु पूजाः प्रशक्तं च वर्तते।।६८।।
सिद्ध पीठे श्री गोरक्षस्य विद्यते नहि तत् समम्।

सर्वत्रात्मरूपे विद्यते नाथः घटे स्थावरे जंगमे।।६९।।

भावार्थः- श्री नाथ सिद्ध के जल और स्थल सभी स्थानों में की गई पूजा का फल वैसा ही होता है। श्री नाथ सिद्धों देवालयों में श्री नाथ जी की पूजा प्रशस्त है। नाथ सिद्ध पीठों में श्री गुरु गोरक्षनाथ जी (प्रत्यक्ष) विद्यमान रहते है। उसके समान कुछ भी नहीं है। इस प्रकार श्री गुरु गोरक्षनाथजी आत्मरूप से सर्वत्र घट-घट में विराजमान हैं।।६८-६९।।

गुरु गोरक्षनाथस्य तन्त्रयज्ञानां च श्रेष्ठ फलदायकम्।
यत्र विघ्नानां नाशनं गोरक्ष नाथो विद्यते स्वयंम्।।७०।।

भावार्थः- श्री गुरु गोरक्षनाथजी के तन्त्र और यज्ञ (धूनी) मंडल सर्वश्रेष्ठ फलदायक है। जहां विघ्नविनाशक गुरु गोरक्षनाथजी साक्षात विराजमान है।।७०।।

गुरो समीपे कृता पूजां भवति शतगुणाधिकम्।
गुरु गोरक्षाच्छतगुणं फलं हि समुद्रीरितम्।।७१।।
अतएव योगेश्वरी नाथ सिद्धः नाथ भक्तां च।
साधकेभ्यः दुष्टजनान सदा पृथकं भवेयुः।।७२।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती-सतगुरुजी के पास की गई पूजा और जाप का फल गुरु गोरक्षनाथजी के प्रभाव से सौ गुणा अधिक होता है। अतः हे योगेश्वरी, नाथ सिद्ध योगेश्वरों तथा श्री नाथजी के भक्तों का सहयोग लेना चाहिए। दुष्ट-स्वभाव वाले भक्त साधकों से दूर रहना चाहिए।।७१-७२।।

नित्यमेकमादिपीठे वा श्मशानेऽऽन्यपीढेष्वपि।

शक्ति रूपे हि सदा रम्य पीठेऽन्य त्रापि उदय।।७३।।

घट पिण्डे च नाथ शक्ति जाग्रतं सततं योगिनि।
देह पीठं महापीठं प्रत्यक्षं नाथ दरीदृश्यते।।७४।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती एक नित्य आदि पीठ में या श्मशान में या अन्य पीठों में भी (श्री गोरक्षनाथ) शक्ति रूप में सदैव विराजमान रहते है। हे योगिनी घट पिण्ड में श्री नाथ शक्ति निरंतर जाग्रत रहती है। देह पीठ ही महापीठ है। वहां (श्री गोरक्ष) नाथ रुप प्रत्यक्ष दिखाई देता है।।७३-७४।।

किमधिकं वक्ष्यामि पार्वती योगेश्वरि।
ध्यात्वा श्री गोरक्षं देहे मूलमंत्रं सदा जपेत्।।
एतत कर्मपीठे गुह्यमतिगुह्यतरं महत्।।७५।।

भावार्थः- हे योगेश्वरी (पार्वती) इससे अधिक क्या कहूँ। अतः अपने शरीर में श्री मद् गुरु गोरक्षनाथजी का ध्यान कर सीधे मूल मंत्र का जाप करना चाहिए। यह (पूजा) कर्मा (दी) के पीठं गोपनीय से भी अत्यधिक गोपनीय है।।७५।।

।।इति श्री गोरक्षतंन्त्रे उदयनाथ आदिनाथ
सम्वादे नवमःअध्याय समाप्त।।

।। ॐ शिव गोरक्ष योगी नमः।।

अथ दशमोऽध्यायः

।। श्री सद्गुरार्त्तत्त्वम् रहस्यम् ।।

(श्री सद्गुरुजी का तत्व रहस्य)

"श्री उदयनाथ उवाच"

आदिनाथ गुरु तत्वं वैशिष्टयं प्रवोधिताम्।
गुरुगौरवंमहत्त्वस्वादरं च भवति काठिन्यम्।।१।।
तत्रैव परंगुरुः को वा परंकोवा वद् नाथो।
विप्लवा मम सन्देह, कृपासिन्धु महागुरुम्।।२।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ पार्वती ने कहा, हे आदिनाथजी सद्गुरु तत्त्व को विशेष रूप से बताइए। हे नाथजी गुरुता को वहन करना बड़ा कठिन है। मनुष्य में वह किसा आता है। वही परम गुरु या श्रेष्ठतम सद्गुरु कौन है। यह भी हे नाथ जी बताइये। हे महागुरु जी कृपा के सागर मेरे इस संदेह को नष्ट करो।।१-२।।

श्री आदिनाथजी उवाच"

उदयस्य वचं श्रुत्वा प्रोवाच आदिनाथः।
श्रृणु उदय परं ज्ञानं सन्तेभ्यः श्रेयस्कारकम्।।३।।
गुरु गोरक्षंग्रसंप्रोक्तं आदिनाथच स्वरूपिणम्।
ॐ कार ज्योति रूपाय सच्चिदानन्द विग्रहः।।४।।

भावार्थः- उदयनाथ (पार्वती) की वात सुनकर श्री आदिनाथजी ने कहा श्रेष्ठ सन्तों के लिये हित कारक सर्व श्रेष्ठ परंज्ञान सुनो श्री गोरक्षनाथजी ही गुरु कहे

गए है वह आदिनाथजी के ही स्वरूप है और वह ॐ कार का ही ज्योति स्वरूपी सच्चिदानन्द स्वरूप है।।३-४।।

अलख निरंजन च सनातनं परंब्रह्म।
त्वत प्रसादान्महा उदय गोरक्षंऽजरामरः।।५।।
अतः गुरुनैव मनुष्ये, किन्त्वज्ञः कल्पितम्।
दीक्षायै शिष्यानां च मनमुखै न मश्चतिआशापाशात्।।६।।

भावार्थ :- हे उदयनाथ (पार्वती) उन्हीं के प्रसाद से श्री गोरक्षनाथ अजरा अमर है। वह अलख निरंजन सनातन परब्रह्म है। अतः मनुष्य 'गुरु' नहीं है। किन्तु उनकी विवेकहीन कल्पना है। शिष्यों को दीक्षा में मनमुखिता तथा वह आशापाश से नहीं छूटता।।५-६।।

तस्मात योगेश्वरी क्व मनुष्येषु गुरुः।
मनुष्येषु गुरुगौरवं नाथ, कल्पित मात्रमेव च।।७।।
मन्त्र दाता शिश पद मे यद् ध्यानं कुरुते गुरोः।
तद् ध्यानं शिष्य शिरसि चोपदिष्टं न चान्यथा।।८।।

भावार्थ :- इसलिये हे योगेश्वरी. मनुष्यों में गुरुता कहा है ? मनुष्यों मे गुरुता तो कोरी कल्पना ही है भावना ही है। हे नाथ जी उसमे कोइ वास्तविकता नहीं है। जब मन्त्र देने वाले (सतगुरु) अपने शिश के ब्रह्मरंध कमल में सद्गुरु का जो ध्यान (मंत्र को याद करके) करता है। उसी ध्यान (मंत्र को) को शिष्य

अपने सहस्त्रागार कमल मे करता है। इसलिये अन्य कोई बात नहीं है।।७-८।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वराः।
गुरुसाक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।९।।
ध्यान मूलं गुरोमूर्ति पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।१०।।

भावार्थः- सद्गुरुजी ब्रह्मा जी, विष्णु जी और महेश्वर के देवता स्वरूप है। सतगुरुदेव साक्षात परब्रह्म है उन सद्गुरुदेव को मेरा नमस्कार है ध्यान का मूल गुरु (परब्रह्म) है पूजा का मूल गुरु पदम (सहस्त्रगार पद्म) है। मंत्र को मूल गुरुवाक्य अर्थात् परब्रह्म स्वरूप गुरुमंत्र है तो मोक्ष मुक्ति का गुरु कृपा अर्थात परब्रह्म का ज्ञान अर्थात परब्रह्म की अनुभूति है।।९-१०।।

मंत्रं सत्यं पूजां सत्यं सत्यं च देवनिरंजनम्।
गुरोर्वाक्यं सदा सत्यं सत्यमेकंपरंपदम्।।११।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।१२।।
प्रसिद्ध मिति यद् उदय तत-पदं दर्शको नरः।
अतः नरे योगिनि गुरुता कल्पनैव ही।।१३।।

भावार्थः- उस परब्रह्म स्वरूप मंत्र (का जाप) सत्य है उस परब्रह्म की पूजा भी सत्य है अतः वह परब्रह्म परमईश्वर जो अलख निरंजन स्वरूप है वही सत्य है। इसी कारण वही गुरु वाक्य अर्थात् गुरु मन्त्र जो परब्रह्म

स्वरूप है वह सदा सर्वदा सत्य है और वही सत्य मात्र एक सत्य परमपद है।

अखण्ड मण्डलाकार चराचर जगत जिसके द्वारा व्याप्त है, उस सच्चिदानन्द ब्रह्म के पद को जो दिखाता है। अर्थात उस परब्रह्म परमात्मा का दर्शन करवाता है। उस श्री सतगुरु को नमस्कार है। यह जो गुरु वन्दना प्रसिद्ध है उसे स्पष्ट है कि सच्चिदानन्द ब्रह्मपद परमात्मा को दिखाने वाला मनुष्य गुरु है। अतः हे योगिनी मनुष्यों में गुरुता की कल्पना ही की जाती है।।११-१२-१३।।

न तु गुरुः स्वयं शिष्य भ्रमितं चोभयोरपि।
गुरोरयमिति ज्ञानं शिष्योऽयं खलु में सदा।।१४।।
मार्ग दर्शकं मनुष्याणां न स्वयं सत गुरुः।
गुरो कल्पित मात्रेणैव मोक्षमाप्नोति न कदाचन्।।१५।।

भावार्थः- न तो गुरु और न स्वयं वो शिष्य दोनो ही भ्रमित ही है कि हमेशा ये यही निश्चय पूर्वक समझे कि यह मनुष्य गुरु और स्वयं शिष्य है, वास्तविकता सत्य तो यही है कि मनुष्य मे गुरुता की मात्र कल्पना रखने से मोक्ष मुक्ति नहीं मिलती।।१४-१५।।

यथा सुपात्रमेव शिष्यं दीयते गुरोर्दीक्षाम्।
गुरोर्मत्रोणसर्व ब्रह्मं समर्पितम्।।१६।।
यदि निन्द्य लुलुभे शिष्य त्यजेत गुरोर्सदा।
अतो हि मनुजं लालच दुष्टं शिष्यमपि।।

असम्मतस्तु लोकैर्यस्तत्र रुष्टः श्री गोरक्षः।।१७।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती जैसे शिष्य सुपात्र हो वैसे उसे गुरु दिक्षा दी जाती है। वैसे ही गुरु मन्त्र द्वारा सब कुछ ब्रह्म को समर्पित किया जाता है।यदि उस शिष्य निन्दनीय हो तो उसे उन गुरु जी ने त्यागना चाहिए। उसी प्रकार लालची दुष्ट मनुष्य शिष्य को पाकर उसे भी छोड देना चाहिए क्योकि संसार में जो निन्दनीय है। उसे मन्त्र (दिक्षा) देने से गुरु गोरक्षनाथ जी रुष्ट होते हैं।।१६-१७।।

सत्यर्थे ज्ञानार्थे च क्रियते श्रेष्ठगुरुसेवनम्।
ज्ञानान्मोक्षमवाप्नुयात् तस्मात् ज्ञानं जगदाधरम्।।१८।।
ज्ञानं योददाति गुरुस्वरूपे तमान्नयम्।
यथाधमर्ष धनाकांक्षी त्यजेत् तथैव ज्ञानिनाज्ञानं त्यजैत्।।१९।।

भावार्थः- सर्वश्रेष्ठ, सत्य, परम ज्ञान के प्राप्ति के लिये ही गुरु की सेवा की जाती है। ज्ञान से मोक्ष मुक्ति मिलती है। अतः ज्ञान ही जगत आधार है। अतः जो ज्ञान देता है. उसी का आश्रय गुरुरूप में लिया जाता है। हे उदयनाथ पार्वती धन का इच्छुक जैसे निर्धन को छोड़ देता है। वैसे ही ज्ञानेच्छु ज्ञानहीन को त्याग कर देता है।।१८-१९।।

यस्मिन मनुष्ये तेजो ज्ञानं सैव श्रेष्ठो गुरुः।
त्यजेद अज्ञानिनं धारयेत् सत्गुरुं सदा।।२०।।

सत्ये ज्ञाने श्रेष्ठो धर्मः ज्ञानेना प्नोत्यर्थम्।
ज्ञानाद् काममवाप्नोति ज्ञानान्मोक्षो हि मुक्तिम्।।२१।।

भावार्थः- जिस मनुष्य में ज्ञान का तेज होता है वही गुरु है गोरक्ष स्वरूप ही है। अज्ञानी को त्यागकर ज्ञानी सतगुरु को धारण करना चाहिए। सत्य ज्ञान में श्रेष्ट धर्म होता है; ज्ञान द्वारा अर्थ मिलता है, ज्ञान से काम की प्राप्ति होती है और ज्ञान से ही मोक्ष मुक्ति मिलती है।।२०-२१।।

ज्ञानं च परम मुक्तिः, ज्ञानं हि परं ब्रह्मः।
ज्ञानाय भजतै देवं ज्ञानैव साधनाफलम्।।२२।।
यथा नदी गच्छति सागरं, सागरे भवत्यैक्त्वम्।
तथैव ज्ञानेच्छुकं शिष्यः प्राप्यते गुरोर्तत्त्वम्।।२३।।

भावार्थः- ज्ञान ही परम मुक्ति है ज्ञान ही परं ब्रह्म है। ज्ञान के लिए ही देवता की उपासना की जाती है। ज्ञान ही साधना का फल है जैसे नदी सागर में जाकर मिलती, वहां (सागर) स्वरुप में एकीभाव में हो जाती है वैसे ही ज्ञान के इच्छुक शिष्य सद्गुरु तत्व (रहस्य) को प्राप्त हो जाते हैं।।२२-२३।।

बहवः शिष्यंधनमिच्छन्ति किन्तु गुरु तापहारकः।
दुर्लभो सद्-गुरु। शिष्य-सन्ताप-हारकः।।२४।।
अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानान्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।२५।।

भावार्थः- शिष्य का धन लेने वाले गुरु बहुत है किन्तु हे उदयनाथ पार्वती शिष्यों के दुःख को दूर करने वाले सद्गुरु दुर्लभ है। ज्ञान रुपी अन्जन को सलाई से अज्ञान रूपी अन्धेपन को दूर कर जो आँखे खोल देते है अर्थात् ज्ञान प्रदान करते है उन श्री गुरु देव को नमस्कार है।।२४-२५।।

एनां मत्वा शिष्यं हृदये गुर्वार्कत्वयेत्।
ज्ञानीनां विदुषां च शिष्य गुरुत्व भावनाः।।२६।।
दया क्षमाः शान्ति शुद्धान्तःकरणसदा।
ज्ञानेनस्वात्मनार्चनेन सः सदा सद्गुरुमुच्यते।।२७।।

भावार्थः- इन बातों को समझकर ही शिष्य को सदा गुरुता की कल्पना करनी चाहिए। हे (उदय) नाथ विद्वान और ज्ञानियों मे ही गुरु शिष्य की गुरुत्व की भावना होती है। दयावान-क्षमाशील एव शान्ति प्रधान शुद्ध अन्तकरण और आत्मज्ञान से अर्चन करने वाला जो आत्मज्ञान (आत्मसाक्षात्कारी) है। वही सद्गुरु कहा गया है।।२६-२७।।

यस्यानन्तंभक्ताः स गुरु सिद्ध साधकाः।
ऋद्धि-सिद्धि देव शक्त्या गुरुः प्रकीर्तिता उदय।।२८।।
विमलं सत्यं च मनोहरम् वक्ता सन्त सद्गुरो।
तन्त्र मन्त्र समायुक्तं स सदा सद्गुरुलक्षणम्।।२९।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती अनन्त भक्त या शिष्य मिलने से पर वह सिद्ध गुरु है ऐसी ख्याति है, ऋद्धि

सिद्धियाँ देवी शक्ति से पूर्ण सद्गुरु कहलाते है, शुद्ध सत्य तथा मनोहर ही श्रेष्ट सद्गुरु तत्र मंत्र सह ज्ञान युक्त (वक्ता) कथन करते है वही सद्गुरु है।।२८-२९।।

स सदा शिष्यान्वोधित्वा तरणं तारणं सदा।
निग्रहानुग्रह शक्त भक्तानाममयाय च।।३०।।
आत्मज्ञानं सदादृष्टि परमात्मानि बसति च।
निष्काम कारणोधर्मः सैव सद्गुरु स्मृतम्।।३१।।

भावार्थः- वह सदा सर्वदा शिष्यों को ज्ञानवोध करके उनका उद्धार करते है तथा अनुशासन करने में और भक्तों को अभयदान देने में समर्थ होते हैं। जिनकी दृष्टि सदा सर्वदा आत्मज्ञान परमात्मा पर रहती है। और (अपने) सद्गुरुजी की निरवार्थ सेवा करते है। वे ही सद्गुरु माने जाते है।।३०-३१।।

निर्मलो निश्चल निष्कामो, शिष्यो भक्ति-युत यदि।
त यो स्वार्थ भावमिच्छति ददाति नाभयं सदा स निन्दितम्।।३२।।

यो शिष्य ज्ञानं शक्ति विनाशयति, शिष्याहिताय च।
शिष्यमपेक्षां करोति यः सः गुरुनैव भ्रष्टं गुरुमुच्यते।।३३।।

भावार्थः- शुद्ध निर्मल, निश्चल और निस्वार्थ से यदि कोई शिष्य भक्ति युक्त है। तो उसे तो स्वार्थ भाव की कामना करता है और उसे अभयदान नहीं देता तो वह

निन्दित होता है। जो शिष्य का ज्ञान शक्ति तथा धन आदि का नाश करता है और शिष्य के हितैषी भक्तों की उपेक्षा करता है। वह गुरु नहीं भ्रष्ट गुरु है।

यो गुरुर्शिष्यमात्मसात करोति किन्तु न साधनं बोधयति।
स गुरु घोरंयाति शिष्योऽपि पतनं गच्छति।।३४।।
निर्मलोऽभावेयोगुरु शिष्यं न ददाति गोरक्षमंत्र।
कदापि नायाति नरकात्यावत्चन्द्रदिवाकरौ।।३५।।

भावार्थः- जो गुरुदेव शिष्य की आत्म-साक्षात्कार का (मार्ग) वताकर सिद्ध साधना नहीं देता। वह घोर नरक में जाता है और शिष्य का भी पतन हो जाता है। यह सर्वदा निश्चित है। शुद्ध भाव में रहते हुये जो गुरुदेव गुरु गोरक्षनाथ जी का (नाथपरम्परा का मन्त्र) उनकी साधना नहीं वताता वह नरक से कभी छुटकार नहीं पाता (यहां शिष्य भी आत्म साक्षात्कार के लिये लायक है या नहीं देखा जाता है।)।।३४-३५।।

हे! उदय नाथ! शिष्यान्मक्ताश्च एतेभ्यः गुरुभ्यः सदा सर्वथा त्यजेत्।

यादृशि दीक्षाश्चानुवन्धचतुष्टयंयोऽधर्ममुच्यते।।३६।।
तदा तच्छिष्य सद्गुरुशरणं गच्छेताप्नोति शिक्षामुत्तमम्।
तादृशि दीक्षामाप्नोति चेत् शिष्य चतुर्वर्ग विनाशयेत।।३७।।

भावार्थः- अतः हे उदयनाथ पार्वती-शिष्यों ने इस प्रकार के गुरुओं का सर्वता त्याग करना चाहिए।

क्योंकि ऐसी दिक्षा अधम कही गयी है। जो चारों वर्ग (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) को नाश करती है। यदि संयोग वश से इस प्रकार की दिक्षा उस शिष्य को पा जाये तो उसे किसी दिव्य गुरु से प्रार्थना करके पुनः दिक्षा लेनी चाहिए।।३६ ३७।।

तदा प्राप्योत्तमां दीक्षां गुरुगोरक्षसंम फलदायकम्।
अन्यथा गोरक्ष विमुखात्भूत्त्वा न गच्छन्ति सद्गतिम्।।३८।।

पूर्वोक्त-दोष युक्तच गुरु वा शिष्य एव वा।
तयोरपि न कर्त्तव्या शिष्य गुरु भावना।।३९।।
त्यजत्त्वं तं गुरु स्वहिताय कर्म करोति यः।
दोषो न भवत्यत्र गुरुगोरक्षच्छिवाज्ञया।।४०।।
तस्मात् ब्रह्मनिष्ठो तपोनिष्ठो सद्गुरु भवेत यदि।
तदा तु दीयते शिष्योन्भक्तानदीक्षां सैव गुरु परम्परा।।४१।।

भावार्थः- तब (दिव्य गुरु से (दिव्य ज्ञान युक्त गुरु) से दीक्षा लेने पर) वह (मन्त्र) दीक्षा गुरु गोरक्षनाथजी के समान अभीष्ट फलदायी हो जाती है। अन्यथा श्री गुरु गोरक्षनाथ जी उनसे विन्मुख रहकर जिससे उनको सद्गति नहीं होती। पूर्व बताया जैसे दोष युक्त चाहे दिव्य गुरु हो या पात्र शिष्य हो उन दोनों ही के प्रति शिष्य ने गुरु भावना नहीं रखनी चाहिए। केवल उन्हें अपना हितैषी समझना चाहिए। गुरु मानना छोड़ देना

चाहिए, ऐसा करने से कोई दोष नहीं होता। भगवान शिव गुरु गोरक्षनाथ जी की ऐसी इच्छा अनुरूप ऐसा ही आदेश। इसलिये दिव्य (आत्मज्ञानी) सद्गुरु और सुपात्र शिष्य तथा भक्ति युक्त भक्तों ने (गुरु शिष्य) परम्परा की दीक्षा कर्म करना चाहिए।।३८-३९-४०-४१।।

"श्री उदयनाथ उवाच"

गुरु शिष्यभक्तेषु वैशिष्ट्यं किमुच्यते।
बूहि मम् ॐकार नाथः श्रोतुं मे मनोच्छुकम्।।४२।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ पार्वती ने कहा है (आदि) नाथजी सद्गुरु शिष्य और भक्त में क्या विशेषता है। हे ॐ कार आदिनाथजी मुझे बताइये यह सुनने को मेरा मन उत्सुक है।।४२।।

"श्री आदिनाथ उवाच"

श्रृणु उदय नाथ ! शक्ति यत् प्रश्नं तत्त्वमुत्तमम्।
आत्मज्ञानी तपोनिष्ठ भूताना सदा हिताय च।।४३।।
अलख निरंजन, निराकारी निर्गुणं च सदा।
त्रिकालत्त्वं त्रिगुणान्वित त्रयलोके च वन्दितम्।।४४।।
मृत्युञ्जयी त्रैलोकरक्षकः भूतानंपश्यति स्वमात्मना।
दिव्यदृष्टि यती जती सदाचारः गाम्भीर्य च।।४५।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे नाथ (सिद्धों) की शक्ति उदयनाथ तुमने जो श्रेष्ठ सार का सवाल पूछा है। उसे सुनो सद्गुरुजी दिव्य भावनाओं आत्मज्ञानी { तथा (शून्य) ध्यान में तत्पर } सभी का हित करने वाले होना चाहिए। वह सदा अलख निरंजन, निर्गुण,

निराकारभाव. त्रिकालज्ञानी त्रिकाल दर्शी त्रिगुण से परिपूर्ण और तीन लोक में पूजनीय होना चाहिए तथा वह मृत्युपर विजय पाने वाले (मननशील) और तीन लोक की सर्वदा रक्षा करने वाले चाहिए तथा धीर गम्भीर दिव्य दृष्टिवान और जती सती शिष्टता से बात करने वाले होने चाहिए।।४३-४४ ४५।।

हृदये सद्गुरुरु संस्मृत्य निर्भयः भवतिसदा।
गिरापति महासत्वो मनस्वीरूपवानतथा।।४६।।
सर्व मनोहारी मितवादी च दृढ स्थिरासनः।
जपतपौ कर्मकाण्डश्च तंत्र मंत्र विशारदः।।४७।।
समदमदण्ड सर्वाऽरिष्टं निवारकः।
सर्व-गुणान्वितो दिव्यः समयुक्तो न संशयः।।४८।।

भावार्थः- अपने हृदय मे हमेशा सद्गुरु की स्मृति रखने वाले, सदा सर्वदा सर्वत्र निर्भय रहने वाले, वाणी के पती और महाबलवान तथा मनस्वी, नित्य रूप धारी, सर्व मनोहर, अल्पभाषी तथा दृढ स्थिर रहने वाले होते है। जपी-तपस्वी कर्मकाण्ड को जानकर तथा तंत्र-मंत्रादि विशारद तथा साम दाम दण्ड समेत सर्व प्रका॰ के संकटो का निवारण करने वाले सर्व-गुण-सम्पन्न और अधिक क्या कहूँ, वह मेरे समान तेजस्वी होते है।।४६-४७-४८।।

श्रृणु पार्वते ! उदयनाथ ! सद्गुरोः प्रंशसनीय शिष्यानां सम्बन्धे।

शिष्यं निर्भयोऽभयशनं च सततं गुरु सेवनम्।।४९।।
यथापूर्वदिशिः पश्चिमां गच्छति सूर्यविम्बम्।

योसदा बिम्बाकर्षेण भवति सूर्याभिमुखम्।।९०।।
तेजप्रकारेण प्रिय शिष्यो भवति आकर्षित गुरुं प्रति।।
तदा शिष्य गुरो सानिध्ये प्रसन्नो भवति सर्वदा।।९१।।
भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती सद्गुरुजी के प्रशंसनीय शिष्यो के सम्बन्ध मे सुनो, शिष्य साधक भयहीन अभयदाता सद्गुरु जी की सेवा (प्रेम) परायण होता है। जैसे आकाशिय सूर्य बिम्ब (पूर्व से पश्चिम दिशा में) भ्रमण करता है। वैसे ही सूर्य फूल भी वैसे ही (पूर्व से पश्चिम) भ्रमण करता है। जो सदा सर्वदा सूर्य बिम्ब से आकर्षित होकर (सूर्यफूल) अपना मुख करता है। उसी प्रकार प्रिय शिष्य भी उसके सद्गुरु के प्रति आकर्षित होकर गुरुजी के सानिध्य में हमेशा रहता है।।८९-९० ९१।।

इन्द्रियदमः प्रज्ञावन्तः तत्वसाधना सदारतः।
दृढ़ासना महासत्वो सत्वं साहसिकोऽपि च।।९२।।
महामनः सदा नाथो सन्त पालन च तत्परः।
दया क्षमा शान्ति च नाथ ! योगिने सदा प्रियः।।९३।।
वैराग्य पूर्णः नाथ ! शिष्य कर्णे कुण्डलं धारयति।
कर्म योगी ध्यानं योगी ज्ञानविवेको विनम्रोभवतिसदा।।९४।।
येन प्रकारेण सर्वान् भवति प्रिय शिष्यो।
किमहं बहुकथयामि सर्वगुणो रुद्रयुतो भवति सदा शिष्यः।।९५।।

भावार्थः- हे (उदय) नाथ वह इन्द्रियों का दमन करने वाला (ब्रह्मचारी) बुद्धिवन्त और पश्चर्तात्विक साधना में हमेशा रहने वाला, दृढ़ आसन वाला, महाबलवान, सात्विक वृत्तीवाला साहसी भी मनस्वी सदासर्वदा सन्त सज्जनों का पालने करने वाला होता है। दया क्षमा-शान्ति युक्त और नाथ सिद्ध योगेश्वरों का प्रिय होता है। त्याग वैराग्य (आचरण) पूर्ण कर्ण में कुण्डल धारण (दर्शनी) करने वाला होता है। कर्म योगी, ध्यान कर्म योगी तथा ज्ञान विवेकशील सदा नमता दिखाने वाला होता है। इस प्रकार सबका प्रिय यह दिव्य शिष्य होता है और क्या कहूँ इस प्रकार बहुत से गुणों से सम्पन्न शिष्य रुद्रनाथ के समान सर्व समर्थ होता है।।५२ ५३-५४-५५।।

श्रृणु उदयनाथ पार्वते, देवी-देवताभ्यः बहिस्कृतमभक्तान्।

अधमाः महापापाः धर्मतत्वं विनिन्दकान्।।५६।।
कामुकः क्रोधी कपटं, ज्ञेया दुष्टाः नराधमाः।
भ्रष्टाः अधर्मिः लोभी च अज्ञः विद्वेषकृत।।
मुच्यत्याशापाश च स्वार्थी तदपि न मुश्चति।
व्यभिचारिणः प्रमदानीं पशुतुल्यमाचरतियो।।५७।।
पशवः स्वभावो भक्ताभक्तानां सदा विचारणीयम्।
तान् सर्वान् पारमार्थिकेम्यः कार्येभ्यः सदा विवर्जितव्यम्।।५९।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती देवी देवताओं द्वारा बहिष्कृत अभक्तों के सम्बंध में सुनो, धर्म तत्व की

निन्दा करने वाले, नीच महापाप करने वाले कामी क्रोधी, कपट दुष्ट हीन मनुष्यों, भ्रष्ट अधर्मी लोभी लालची अज्ञानी द्वेष करने वाले तथा आशा पाश से नहीं छूटने वाले, स्वार्थ को नहीं छोड़ने वाले और व्यभिचारी स्त्रियों का भोगवादी जो पशु समान आचरण करने वाले अतः हे उदयनाथ जी पशु भाव वाले साधको, गृहस्थों (अभक्तों) का निराकरण करना चाहिए वे परमार्थ के कार्यों से सर्वथा बाहर ही रखे जाने चाहिए।।५६-५७-५८-५९।।

"श्री उदयनाथ उवाच"

विचित्र कथनं ज्ञात्वा सन्देह प्रबली कृतम्।
क्षुद्रो ही पशु भावंच जगाद् स्वयं सदा।।६०।।
पशु तुल्यं शूद्रभावो, यं हि साधारणमौचित्यम्।
पशु तुल्यं गृहस्थेभ्यः वद आदिनाथ पार्वते।।
पशुभावंमुद्धरणायात्यन्तं किं सूत्रविधिम्।।६१।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ (पार्वती) ने कहा हे नाथ जी आपने क्या ही विचित्र बात बताई है इससे मेरा सन्देह और पुष्ट हो गया है। आपने स्वयं सदा बताया है कि पशु भाव शुद्र भाव है इसे साधारण भाव कहना अधिक उचित होगा। अतः हे आदिनाथ जी उन गृहस्थ पशु (शुद्र) भाव वालों के उद्धार कारक के लिये कौन से सूत्र विधि है, मुझे बतावो।।६०-६१

"श्री आदिनाथ उवाच"

नाथमुक्तंत्वया विज्ञे। सूत्र तत्त्वसारं श्रृणु।
यं उक्तः पशु भावो हि ! शुद्र साधारणो तथा।।६२।।

कर्म पातकं वेत्ति पाशवः स प्रकीर्तितः।
नाथेन गदितं यत तु तत् सत्यमिति कथितम्।।६३।।
यस्मिन कलियुगे पशु पापकर्मरताः जनाः।
तेषामुद्धारणाय कथयामि तवसन्देहं नश्यति,
तंविधि श्रृणु।।६४।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे विशेष जानने वाली नाथ (पार्वती) तुमने ठीक कहा शुभ सार की बात सुनो। जिसे पशु भाव. शुद्र भाव तथा साधारण भाव कहते है। इन कर्मों को पाप समझता है वही पाशव या पशु भाव या शुद्र भाव या साधारण भाव का पालन करने वाला कहते है। श्रीनाथजी ने जो कुछ कहा है वह सत्य है। यही वह सोचते है। जो कलीयुग में पाप कर्म या शुद्र कर्म या पशु कर्म करने वालों के उद्धार के लिये उसके आचार को मैं बताता हूँ जो सन्देह को नष्ट कर देता है उसे सुनो।।६२-६३-६४।।

शौचम् भक्षयोन्नित्यं ताम्बूलं न स्पृशेदपि।
ऋतु-स्नाना बिना नारी काम-भावं नेच्छेत्।।६५
पर-स्त्रियं न काम भावो, दृष्टवा मातृवत् सदा।
शूद्रवत्भावोगृहस्थाः मंस मदिरादिर्विवर्जयेत्।।६६।।
सुगंधीतिमाल्यानि वस्त्राणि चीराणि न धारयेत्।
गुरोर्श्रुश्रुवा सदाकुर्यात भोजनमपि तथैवप्रष्टम्।।६७।।
घनेपार्श्वे सदा दानं च, सततं गुरुमनुचरं चरेत्।

ऐश्वर्यार्थे यत्नं कुयति तथा घनं सततंरक्षेत्।।६८।।
गुरु शरणं गच्छेत यदीच्छेदात्मनो हितम्।
यदीच्छेत् मोक्षमुक्ति, तर्हि गुरु शरणं गच्छेत्।।६९।।

भावार्थः- शुद्ध ग्रहस्थ भाव वाले नित्य शुद्ध पवित्र अन्न खाये ताम्बूल को छूए भी नहीं ऋतु स्नान की हुई (अपनी) नारी के सिवा किसी नारी को काम से स्पर्श न करे। पर स्त्री को काम भाव से न देखते हुये मातृभाव से देखे। शुद्र (गृहस्थ) भाव साधक को मत्स्य मांस मदिरा आदि का त्याग करना चाहिए। सुगंध पुष्प माला रेशमी वस्त्रादि धारण न करे। सदा सर्वदा गुरु सेवा में रहे स्वकर्मानुसार (अपने कष्ट) का भोजन करे। सदैव ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये प्रार्थना करता रहे और जो कुछ पास में हो उसका त्याग ना करे। यदि पास में धन धान्य हो तो सदा दान पुण्य करता रहे। यदि अपना भला चाहता हो तो सद्गुरु शरण में जाओ अतः मोक्ष मुक्ति की यदि इच्छा हो तो सद्गुरु शरण में जाना चाहिए।।६७-६६-६७-६८-६९।।

कर्मसु विघ्नानां सदा त्यजेत, क्रोधा विकारेम्यस्तथा।
पंचविकारानकाम क्रोधादिभ्यः सदा सुदूरं गच्छेत।।७०।।
पितरौ सेवां मनसा कुर्यात पत्निसन्तति मित्राणां नित्य कर्तव्यम्।।७१।।
पर निन्दा परद्रोहं व्याभिचारं सदा त्यजेत्।

अतः पशु तुल्य वृत्तिस्त्वं गृहस्थात् दूरं गच्छेत।।७१।।

भावार्थः- हे (उदय) नाथजी कर्म में विघ्न डालने वाले अहकार आदि सभी को दूर करे। वास्तविक उसे काम क्रोधादि (पंचविकार) को दूर रखे। प्रतिदिन माता-पिता की सेवा मन लगाकर करता रहे तथा पत्नि-सन्तान-आत्प मित्र के प्रति नित्य कर्तव्या करता रहे। दूसरों की निन्दा, दूसरों से शत्रुता और व्याभिचारादि से दूर रहे। अतः हमेशा गृहस्थ ने पशु वृत्तिओं का त्याग करे।।७०-७१-७२।।

यदा कदा दीक्षयेज्जैव पशु-शुद्रः उदय।
अज्ञानाद वा लोभमंत्र-दानं करोति चः।।७३।।
सत्यं सत्यं योगेश्वरी, गोरक्षं शापं प्रजायते।
तदापि न मुक्तिं स्यात् सिद्धिश्चैव कदाचन्।।७४।।
अयं बहवो सूत्र क्वचिद बूवः पशोर्मते।
यदि चंक्रमणे शक्ति खड़ग-धारे सदा गृहस्थाः।।७५।
तदा हि विहितं गृहस्थ दिव्य गुरुमालभेत्।
सद्गुरोर्रादेश निरन्तरमेव पालनं पोषणीयम्
उदय।।७६।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती पशु व शुद्र भाव वाले को कभी दीक्षा न दे। अज्ञान या लोभवश यदि कोई मंत्र (दीक्षा) देता है तो हे योगेश्वरी उसे गुरु गोरक्षनाथजी का शाप लगता है। यह सर्वता सत्य है। तथापि इनसे न मुक्ति मिलती है और न कभी सिद्धि मिलती है। इस प्रकार पशु व शुद्र साधक (गृहस्थ) के बहुत से सूत्र

(आधार) मैने बताये है। यदि कोई गृहस्थ को खड्ग की धार पर चलने की क्षमता हो तब विधि सम्मत वह गृहस्थ दिव्य सद्गुरु को प्राप्त करना चाहिए जो कि सद्गुरुजी के आदेश का पालन-पोषण निरन्तर करना चाहिए। ।७३-७४-७५-७६।।

सत्येक्रमाच्चतुर्वर्णे पंचामृत फलानि वस्त्राणि च।
दक्षिणं गुरवे दद्यात् स्वर्ण-प्रणमेद उदय।।७७।।
त्रेतायां पूज्यत गुरुः घृतेन सर्व जातिभिः।
पंचमेवात् भोग्यं च वस्त्राऽलंकारादि रजत्।।७८।।
दीयेत् दक्षिणां ताम्रादि। वस्त्र च रोट लंगोट।
मधुभिः सर्व वर्णाश्च पूजयन्त द्वापर युगे।।७९।।
पूज्यन्तु कलौ श्री गुरोः केवलैकृशरान्नश्च।
लोह दक्षिणा दान च अन्यानि भोज्यानि भावनात्।।८०।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती-सत्ययुग में चारों वर्ण क्रमशः पंचामृत (दूध+ दही+ घी+ शहद+ जल) फल और वस्त्र आदि सुवर्ण दान सद्गुरु को कर नमस्कार करे। त्रेतायुग में सभी जातियां घी द्वारा पूजन करे पंचमेवा (काजू+ बदाम+ पिस्ते+ अखरोट+ किशमिश) भोजन वस्त्र-अलंकार (रुद्राक्ष माला-फूल, पीर की टोपी कड़ा इत्यादि) चान्दी का करे। ताम्र धातु युक्त दान दक्षिणा वस्त्र रोट लंगोट और मधु (शहद) से सभी वर्ण द्वापर युग में गुरुजी का पूजन करे। कलीयुग में केवल

(चावल+दाल) की खिचड़ी तथा लोह धातु युक्त दान दक्षिणा और अनन्य भक्ति भाव से भोजन (भण्डारा) दे।।७७-७८-७९-८०।।

सत्यमेताच्छिवोदित् गुरो पूजनीय युगे युगे।
सद्-गुरोः शरणं नीत्वा कुलाचारं पोषयेत्।।८१।।
गुरुत्व लभते किम्बा शिष्यत्व लभते योगीनी।
असाध्य साधयेद दिव्योऽव्यनायासेन यद्भुवि।।८२।।
गुरुत्व क्लेशतो उदय प्राप्नोतिह न चान्यथा।
पशु-कल्प शतैर्वापि साधितुं न च तत् क्षमः।।८३।।
वै-च चक्रमणे शक्तिः खड़ग धारे सदा नरः।
अति-गुह्यमिंद प्रोक्त रहस्य त्वयि ज्ञानेश्वरे।
गुह्यात्यतिगुह्यं गोपनीय च सदा नाथे।।८४।।

भावार्थः- युगों युगों से सद्गुरु पूजनीय हुए है यह श्रीनाथ जी द्वारा कथित सर्वथा सत्य है। सद्गुरु की शरण लेकर व्यक्ति को कुलाचार का पालन करना चाहिए। हे योगिणी-गुरु भाव को प्राप्त करे या चाहे शिष्य भाव को। दिव्य साधक (अर्थात् दिव्यत्व प्राप्ति पश्चाद) पृथ्वी पर अनायास ही असाध्य को सिद्ध कर लेता है। हे उदयनाथ पार्वती, दिव्य भाव (अर्थात् शुद्र गृहस्थ से भक्त यह भक्तिभाव-भाव से शिष्य यह गुरुभाव फिर-शिष्यत्व से गुरुभाव यह दिव्य भाव फिर गुरुत्व से मोक्षत्व यह पूर्ण वैराग्य मुक्ति भाव है अतः यह दिव्यभाव बड़ा ही कठिनाई से प्राप्त होता है। इसमें सन्देह नहीं है और वास्तविक इसी को मनुष्य खड़ग

की धार पर चलने की क्षमता है कहते है।)

हे ज्ञानेश्वरी ''यह अत्यन्त गुप्त रहस्य तुमसे कहा है इसे हे उदयनाथ सदा गोपनीय गोपनीय गोपनीय रखना।।८१-८२-८३-८४।।

।।इति श्री गोरक्षतन्त्रे उदयनाथ-आदिनाथ संवादे दशमः अध्याय समाप्त।।

अथ एकोदशोऽध्यायः

।। मोक्ष मुक्ति तत्त्वम्।।

(मोक्ष-मुक्ति तत्व का साधन)

"श्री उदयनाथ उवाच"

बूहि मम आदिनाथ ! मोक्ष मुक्तिं च तत्वम्।
यस्य सन्मुखे जगद्माया चोप हास्य गतानि च।।१।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ (पार्वती) ने कहा हे आदिनाथजी मुझे मोक्ष-मुक्ति का परम तत्व (साधन) बताइए। जिसके सन्मुख यह ससार जगत की माया हसी की बात बन जाती है।।१।।

"श्री आदिनाथ उवाच"

श्रृणु उदय ! ज्ञानमयी यत्पृष्टं तत्त्वमुत्तमम्।
एतन्मर्म च त्वं वेत्ति। अहं वेधि तथा गोरक्षम्।।२।।
यथा लगुड़ेन बध्नातिं मर्कटस्य नृत्यन्ते।
तदा उदय मदारी न प्रतारयति जनौः।।३।।
तेन प्रकारेण अहं नृत्यति माया जगत।
महा माया महा कूपे पतन्ति जगज्जनाः।।४।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा है ज्ञानमयी उदयनाथ पार्वती श्रेष्ठतम तत्व को सुनो। इस रहस्य को तुम जानती हो या मैं और गुरु गोरक्षनाथ ही जानते है। जैसे बन्दर को रस्सी में बांधकर मदारी उसे नचाकर जगत लोकों को बहलाता है। हे उदयनाथ पार्वती उसी

प्रकार मैं इस जगत माया को नचाता हूँ। महा माया रूपी भयंकर कूएं में जगत संसार के लोग गिर जाते हैं।।२-३-४।।

परमार्थं न जानन्ति दर्वी। पाक-रसं यथा।
न सार कदली-वृक्षे नैरण्डे तु योगेश्वरी।
महामायायाःतथा मुक्तिर्नस्ति च मयोदितम्।।५।।

भावार्थः- हे योगेश्वरी वह लोक परमार्थ को नहीं समझ पाते जैसे चमचा रसीले पदार्थ को परोसता है किन्तु वह जड़ होने के कारण उसके रस को नहीं जानता हे कल्याणमुखी जैसे केले या रेडी के पेड़ मे कोई तत्व नहीं होता उसी प्रकार महामाया के ज्ञान से मुक्ति नहीं मिलती।।५।।

मोक्षं तत्वं कथयामि श्रृणु सादरं उदय।
सद् गुरो प्रसन्नैव मुक्तिं सदा लभेत्।।६।।
धियं गुरु कृपनं प्राप्तय पश्चात् लालसां शान्त्यर्थे क्रियते शास्त्राध्ययनम्।।७।।
जगति पुनरपि जननं तथा पुनरपिमरंण चायाति।।
तदादौ गुरु गोरक्ष नाथस्य पश्चात् सद्गुरुमनु कम्पया लभेत्।।८।।
तदा गुरु मुखेन मन्त्रोच्चारणं पश्चात दीक्षामाप्नुयात्।
ततो हि साधनं शौचं दिव्यज्ञानं च व्यक्तम्।

ज्ञानान्मुक्ति भवेत सत्यमिति श्री नाथस्यनिर्णयः।।९।।

भावार्थः- हे उदयनाथ पार्वती मैं मोक्ष-मुक्ति के तत्व को कहता हूँ। आदर सहित सुनो सद्गुरुजी के प्रसन्नता से ही सदैव मुक्ति मिलती है। अतः बुद्धिमान को उनकी कृपा प्राप्त करने के बाद ही अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये सभी शास्त्रों को अध्ययन करना चाहिए। इस जगत संसार में नित्य पुनः पुनः जन्म और पुनः पुनः मृत्यु आती है। अतः उन्हें प्रथम गुरु गोरक्षनाथजी का तब श्री सद्गुरुजी का अनुग्रह पाना चाहिए। तब उनके (मुख से) मंत्र कहने पर (दीक्षा ग्रहण करे) जिससे भक्ति उत्पन्न या प्रगट होती है। तदपश्चाद पवित्र साधनों से साधना करनी चाहिए उससे दिव्य अक्षय ज्ञान प्रगट या उत्पन्न होता है। उस दिव्य ज्ञान से मोक्ष-मुक्ति होती है। यह सत्य है। ऐसा श्री नाथ (परम्परा का) निर्णय है।।६-७-८-९।।

मुक्तेर्चतुर्विधा बदन्ति तु योगेश्वरे।
प्रथमं सालोक्यं च कितियं सारोप्य तथा।।१०।।
तृतीयं सह्योन्यं च निर्वाणं ही चतुर्थकम।
सालोक्यं निवास लोके च साराप्ये तु स्वरूपतेः।।११।।
सायोज्ये गुण स युक्तं च निर्वाणं तु शून्यं पदम्।
मनस्चित्तस्यप्रलयं च सत्योपरि शून्य पदं गच्छति।।१२।।

भावार्थः- हे योगेश्वरी मोक्ष-मुक्ति चार प्रकार की कही गयी है। प्रथम सालोक्य है और द्वितीय सारोप्य कहते

है तथा तृतीय सहयोज्य अर्थात् सायुज्य कहा है चौथी श्रेष्ठ निर्वाण मुक्ति कही है।

सालोक्य मुक्ति में ईष्ट देवता के लोक में निवास करने का सौभाग्य मिलता है। सारूप्य मुक्ति में साधक ईष्ट देवता के समान स्वरूपवान हो जाता है। सायुज्य मुक्ति में वह ईष्ट देवता की गुणों से या कलाओं से युक्त हो जाता है और निर्वाण मुक्ति में शून्य पद प्राप्त होता है। मन और चित्त का पूर्ण लय होकर परम अर्थात् पूर्ण सत्य या पूर्ण श्रेष्ठ शून्य पद को (मोक्ष) मुक्ति कहते है।।१०-११।।

"श्री उदयनाथ उवाच"

सम्यक शून्यो जनस्यैव निर्वाणं यत्तु कथ्यते।
तत् किं वद् आदिनाथ ! संशयलय-सात् कुरु।।१२।।

भावार्थः- श्री उदयनाथ पार्वती ने कहा हे श्री आदिनाथजी जीव शून्यमय लय समुचित रूप से जिस मुक्ति द्वारा होता है जिसे निर्वाण तत्व कहते है। वह क्या है। उसे बताइये और सन्देह दूर करिए।।१२।।

"श्री आदिनाथ उवाच"

व्यक्तिर्लयात्मिका मुक्तिरसुराणां साधिनिके।
दुष्टानांविनाशं कृत्या देवानां प्रसन्नं करोमि।।१३।।
शून्य-लयात्मिका मोक्षं जानीहि योगिने।
प्राप्तं मया गोरक्षम नवनाथेन चतुरसीति सिद्धिकानां तथा।।१४।।

भावार्थः- श्री आदिनाथजी ने कहा हे साधिनीके

असुरी व्यक्तित्व का लोप होना ही मुक्ति है। दुष्टता का नाश करके मैं देवताओं को प्रसन्न करता हूँ। हे योगिनी शून्य लयात्मिका मुक्ति को मैंने श्री गुरु गोरक्षनाथी ने और नवनाथ चौरासी सिद्धों ने प्राप्त किया है।।१३-१४।।

करोति यथा भक्तिं मिलति मुक्तिंस्तथासालोक्यमुच्यते।
सालोक्यं मुक्तिरस्ति सारोप्यं सालोक्यं द्वयम्।।१५।।
त्रिधा सायोज्यमवानेति भक्तिसाध्य सर्वमेव ही।
सम्यक् निर्वाण पदं-लक्ष्यंच शून्यं ध्यानं तथा।।१६।।
सहस्रोत्पल दल गोरक्षंमय शून्यं पदं।
मुक्तस्यैव सदा स्फीता स्फुरत्यविरत नाथ।।१७।।

भावार्थः- व्यक्ति जैसी भक्ति करता है मुक्ति वैसी ही मिलती है। उसे सालोक्य मुक्ति कहते है। अर्थात् सालोक्य भी सालोक्य, सारुप्य, और सायुज्य से तीनों ही भक्ति साध्य (ध्येय) है। अर्थात् निर्वाण है। भावतित शून्य मय ध्यान का निर्वाण ही लक्ष्य है। सहस्त्रदल कमल अर्थात् ब्रह्मरंध में जो शून्य पद है वह गुरु गोरक्षनाथ मय है। वह मुक्त जीव के समक्ष प्रगट होकर उसे निरन्तर आनन्दित करते रहते हैं।।१५-१६-१७।।

सनातन जगद वन्द्य सच्चिदानन्द रूपिणम्।
अलख निरंजनं चैव सर्वाभीष्टं प्रदायकम।।१८।।
स्वयं निश्चल परमंपदं निर्वाणं मुक्ति रेव च।

नाथ! सर्वानयोगीश्वरान् मुक्तिं मिलति निश्चितम्।।१९।।

भावार्थः- वह गुरु गोरक्षनाथजी सनातन है विश्व वन्दनीय है, सच्चिदानन्द स्वरुपी अलख निरंजन है और अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति करते है। वह स्वयं निश्चल परंपद निर्वान मुक्ति ही है। हे योगिनी सभी नाथ सिद्ध योगेश्वरों को यही मुक्ति निश्चित रुप से मिलती है।।१८-१९।।

साधकाः मुक्ति ज्ञानं स्वमात्मानं रक्षितम्।
मान्यधान्यं ज्ञानंपञ्च-तत्त्वैश्च मुक्तिदम्।।२०।।
दीक्षां तु श्री नाथस्य ज्ञान मार्गस्यप्रदर्शकः।
दीक्षां मुक्तिदायकम् श्री गुरोर्मुखपंकजात्।।२१।।

भावार्थ :- हे योगेश्वरी नाथ सिद्धों सतगुरु मुक्ति का यह ज्ञान अवश्य रखते है। अन्य ज्ञान को वह महत्त्व नहीं देते और साथ ही मुक्तिदायक पञ्च तत्त्वों द्वारा साधना को जानते है। श्री नाथ (अर्थात गोरक्षनाथ एवं उनके नाथ सम्प्रदायक सिद्ध) सिद्धों की दीक्षा ही ज्ञान मार्ग की प्रदर्शक है। यह मोक्ष-मुक्तिदायक दीक्षा श्री (नाथ सिद्धों) गुरुदेव के मुख कमल से मिलती है।।२०-२१।।

नाथकुलेषु या भक्तिः सा मुक्तिंदायक।
प्रयत्नेनैव नाथस्य धर्माणां बोधितव्यम्।।२२।।
भाग्य-वशाद उदय मन्त्रदीक्षां लभ्यते।
मुक्तिश्च कारणं तस्याःस्वयं जातं न चान्यथा।।२३।।

भावार्थः- श्री नाथ कुल में जो भक्ति होती है। वही मोक्ष मुक्तिदायिनी कही गयी है। प्रयत्नपूर्वक नाथ सिद्ध कुल धर्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। भाग्यवश यदि इस प्रकार की मन्त्र दीक्षा किसी को मिलती है। तो उसके मोक्ष मुक्ति का मार्ग स्वयं खुल जाता है। इसमें सन्देह नहीं है।।२२-२३।।

अति गुह्यमिदं प्रोक्तं ज्ञानं त्वां योगिने।
गुह्यं स्थापितगुप्ताङ्ग ममाज्ञया सदा उदयः।।२४।।

भावार्थः- हे योगिनी यह अत्यन्त गुप्त ज्ञान तुमको कहा है। हे नाथ उदय इसे मेरी आज्ञा से अपने गुप्तांग के समान गुप्त रखना चाहिए।।२४।।

।। इति श्री गोरक्ष तन्त्रे उदयनाथ आदिनाथ संवादे एकादशोऽध्यायः समाप्त।।

।। इति श्री नाथ विलास विरचित ग्रंथ श्री गोरक्ष तन्त्रम् सम्पूर्ण।।

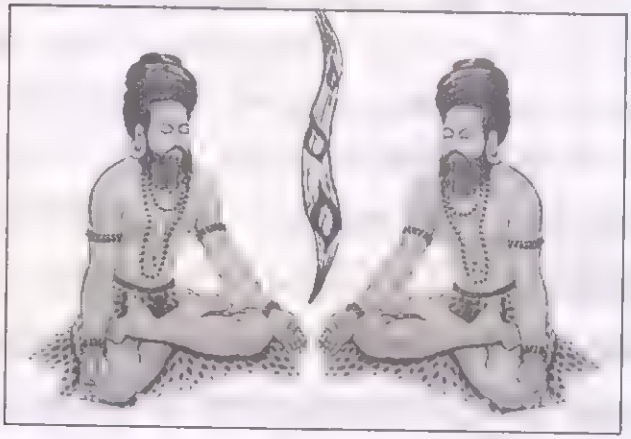

अथ द्वादशोऽध्यायः

।। श्री गोरक्ष स्तोत्रम्।।

(श्री गोरक्षनाथ जी के स्तोत्र)

''संकट नाशक गोरक्ष स्तोत्रम्''

(श्री गोरक्षनाथजी का संकट नाशक स्तोत्रम्) नित्यपाठ

शिरसा नमस्कृत्य मत्स्येन्द्र पुत्रो गोरक्षनाथम्।
ध्यानं च स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थ सिद्धये।।१।।

भावार्थः- पहले मस्तक झुकाकर (मीन) मत्स्येन्द्रनाथजी पुत्र गोरक्षनाथजी को आदेश करके प्रतिदिन आयु अभीष्ट मनोरथ और धन सम्पन्नता आदि प्रयोजनों की सिद्धि के लिये ध्यान द्वारा गुरु गोरक्षनाथजी का स्मरण करे।।१।।

प्रथम निरंजनाथ च ग्रों ग्रों बीजेन् गोरक्षकाम्।
सूः बीजेन नामोद्वितीयः सुधबुधं नाथं च भवति।।२।।
क्रु रं बीजेन तृतीयं कलेश्वरनाथस्य सिद्धबीजम्।
ह्रिं हं आकर्षणबीजेन चतुरंगी तु चतुर्थकं प्रसिद्धम्।।३।।

भावार्थः- पहला नाम ग्रों ग्रों बीजमंत्र से गुरु गोरक्ष नाथजी निरंजन नाथ है और सूः बीज, इससे द्वितीय नाम सुधबुधनाथजी तथा तृतीय श्री कलेश्वरनाथजी के क्रु रं बीज सिद्धिया रूप है तथा आकर्षण रूपी ह्रि हं बीज से चौथे श्री चौरंगीनाथ जी है।।२-३।।

स्तम्भने लूं ल बीजेन लालग्वालोचपंचमे तथा।
अध्यामनं वं वुं बीजं विमलं तु षष्ठं तथा।।४।।
सप्त में सर्वांगनाथस्य सं स्रों शः पाशस्तोभतिकम्।
अष्टमे सत्यनाथब्रह्मणि सं बीजेन तु कामरूपेण शक्तिकम्।।५।।

भावार्थः- पाँचवां नाम लालम्वालाय लं लू बीज मंत्र स्तम्भन रूप है। अध्यापन कर्म का वं वं बीज से छटानाम विमल नाथजी है तथा पाशस्तोभी एवं कामरूपत प्रति आठवे श्री सत्यनाथ ब्रह्माजी में सं वीज कामरूप शक्ति का है।।४-५।।

ग्रों ग्रों क्रोधरूपं में गोपालनाथो नवम्।
दशमं तु क्षेत्रनाथे क्ष्णी, क्ष्णो वशी क्षोभणं च ।।६।।
एकादशं तु भूचरो भ्रूं बीजेन डाखिन्या तथा।
द्वादशे, ग्रों ग्रों बीजेनरूपेन गोरक्षसदारक्षति।।७।।

भावार्थः- नवाँ नाम गोपालनाथजी ग्रों ग्रों क्रोध रूपी है। दशवे श्री क्षेत्रनाथजी जिन्हें क्ष्णी से वशीकरण ओर क्ष्णों से क्षोभण रूप है शक्ति डाखिन्या रूपी भ्रू बीज ग्यारहवें श्री भूचर नाथजी हैं और वारहवें श्री ग्रों ग्रों गोरक्षनाथजी रक्षा करते है।।६-७।।

ॐ गं गं गोरक्षनाथाय संकटं निवाराय च।
हूँ हूँ फट् अस्त्रफटकार वाराय तु गोरक्षम्।।८।।

भावार्थः- हे ॐ गं गं गोरक्षनाथजी आप हूँ हूँ फट् फटकार अस्त्र से मेरे संकटों को निवारण करो।।८।।

ॐ हिं श्रीं गों निरांजनात्मने सर्व कार्य सफलंकुरु।
ॐ गं गं ऐं ऐं बृं बृं गोरक्षं ज्ञानार्थं कुरु स्वाहा।।९।।

भावार्थः- हे अलख निरंजन गोरक्षनाथजी आप ॐ हि श्री गों वीज मंत्र से मेरे सर्व कार्य सफल करो तथा हे गोरक्षनाथजी आप गं गं गणेश रूप से ऐं ऐं बृं बृं बीज वांगवादिनी रूपसे मुझे ज्ञान और अर्थ को प्राप्त करो।।९।।

ॐ गोरक्ष शून्यमादाय ध्यानयोगे फलं प्रदायकम्।
अन्ते मोक्षमादाय सानन्दं जीवनं सफलं कुरु।।१०।।

भावार्थः- हे शून्य रूपी गुरु गोरक्षनाथजी मुझे ध्यान योग में (शून्य समाधिका) फल प्रदान करे और मोक्ष मुक्ति का सत्य मेरे अन्त समय में सा आनन्द देने की कृपा करे।।१०।।

अथ संकष्ट नाशनं स्तोत्रं च त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
तस्यभयं नास्ति सर्व कार्यं शुभं प्रदम्।।११।।

भावार्थः- जो मनुष्य प्रातः, दोपहर और सायं तीनों संध्याओं के समय प्रतिदिन इस संकटनाशक स्तोत्र का पाठ करता है। उसे संकटों का भय नहीं होता। यह नाम स्मरण उसके लिये सभी कार्य सफल करने में साधक (सहायक) है।।११।।

नित्यं जपेद गोरक्ष स्तोत्रं संवत्सर च फलं लभेत्।
यथा शक्तिं सततं जप्य मुक्तिं भवति नात्र संशयः।।१२।।

भावार्थः- इस गोरक्ष स्तोत्र का नित्यजप करे। जपकर्ता

को एक वर्ष में अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। यथा शक्ति नित्य जप करने से मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।।१२।।

अष्टोत्तरशतं विलिख्य सन्तेभ्यो योऽर्चयति।
श्री गोरक्ष प्रसादात् तस्य सम्पूर्णज्ञानमाप्नुयति।।१३।।

भावार्थः- जो इस (गोरक्षनाथजीके) स्तोत्र को लिखकर एक सौ आठ सन्त सज्जनों को अर्पित करता है। उसे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी की कृपा से सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है।।१३।।

।। इति श्री संकटनाशक गोरक्ष स्तोत्रम् नाथ विलास निर्मती सम्पूर्णम्।।

भावार्थः- इस प्रकार नाथ विलास निर्मित श्री संकटनाशक गोरक्ष स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

''श्री नाथ गोरक्ष स्तोत्रराज''

(श्री गोरक्षनाथजी का स्तोत्र राज)

श्री गणेशनाथाय नमः ॐ सद्गुरवे नमः।
नमो हंसवृढाय च नाथइष्ट गोरक्षाय नमः।।१।।
ॐ नादं महानादं च सौचम व्रतान्वितः।
रुद्रभूषणं खर्पर, त्रिशूल ढक्कां धारकम्।।२।।
महायोगी जतीश्वराय महाज्ञानी विश्वम्भराय च।
चिरनाथाय रां रौं खो गोरक्षं सतत् नुमः।।३।।

भावार्थः- श्री गणेशनाथजी को नमस्कार है, ॐ श्री सद्गुरु जी को नमस्कार है, और हंसवृढा (माँ सरस्वति) को नमन है तथा नाथ सिद्धों के ईष्ट श्री गुरु गोरक्षनाथजी को नमस्कार करता हूँ। महानाथ अर्थात् ब्रह्मनादरूपी नादी और परम पवित्र जनेऊ रुद्राक्षों के भूषण से युक्त खप्पर, त्रिशूल डमरु को धारण किये हुये, महायोगी जतीश्वराय महाज्ञानी विश्वम्भराय आदिनाथरूपाय और परब्रह्म के बीज को जपने वाले श्री गुरु गोरक्षनाथजी को मैं सतत सर्वदा नमस्कार करता हूँ।।१-२-३।।

अलख क्षेत्रं वायुलोकं नाथ गोरक्ष निवासिनम्।
नाथ नाथो महानाथ वन्दे गोरक्षमंभीष्टदम्।।४।।
ब्रह्मनाथ सुरमिंद शूरं त्रिशक्तिं लिगं चिन्हितम्।
ज्योर्ति स्वरूप नाथ च देवादिभि वन्दितम्।।५।।

भावार्थः- श्री गुरु गोरक्षनाथ जी अलख क्षेत्र (कैलाशपर्वत) वायुलोक (अखण्ड ध्यान, तपस्या के स्थान) में निवास करते है। नाथों के नाथ महानाथ, अभीष्ट को पूर्ण करने वाले गुरु गोरक्षनाथ जी को वन्दन करते हैं। ब्रह्मनाद देवता सुर शूर त्रिशक्ति लिंगरुप से चिन्हित है ऐसे ज्योति स्वरुपी श्री गोरक्षनाथजी को देवता आदि शरण में वन्दना करते हैं।।४-५।।

मातृ शक्ति जगद्जननी कुण्डलिनी परं तपं।
गोरक्षाय राजयोगी वन्दे भक्तार्विनाशनम्।।६।।
परंपरा निजांशक्ति सर्व शक्ति स्वरुपिणी।
वन्दित सुरनरमुनयःसर्वेत्गं शरणागतम्।।७।।

भावार्थः - हे गोरक्षनाथजी आपका परम अद्भुत तपोवल से जो मातृशक्ति सर्व सृष्टि की जननी माँ कुण्डलीनी योग से आप राजयोगी हो और भक्तों के सर्व दुः ख परा-अपरा-तथा निजा शक्ति रुपी गोरक्षनाथजी आपके शरण में सुरनर मुनी आपको वन्दन करते हैं।।६-७।।

या पार्वती प्रिय शान्त, ब्रह्मा विष्णु शिवात्मकम्।
ब्रह्माण्डस्याखिलंगुरु गोरक्ष नाथं नमामि।।८।।
कुण्डलिनी शक्तया निरुपण यज्ञयज्ञादि सम्पादितम्।
कर्णे सुशोभितं कुण्डलादि मंत्रतंत्रादि चालयति
त्वां वयं नमः।।९।।

भावार्थः- जो पार्वती प्रिय शान्त ब्रह्मा, विष्णु महेश के आत्मस्वरुपम् और अखिल ब्रह्माण्ड के सर्वव्यापक

सद्गुरु गोरक्षनाथजी आपको वन्दन करते है। यज्ञयाग करने वाले कर्ण कुण्डल से युक्त, तंत्र मंत्रादि को चलाने वाले आपको वन्दन करते हैं।।८९।।

शेषासने महामुद्रायां करूणागार पारावाशपरे।
भूतं-प्रेत शत्रु हन्तं च तं वन्दे गोरक्षकम्।।१०।।
भक्तः नवनाथ चतुरसीर्ति सिद्धयः सदासेवारताः।
भक्तिः मुक्तिः प्रदात्री च वन्दे त्वं तं गोरक्षकम्।।११।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी शेषशायी आसन पर महामुद्रा में हो और आप दया के सागर भूत प्रेतादी शत्रुओं का नाश करने वाले आपको नमस्कार करते हैं। हे गोरक्षनाथजी आपकी नवनाथ चौरासी सिद्धादि (अनन्त कोट) सिद्ध सेवा करते है। हे ज्ञान योगी भक्ति-मुक्ति को प्रदान करने वाले आपको हम वन्दन करते हैं।।१०-११।।

एकादशमावृत्त्या स्तोत्र पठति यो नरः।
त्रिकालं पठेत्यदि शोक शमनादि व्याधिनाशकम्।।१२।।
अष्टोत्तरशतमावृत्ता च प्रज्ञा चक्षु भवेन्नरः।
विद्यायुष्य लभेच्छोश्च भवत्येवन संशयः।।१३।।
गोरक्षस्य सानिध्ये क्रियते यो जपं तपम्।
साक्षात्कार भवेत ध्रुवं तत्क्षणं गोरक्षस्य च दर्शनम्।।१४।।

भावार्थः- ग्यारह वार पाठ की आवृत्या करने पर व्याधिनाश एक सौ वारह वार करने पर विद्या आयुष्य इच्छाओं की पूर्ति पूर्ण होती है इसमें कोई संशय नहीं है। श्री गुरु गोरक्षनाथजी के सानिध्य में जप तप करने पर साक्षात्कार होगा और सद्गुरु जी के समीप जप करने पर उनके कृपा कटाक्ष अर्थात् कृपा अनुकम्पा से तत क्षण भर में श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का दर्शन साक्षात्कार होगा।।१३-१४।।

इति श्री क्षेत्र हरिद्वारे नाथ विलास निर्मीतम्
श्री नाथ गोरक्ष स्तोत्रराजम् सम्पूर्णः
।।श्री सद्गुरु चरणार्पणस्तु।।

भावार्थ :- इस प्रकारे क्षेत्र हरिद्वार में विलास नाथ द्वारा निर्मित श्री नाथ गोरक्ष स्तोत्र राज सम्पूर्ण हुआ ।।श्री सतगुरुजी के चरणों में अर्पण करता हूँ।।

''गोरक्षंऽघोर स्तोत्रम्''

(गुरु गोरक्षनाथजी का अघोर स्तोत्र)

जती सती जती यती शिवाशिवाश्च बल्लभम्।
सुरासुरात्वां भजन्ति मंत्र तंत्रादि युतम्।।
मायारहितं शक्तिपूर्ण सर्व शक्ति समन्वितम्।
घोर जपी घोर तपी घोर घोराय तस्मै नमः।।१।।

भावार्थः- हे गुरु गोरक्षनाथजी आप जती (ब्रह्मचारी) सती (सत्य आचरण वाले) यती (पूर्ण वैराग्य सिद्ध) आप भगवान शिव और (शिवा) शक्ति पार्वती के अत्यंत प्रिय है। सर्व सुर-असुर आपको मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र तथा जन्त्रों द्वारा भजते हैं। आप सामर्थ्य सम्पन्न माया के रहित शुद्ध शक्ति के सिद्ध किये जाने वाले शक्ति और भक्ति के कारक अत्यंत घोर जप करने वाले, अत्यन्त घोर तपस्या करने वाले घोर और अघोरी आपको मैं नमस्कार करता हूँ।।१।।

योग-याग ज्ञानध्यान गुरु मीनस्य नन्दनम्।
वेदेषु पञ्चमो वेदो सूक्ष्म वेदो वन्दनीयं च।।
धर्माधर्म विज्ञः च पारगामीशास्त्र पारंगाः।
परमंशून्यातीत चैतन्यं धारणां घृत्यं सततं त्वां नमामि।।२।।

भावार्थः- हे गुरु गोरक्षनाथजी आप योग साधना के ज्ञान ध्यान से युक्त हो एवं गुरु मीन अर्थात् मत्स्येन्द्र

नाथजी के पुत्र अर्थात् शिष्य हो आप वेदों में कहे गये पंचम वेद सूक्ष्म वेद आचार्य हो जो वेद वन्दनीय है। आप धर्म से युक्त धर्म के मर्म को जानने वाले और धर्मशास्त्र में पारगामी है। आप परमशून्यातित चैतन्य को धारणा को धारण करने वाले आपको मै नमस्कार करता हूँ।।२।।

ब्रह्मपद्म प्रज्ञापाद, किशोर चन्द्र शेखरे।
दिव्यज्ञानं दिव्य नादं दिव्यं देहश्च दरिदृश्यते।।
त्रिनेत्रत्रिप्रणवः च त्रिदेव ॐ कार प्रकाशितम्।
शून्यानेन्यशून्यातीतं शून्यलयोऽलयः तं भजे।।३।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप ब्रह्मपद्म अर्थात् चक्र सहस्त्रागार ब्रह्मरंध जो ज्ञान पाद करने वाले शीश पर बाल चन्द्रमा विराजमान और दिव्यनाद से दिव्य ज्ञान से दिव्य काया दृष्यमान हो रही है और तीनों नेत्रों से त्रि प्रणव अर्थात् ('अ''उ''म') जो तीनों देवो (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) रूप से ॐ कार प्रकाशमान हो रहा है और आपका शून्य अनेन्य शून्यातित भाव जो परमशून्य में लीन हो जाने वाले आपको मैं भजता हूँ।।३।।

अखण्डषडदर्शनमनन्तं ध्यान योगेन जागृति।
ब्रह्माण्डे 'खं' मण्डले प्रचण्डे यती विराजते।।
चराचरश्च चैतन्य चारूरूपाश्चिरन्तपः।
ज्योर्तिज्योतः जतीश्वर मृत्युञ्जयः तं भजे।।४।।

भावार्थः- आपके अखण्ड खड दर्शन जो योग ध्यान द्वारा छ चक्र जाग्रती से समाधिपाद का दर्शन अग्निस्वरूप

तेजस्वी स्वरूप जो स्वं आकाशिय मण्डल ब्रह्माण्ड में प्रचण्ड तेजोमय में विराजमान है और चराचर में निरन्तर चैतन्य सुन्दर स्वरूप में चिरकाल तक तपस्या करने वाले ज्योर्तिमय से भी परम ज्योति स्वरूपा एवं मृत्यु के ऊपर विजय पाने वाले जतीश्वर आपका मैं भजन करता हूँ।।४।।

हे गुरु गोरक्षनाथः भिक्षाटने काले स्त्रियेका नेत्रमयाचत्।

सद्गुरोर्रेच्छापूर्तिं झटिति स्वनेत्रमददत्।

गुरुर भक्तिः सभा भक्तिः नास्ति ज्ञाने मामकेः।

गुरोर्हृदि गुरु दृढी गुरुर्भक्तं तं भजे।।५।।

भावार्थः- हे गुरु गोरक्षनाथजी आपने भिक्षाटन करते समय (एक नारी ने भिक्षा के उपलक्ष्य में आपकी एक आँख मांगी थी अतः आपने अपने सद्गुरु की इच्छापूर्ति के लिए झट से अपनी आँख निकाल दी थी।) अपनी आँख को त्यागने वाले जो गुरुजी ने लिये हुये परीक्षा में उतीर्ण होने वाले अपने सत्गुरुजी को पूजने वाले गुरुजी के अत्यंत प्रिय गुणों से योग्य गिने जाने वाले और गुणों को जानने वाले, मेरे ज्ञान में यह ऐसी सद्गुरु भक्ति के समान अन्य कोई भक्ति नहीं है। अतः सत्गुरुजी को हृदय में धारण करने वाले गुरुजी के प्रति दृढ़ भाव वाले सत्गुरुजी के परम भक्त आपका मैं भजन करता हूँ।।५।।

नागेन्द्र दिव्यस्फुरत्फणानांमणि प्रभा।

चन्दं गन्धानुलेपनः मदकमलमुखं शोभितम्।।
सोमसूर्याग्नि लोचनसम त्रिपुरारी त्रिनेत्र शिवः।
विशाल भाल पट्टिका त्रिपुण्ड भस्मी तं भजे।।६।।

भावार्थः- हे नागों के इन्द्र तथा नागासन मण्डित नागों के फणों मनिओं का फैलता हुआ तेजस्वी प्रभापुन्ज चन्दन के गंध का लेपन करने वाले मदमस्त धुन्ध मुखकमल और चन्द्र सूर्य तथा अग्नि है नेत्र जिनके त्रिपुरारी त्रिनेत्र शिव स्वरूपी जिनके मस्तक कपाल पट्टी पर त्रिपुण्ड भस्मी भूत आपका हम भजन करते हैं।।६।।

धिमिद्धिमिद्धि मिद धानन्मृदंग तुग मंगल।
आगच्छा गच्छः गोरक्षं जागृतु मच्छिंदरम्।।
ध्वनिक्रम प्रवित समानाद डमरू शिवे।
ब्रह्ममाया द्वन्देरतः सद्गुरुं त्वां भजामि।।७।।

भावार्थः- धिमिध-धिमिध ताल से बजते हुए मृदंग के ''जाग मछिन्दर गोरख आया'' ऐसा नाद के मंगल घोष होते हुए (अर्थात् स्त्रिराज्य में गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी को आप लेने गये, तब राजदरबार में नृत्य प्रसंगी मृदंग बजाते समय आपने चमत्कार युक्त शब्दनाद उत्पन्न किया था जाग.....आया) जैसे शिव ताण्डव नृत्य में उनके डमरू में से नाद रूपी शब्दों के सूत्र उत्पन्न हो रहे है अतः ऐसे ब्रह्म (सत, ज्ञान) और माया के द्वन्द में सद्गुरु के (स्नेह में) सहवास में रहने वाले हे गुरु गोरक्षनाथजी आपको भजता हूँ।।७।।

अलखालक खप्परे सदा भिक्षाटनं निरंजनकताः।
कुण्डलमण्डितं हस्ते खड्गदण्डं शोभितम्।
काम क्रोधमोहान्धरहित संसार दुःख विनाशकम्।
निरन्जने निराकारे सदा निवसति गोरक्षं तं भजे।।८।।

भावार्थः- अलख-अलख खप्पर में भिक्षाटन करने वाले जिनके कान कुण्डलों से मण्डीत, हाथ में दण्ड खड्ग खप्पर लिये शोभायमान आप काम क्रोध अहंकार तमोगुण तथा मन और चित्त को एव सब संसार (के दुः खों) का उच्छेदन करने वाले आप हमेशा निरंजन (निगण) निराकार में रहने वाले आपको हम भजते हैं।।८।।

चित्तोपरि भस्मापिलेपनंमवधूतवेशः श्मशान वासिनः।
विशालस्कुलोचनः सिन्दूर भालेशोभितम्।।
अघोरमन्त्रमुच्चरन् दुष्टीभष्टच नाशकम्।
हस्ते वजास्त्र धारणं भयंकरास्त्रधरणभजामि तं गोरक्षनाथकम्।।९।।

भावार्थः- चिताओं के (भस्मी) ऊपर नग्न अवस्थित आप शमशान में निवास करने वाले अत्यन्त विक्राल लाल-लाल आँखों भाल ललाट के ऊपर लाल सिन्दूर लगे हुए आप अघोर मन्त्रों का उच्चारण करते हुये दुष्टों को भ्रष्टों को नष्ट कर देते हैं। ऐसे अस्त्रों-वज्र हाथों में लेने वाले अत्यन्त भयानक स्वरुपी गोरक्षनाथजी आपका मैं भजन करता हूँ।।९।।

व्याघचर्मधारणं सवाङ्ग भस्मलेपनम्।
लम्बत्सभस्मा नुषक्तजटालटा सुशोभितम्।।

भवान्तकं भुतान्तकं प्रेतपिशाश्चान्तकम्।
असुरान्तक कालान्तक सर्वारिष्टान्तकं तं भजे।।१०।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप व्याघ्र चर्म धारण किये हुए सर्वांग ऊपर भस्मी लेपन किये हुये। आप लटकति हुइ भस्म से प्रफुल्लित जटाजटा से सुशोभित है। भूतों-प्रेतों-पिशाच असुरों तथा काल सह सर्व संकटों का अन्त करने वाले आपको मैं भजता हूँ।।१०।।

कपाल कर्पराभरणः कपाल कर्म कारकम्।
दीप्तोज्जवलज्जवलित रक्तपीतलोचनं।
दहदहंत् पचपचंत् जारं मारण स्तम्भनं तथा।
अनेकवधहन्त्य च गोरक्षनाथ तं नुमः।।

भावार्थः- कपाल खप्पर धारण किये हुये कापल, कापालिक कर्म करने वाले और अति दैदिप्यमान उज्जवल और लाल पिंगल नेत्रों वाले दुष्ट दैत्यों का दह-दह पच पच जारन-मारन तथा स्तभन इत्यादि करके अनेकों वध करके हमारी रक्षा करने वाले हे गोरक्षनाथजी आपको नमरकार करता हूँ।।११।।

उच्चाटनं सम्मोहनं अघोर कर्म बन्धनम्।
काम क्रोधादि सर्वच अविद्याषु तंव वशम्।
प्रचण्डपराक्रमशंकटानां भक्ष्य भिन्नाभिन्न भूतले।
युक्तयानेक भूमण्डल रक्षकः त्वां सदा भजामि च।।१२।।

भावार्थः- उच्चाटन, सम्मोहन, बन्धन जैसे अघोर कर्म तथा कामक्रोधादि सर्वत्र अविद्याये आपसे वशीभूत हैं आप इस सर्वत्र भूतल पर (भिम) प्रचण्ड पराक्रम से संकटों का भक्षण करते हो, आपको मैं भजता हूँ।।१२।।

रुद्र रूप शर्व रूप भूत नाथ भैरवः।
घोराघोर औघड़ तमोऽग्निच स्वयं शिवः।।
नाथपंथ भेष पन्थानां सर्वानन्द दायकम्।
गुरु गोरक्षनाथं सततं नत्वा तथा ओदशमपि करोमि।।१३।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप रुद्र रूपी शर्व रूपी तथा भूतनाथ भैरव है तथा घोर अघोरी और औघड़दाणी तमस अग्नि स्वरूप स्वयं शिव हो आप सम्पूर्ण नाथ पंथ भेष पथ के समस्त नाथ सिद्धों को आनन्द देने वाले हैं। हे गुरु गोरक्षनाथजी आपको मैं सत-सत प्रणाम करके आदेश करता हूँ।।१३।।

गुरुगोरक्षनाथो स्वयमेवानन्दकन्दमानन्दपूर्वकं बसन्ति।
भक्तानामपि सानन्दरञ्जकः सौभाग्यादि वृद्धिकरं परम्।।

जगप्रिय जगत्स्वामिनस्सर्वोत्पत्तिश्च त्रिविध तापहारकः।
सर्व मंगल मांगल्य प्रदातव्य गोरक्षं त्वां प्रणमामि।।१४।।

भावार्थः- हे गोरक्षनाथजी आप स्वयं आनन्द कन्द हैं और आनन्दपूर्वक आत्मानन्द में वास करते हैं तथा भक्तों को आनन्द देने वाले भक्तरन्जक साम्पत्तिक सौभाग्य वढ़ाने वाले हैं। संसार से प्रेम करने वाले

संसार के स्वामी सबके उत्पत्ति स्थान भव्य और त्रिविध ताप को दूर करने वाले सर्व प्रकार का मगल प्रदान करने वाले मंगलमय नाथ गोरक्ष आपको मै नमस्कार करता हूँ।।१४।।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र यन्त्राणि भूतले।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य यदि स्तोत्रं हृदि संस्थिते।।
गोरक्षान्नापरो महिम्नो नान्यत्वक्वचित यतिः।
अघोरस्तोत्रात्श्रेष्ठोऽन्यस्तोत्रो नक्वचित्,
गोरक्षश्रेष्ठोऽन्यगुरुन भूतले।।१५।।

भावार्थः- इस पृथ्वी पर मारणमोहणादी जितने भी अभिचारक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जिनमें मन्त्र तन्त्र होते हैं, वह सब इस अघोर स्तोत्र को हृदय में धारण करने पर मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। अतः सम्पूर्ण जतीओं में गोरक्षनाथजी के बराबर दूसरा कोई भी जती मे नहीं है श्री गोरक्षनाथजी की स्तुति करने के बाद किसी दूसरे की स्तुति करने की आवश्यकता नहीं अघोर स्तोत्र से बड़ा कोई दूसरा स्तोत्र नहीं है और गुरु गोरक्षनाथजी के समान इस पृथ्वी पर ओर कोई गुरु तत्व नहीं है।।१५।।

गोरक्ष स्तोत्रमात्रेण सर्वेविघ्नाः विनश्यति।
चर्तुवर्ग प्राप्य च महापातका च विनश्यति।।
अघोरस्तोत्रं पठेत्रिकालं सर्वपापं विमुच्यते।
स एव जगतः पापात् विमुच्य वायुलोकं महीयते।।१६।।

भावार्थः- इस गोरक्ष अघोर स्तोत्र का स्मरण करते ही

सभी विघ्न नष्ट हो जाते हैं और चारों वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्राप्त होकर महापात के नष्ट हो जाते है। जो मनुष्य अघोर स्तोत्र का नित्य तीन काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न, संध्या पढ़ेगा वह संसार के पापों से छुटकारा पाकर वायुलोक (अलख क्षेत्र) को प्राप्त होगा।।१६।।

।। इति नाथ विलासकृत गोरक्षाऽघोर स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

भावार्थ :- इस प्रकारे विलासनाथ द्वारा तैयार किया हुआ गारेक्षनाथ जी का अघोर स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

जय हो ! जय हो ! (आरती)

जय हो जय हो जय गुरु देवन के देवा।
जय प्रभु गोरक्ष दीजिए चरण कमल सेवा।।धृ।।
जय हो जय हो जय तुम आदिनाथाय रूपा।
जय शिव गोरक्ष अलख निरन्जन स्वरूपा।।१।।
जय हो जय हो जय ॐहं-सोंह प्राण दाता।
जय शम्भु गोरक्ष बाजे बाजे अनहद नादा।।२।।
जय हो जय हो जय तुमी सृष्टिकर्ता हरी हरा।
जय गुरु गोरक्ष तुम ही सवका एक सहारा।।३।।
जय हो जय हो जय तुम तीन लोका त्रिलोचना।
जय अवधु गोरक्ष अलख, अलख पद निर्वाना।।४।।
जय हो, जय हो जय सर्व मूल सुख दाता।
जय जती गोरक्ष करुणा ज्ञानसिन्धु दाता।।५।।
जय हो जय हो जय तुम सदगुरु अपरंपारा।
जय गुरुदेव गोरक्ष दो मोक्ष मुक्ति भवतारा।।६।।
जय हो जय हो.....सेवा।

ग्रन्थस्य विधियों के विशेष नियम

१. गोरक्ष तंत्रम् विधि आत्मसाक्षात्कारी एवं अनुभवपूर्ण सद्गुरु जी के मार्गदर्शन एवं सहयोग से करना अनिवार्य है।

२. यह विधि करने का या करवाने का अधिकार आत्म साक्षात्कारी (साधु सन्त) व्यक्ति को ही है।

३. साधक सद्गुरु धारक (शिष्य) होना अनिवार्य है।

४. यह विधि एक अकेले सद्गुरु कर सकते हैं तथा साथ में एक/अनेक शिष्य के साथ भी यह विधि कर सकते हैं।

५. यह ग्रंथ अनुष्ठान ३-९-११-२१-४१ दिन का या सवा साल तक कर सकते हैं।

६. अनुष्ठान पवित्र-एकान्त स्थान में कर। विशेषतः नाथ सिद्धों के प्रसिद्ध सिद्धपीठों में या तीर्थ क्षेत्र-या-तपोभूमि या (मठ) आश्रम या मन्दिर मुख्यता सद्गुरु सहवास में शीघ्र फलदाई होता है।

७. कर्म करते समय अपने सतगुरु जी के प्रित्यर्थ एक कलश स्थापना कर प्रथम उस कलश का पूजन करे या प्रत्यक्ष सतगुरु जी की उपस्थिति हो तो गुरु पूजन करे।

८. ग्रंथ के सभी कर्म विधियाँ स्व रक्षणार्थ या निस्वार्थ या गुरु गोरक्षनाथ जी के साक्षात्कार के उद्देश्य से करना अति उत्तम है।

९. ग्रंथस्य मूल मन्त्र बीज मन्त्र, सर्वोरिष्ट मुक्ति मन्त्र तथा दिव्यास्त्र इत्यादि विधियाँ कण्ठस्थ कर के

योग्य समय योग्य कारण योग्य उद्देश्य से करना अनिवार्य है अन्यथा दोष लग जायेगा।

१०. ग्रंथस्थ मंत्र, तन्त्र, यंत्र इत्यादि सिद्धियों की विधियाँ, समय-क्षेत्र-स्थान तथा जाप संख्या इत्यादि सिद्धतायें अपने-अपने अनुभूतियों पर ही निर्भर है।

११. अनुष्ठान विधि में निर्धारित समय (दिनों में) साधक चक्री पूजन क्षेत्र छोड़कर बाहर नहीं जा सकता।

१२. अनुष्ठान एकासन एकाग्रता ऐक्य भाव (सहयोग) से करना अनिवार्य है।

१३. अनुष्ठान आसनों के ऊपर मौली युक्त नारियल अवश्य रखें।

१४. अनुष्ठान विधि समय में साधकों ने भोजन भजन जप-तप सिद्धि प्राप्ति इत्यादि कर्म धरती के ऊपर ही एकासन में करना अनिवार्य है।

१५. अनुष्ठान में हजामत-दाढ़ी/बाल/नाखून काटना, निशिद्ध वस्त्र पहनना संसारिक भोग भोगना दुर्गुनी व्यसन-नशा-इत्यादि सभी वर्जित है।

१६. पंचतात्विक साधना करना आवश्यक है।

१७. सय्यम तथा गुप्तता एवं रहस्य अनुभूति के अनुसार ही सिद्धियों का लाभ होता है। अतः गुप्तता रखना अनिवार्य है।

१८. ग्रंथ निर्देशानुसार प्राप्त सिद्धियाँ मनुष्य प्राणी के कल्याण हेतु उपयोग करे अन्यथा गलत उपयोग से सिद्धियों का लोप हो जाता है और साधक का पतन होता है।

१९. इन विधियों में अनुशासन सुचारूवद्धता नियोजन

समय सुचकता निर्भयता इत्यादि विशेषता होनी चाहिए।

२०. इन अनुष्ठान में नारी वर्जित है। अन्तिम समय दर्शन प्रसाद हेतु वह आ सकते हैं।

२१. निगुरा-अपंग-दुर्गुणी इत्यादि व्यक्ति वर्जित है।

२२. अनुष्ठान का साहित्य समय पर निर्मल-स्वच्छ पवित्रता एवं ताजा, सुच्चा होना आवश्यक है।

२३. अनुष्ठान करके अपने घर मे नित्य इस ग्रंथ का संस्कृत श्लोक या हिन्दी भावार्थ का नियमित भक्ति से पाठ करने पर भी गुरु गोरक्षनाथ जी की कृपा होकर सभी कार्य सिद्ध होगे।

२४. इस ग्रंथ मन्त्र तन्त्रादि वाद विवाद-संघर्ष-टिप्पणी-तर्क-विकर्त-दिखावटी कर्म-कोई त्रुटियाँ किसी साधक का अपमान आदि बातों का पूर्ण निषेद है।

२५. इस ग्रंथ के सूचना और नियम के अनुसार एवं आपकी साधना प्रणाली तथा श्रद्धा भक्ति विश्वास के योग्यता अनुसार फल प्राप्ति होगी।

२६. ग्रंथ = श्री गोरक्ष तन्त्रम्, नाथ सिद्ध कवच, स्तुति स्तोत्र पंचांग चोपडी आरती पुस्तक आदि सहयोग ग्रंथ ले सकते हैं।

२७. ग्रंथ= स्वतंत्र, सुरक्षित तथा शुद्ध,पवित्र स्थान में स्थापन करे। अर्थात कर्म करते समय एक चौकी के ऊपर लाल वस्त्र फैलाकर स्थापना करे।

२८. ग्रंथ के विषय में लेखक से संपर्क करके सहयोग ले सकते है।

।। इती आदेश।।

पूजन तथा हवन सामग्री
(साहित्य सूची)

१. **आसन** = सद्गुरुजी के लिये, १ उच्चासन सूती-कुशासन, कम्बलासन-मृगासन-आदि १ या अनेक

२. **जयमाला** = रुद्राक्ष, मूंगा या स्पटिक १ या अनेक

३. **यन्त्र** = श्री नाथ सिद्ध गोरक्ष यन्त्र (तन्त्रम्) या श्री नाथ सिद्धयन्त्र या सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र यह यन्त्र = ताम्र-पंत्र/अष्ट धातु या भोज पत्र पर अंकित किये हुये हो

४. **मूर्ति** = गुरुगोरक्षनाथजी की = फत्तर-पितल-अष्टधातु या प्रिन्टेड तसविर या फोटु

५. **चरणपादुका** = खड़ाऊ-लकड़ी-चान्दी-सुवर्ण इ०

६. **पवित्र जल** = गंगाजल-त्रिवेणी संगम का जल विभिन्न नदियों का जल, समुद्र जल या केवल पवित्र जल

७. **पुष्प** = लाल पुष्प, सुगंधित अनेक प्रकार-गुलाब चमेली हवारी-अपराजिता इ. तथा पुष्प मालायें।

८. **पत्तल** = आम के-नीम के-बिल्व के पत्ते वटवृक्ष-पीपल-खाने के पान इ.

९. **गंध** = लाल सिन्दुर युक्त गंध-अष्टगंध-हल्दी चन्दन पिसा हुआ-केशर, कस्तुरी इत्यादि तिलक = भस्मी लेपन बभूती

१०. **फल** = गुलर-आम-बिल्व फल तथा पंचफल (आम, केले सेब, पपीता इ०)

११. **पंचमेवा** = काजू-बदाम-पिस्ता-अखरोट-छुवारे इत्यादि

१२. **सुपारी** = बारीक १ बड़ी, अक्षद (चावल)

१३. **पाटले** = चौकियाँ १-३ नग

१४. **दीपक** = धूप, दीप, गुग्गल, उद, अगरबत्ती, कर्पूर

१५. **सुगन्धित** = इत्तर, गुलाब पाणी (सेंट)

१६. नारियल कच्चे पाणी वाले १ या अनेक (पूजानुरूप)

१७. **वस्त्र** = लाल-सफेद-भगवे लंगोटी (लाल डेढ़ मीटर) काला वस्त्र अंगोछे छोटे तौलिये आदि

१८. **पंचामृत** = दही-दूध-धृत-शहद-चीनी-मिश्री इ०

१९. **शंख** = बजने वाला १ और पूजन का दक्षिण मुखी १

२०. **कलश** = ताम्बा-चान्दी-स्वर्ण-मृतिका (घट) अन्य धातु का

२१. **भोग** = मिष्ठान्न= खीर-खिच्चड़, कच्चारोट, पक्का रोट, पंचमेवा, पंचफल, नारियल, मूंगदाल वडे, गौ का दूध मिश्री इत्यादि

२२. **ताम्बुल** = लवंग, इलायची, सुपारी (मीठा पान मसाला), जायफल + केशर इत्यादि

२३. **परीयायी भोग अन्य** = अदरक (गेला+ सूंठ (सूखी)+ लसन, गाय बकरी भैस या भेड़ का मिश्रित दूध (कच्चा)

२४. **तैल** = सरसों का तेल, तिल्ली का तेल, काले साबुत उड़द

२५. **हवन** = हवन कुण्ड (इटों का रेता इ० या ताम्र पात्र का)

= हवन सामग्री+ काले तिल+ पंचमेवा जव घृत गौ का इ०

२६. **खीर** (शहद+ चीनी+ दही इ०) पंचामृत पंचगव्य इ० लकड़ी (सूखी) गोवर कण्डे+ कर्पूर इ० साकल्य

२७. **ज्योति विधान** = सप्त धान्य (अनाज) गेहूँ+ चावल + उड़द+ जौ+ तिल+ वाजरा+ ज्वार इ० रुई = (३६ तन्तुओं की बत्ती) घी, आटे का दीपक, यन्त्र निर्माण आसन तेल केशर इत्यादि।

२८. **अभिषेक** = कलश स्थापन = मृतिका का घट (मध्यम), सुवर्ण या चान्दी या ताम्बे का या अष्टधातु इ०

पंचरत्न = हीरा, मोती, मूंगा, पुखराज, नीलम इ० जल = समुद्र जल या नारियल यह जल २/३ नदी के संगम का जल सात कुएं का जल, तालाब-सरोवर तथा विभिन्न नदियों का जल

२९. **गुरुपूजन** = उच्च आसन पंचबाना (धोती, कुर्ता साफा, बण्डी, लंगोट या अल्की या चद्दर या शाल या कम्बल, तौलियाँ अंगोछा दक्षिणा-तिलक इ. पूजा विधान)

३०. **साहित्य** = नादी, जनेऊ, कुण्डल (मृतिका के) त्रिशूल, चिमटा, खप्पर, खड़ग, चाकू, भैरव डंडा, घण्टा, घड़ीयाल, ढोल, बाजा पंचारती दीपक थालियाँ इ० धूपियाँ कमण्डल

पंचपात्र आचमनी पत्तल झोली डमरू कडा नागफनी तुम्बा, कुवड़ी, निर्माल्य डालने के लिये गोल डिब्बा आवश्यकता अनुसार सुविधाजनक साहित्य का प्रबंध करे।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583

Website http // yogigorakshnath org, E-mail : yogivilasnath12@gmail.com

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तहः जिला-रोहतक (हरियाणा) फोन : 01262-215718

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1. श्री नाथ रहस्य (खण्ड 1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250
2. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
3. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	400
4. श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	65/-
5. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45
6 श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	125
7. श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	35/-
8. श्रीनाथ सम्प्रदाय के तीर्थ स्थल (प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250
9. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	10/-
10. श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
11. श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
12. श्री नाथ सम्प्रदाय आरती- भजन संग्रह	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
13. ॐ शिवगोरक्ष व्रत कथा	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	15/-
14. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तंत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु महन्त डॉ. योगी विलासनाथ)	160/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
15. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	40/-
16. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	20/-
17. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
18. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	50/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	60/-
20. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	140/-
21. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	100/-
22 अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/
23. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	70/-
24. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
25. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
26. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
27. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
२८ श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100 -
२९ श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30

पुस्तक सूची (गोरखपुर मे प्रकाशित),लेखक/संचालक, मूल्य
उप कार्यालय-गोरक्षनाथ मन्दिर, गोरखपुर
फोन : 0551-2255453, 2255454, 2255455

30 गोरखबाणी रामलाल श्रीवास्तव , 50 - , 31. गोरख चरित्र रामलाल श्रीवास्तव 30 , 32 गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी), अक्षय कुमार बनर्जी 90 , 33 गोरख दर्शन- विजय पाल 50 , 34 श्री नाथ सिद्ध चरितामृत रामलाल श्रीवास्तव, 30 , 35. गोरक्षनाथ एवं उनका परिवार का साहित्य - डा. दिवाकर पाण्डेय, 40 - , 36 आदर्श योगी अक्षय कुमार बनर्जी 25 37 योगासन रामलाल श्रीवास्तव 30 , 38. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत रामलाल श्रीवास्तव, 35/ 39. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह रामलाल श्रीवास्तव, 40 40 हठयोग प्रदीपिका, रामलाल श्रीवास्तव 35 41 योग बीज रामलाल श्रीवास्तव, 15/ , 42 नाथ योग अक्षय कुमार बनर्जी, 15 - 43. अमनस्क योग अक्षय कुमार बनर्जी, 20 - , 44 गोरक्ष पद्धति रामलाल श्रीवास्तव 20 , 45 गोरक्ष शतक - रामलाल श्रीवास्तव 20/- , 46. वैराग्य शतक रामलाल श्रीवास्तव, 20 , 47 गोरक्ष वैदिक पूजा पद्धत- बदाचार्य रामानुज त्रिपाठी, 20/ , 48. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ . ने कहा) योगी आदित्यनाथ, 20 , 49. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह) मनोहर द्विवदी, 15 , 50. योगवाणी अंक गोरखबाणी) गोरखनाथ मन्दिर, 25 - , 51 योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन) गोरखनाथ मन्दिर, 15 52. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक) गोरखनाथ मन्दिर, 40 - , 53. योगवाणी (शिव महिमा) गोरखनाथ मन्दिर 25 - , 54 योगवाणी (सिद्ध दर्शन) गोरखनाथ मन्दिर, 15 , ५५ योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल) गोरखनाथ मन्दिर, 25 , 56. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी) गोरखनाथ मन्दिर, 25 57 योगवाणी गोरक्ष सिद्धान्त, गोरखनाथ मन्दिर, 25 , 58 योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली) गोरखनाथ मन्दिर, 25 , 59 योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक) गोरखनाथ मन्दिर, 25 , 60. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव) गोरखनाथ मन्दिर, 25 , 61. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता गोरखनाथ मन्दिर, 25/ , 62. योगवाणी (विशेषांक 1994) - गोरखनाथ मन्दिर , 15/

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र

(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	50/-	60/-
5×5 इंच	70/-	80/-
7×7 इंच	90/-	110/-
9×9 इंच	300/-	325/-
12×12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB / C = 10 " X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B / C = 10 " X 8 "	35/-	-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृताजलि (भाग-1+2) (गोरक्ष चालीसा, चौरासी सिद्ध, गायक-सामनाथ शर्मा		80/-	100/-
चालीसा, ज्ञान गुदडी, भजन इत्यादि)	भजन रचना-योगी विलासनाथ		
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	40/-	50/-

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5" X 3.5"	3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/., 20/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	10/-, 15/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	10/-, 20/-, 25/-, 40/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-, 1800/-
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ (धातु में)

	नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4.	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	800/-	
5.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D. भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L., V.P.P. से भेजा जायेगा।
अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - महन्त डॉ. योगी विलासनाथ-मो.: 09412072703

पश्चिम
श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)
(प्राचीन भर्तृहरि गुफा)
मनसा देवी
मन्दिर
मनसा माता पैदल मार्ग
उड़नखटोला
रेलवे स्टेशन
बस स्टेण्ड
शिवमूर्ति चौक
अपर रोड
कनखल रोड
नगरपालिका बाजार
भीमगोडा रोड
कनखल रोड
मोती बाजार
बड़ा बाजार
सुभाष घाट
गंगा घाट
हरकी पौड़ी ब्रह्मकुण्ड
पतित पावनी माँ गंगा जी
दक्षिण
उत्तर
पूर्व

राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक तीनों के रचयिता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। राजा भर्तृहरि ने उज्जैन–मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर यहाँ तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहाँ विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Visit us at: www./yogigorakshnath.org, e-mail:media@yogigorakshnath.org
Ph. 01334-226583

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार। फोन-228796